In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

ग्रन्थ क्रमांक 124

पुराण-वैभवम्

डॉ० कल्पना द्विवेदी

श्री एकरसानन्द आदर्श संस्कृत महाविद्यालय

मैनपुरी 205001 (उ०प्र०) 9411248134

देववाणी परिषद, दिल्ली

आर ६, वाणी विहार, नई दिल्ली ११० ०५९

(भारतम्)

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

ग्रन्थ क्रमांक 124

पुराण वैभवम्

डॉ० कल्पना द्विवेदी

देववाणी परिषद, दिल्ली
६, वाणी विहार, नई दिल्ली ११० ०५१
(भारतम्)

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

पुराण वैभवम्

लेखिकाः डॉ0 कल्पना द्विवेदी (अ0प्रो0 साहित्य)

प्रकाशकः देववाणी – परिषद, दिल्ली
आर–6 वाणी विहार, नयी दिल्ली 110 059 (भारतम्)

मुद्रकः राष्ट्रीय प्रिटिंग प्रेस, मैनपुरी 205001 (उ0प्र0)
संस्करणः प्रथम वर्ष 2014

(C) Author
ISBN 978-81-85924-17-5
मूल्य 250/– रूपये

Author: Dr. Kalpana Dwivedi

Publiser: Devvani Parishad Delhi
R-6 Vani Vihar, New Delhi 110 059 (Bharat)

Printing: Rashtrya Printing Press, Mainpuri 205001
Edition: First edition year 2014

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

पूज्य शुकदेवस्वरूप पार्वतीपरमेश्वर के श्रीचरणों में सादर शब्दमयी भावाञ्जलि

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

स्थापना: -1976

देववाणी-परिषद्, दिल्ली
DEVAVANI PARISHAD, DELHI

Academic Cultural Literary Society, Regd. under XXI Act of 1860

Off. R-6 VANI VIHAR, NEW DELHI 110059, INDIA, email - devavanipd@gmail.com

डा. रमाकान्तशुक्लः
महासचिवः

011 - 25561949
09868532302

प्रस्ताविकम्

'देववाणी-परिषद्, दिल्ली' इत्यस्याः संस्थायाः
सद्ग्रन्थप्रकाशनरूपमन्यतममुद्देश्यमस्ति।
तदनुसृत्य परिषदाद्यावधि १२३ संख्याकाः
संस्कृतभाषया ग्रथिता अथवा भाषान्तरेण
संस्कृतवाङ्मयं समीक्षमाणा ग्रन्थाः प्रकाशिताः।
इदानीं १२४ तम ग्रन्थरूपेण डा. कल्पना -
द्विवेदीमहाभागया प्रणीतं 'पुराणवैभवं'
नाम पुस्तकं प्रकाशयन्ती परिषद्
हर्षमनुभवति।

अस्मिन् ग्रन्थे विदुष्या ग्रन्थकर्त्र्या
पुराणेषु समागता अनेके वैज्ञानिका विषया
विमृष्टाः। भूविज्ञानं, खगोलविज्ञानं, शब्द-
विज्ञानं, सूर्यवंश-चन्द्रवंशयोः ऐतिहासिकं,
आयुर्वेदस्येतिहासं भास्करसंहितानुसारं
रोगाणां कारणं निवारणं चावलम्ब्य
महत्त्वपूर्णा सामग्री ग्रन्थप्रणेत्र्यात्र
प्रस्तुता या निश्चप्रचमेव जिज्ञासून्
उपकरिष्यति।

अहं ग्रन्थकर्त्रीं परिषत्पक्षतः समभि-
नन्दामि।

विदुषामाश्रवः,
[signature]
(रमाकान्तशुक्लः)

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

प्रास्ताविकम्

आलयं सर्ववेदानां विज्ञानं स्मार्त्तकर्मणाम्
लोककल्याण ज्ञानाढ्यं पुराणं वेदरूपिणम्।। 1
वन्दे वेदविभाकान्तं कृष्णसन्नपि भास्करम्
कृष्णद्वैपायनं व्यासं, मुनिं नित्यं नमो नमः।। 2

भारतीय ज्ञान मीमांसा के विश्व विख्यात ऋषि महर्षि कृष्ण द्वैपायन वेद व्यास का नाम किसी के लिए अपरिचित नहीं है। वेदों का विभाजन, संग्रह, स्मृतियों का अनुक्रम, ब्रह्मसूत्र के दार्शनिक प्रस्थान की रचना, महाभारत जैसा इतिहास ग्रन्थ और भारतीय समाज को पुनः एक सांस्कृतिक जागरण देने के लिए यत्र तत्र विकीर्ण पुराण विद्या को अष्टादश पुराणों में संकलित करने का महनीय उपक्रम इस महापुरूष की देन है।

वस्तुतः पुराणों का उद्भव, वैदिक ज्ञान के पुराण जागरण का काल है। विशुद्ध प्राकृतिक सिद्धान्तों का विभिन्न सूत्रों में संकलीकरण एवं उस संकलित ज्ञान को बोधगम्य तथा लोकोपयोगी बनाने के लिए, इसका वर्गीकरण एवं तदनुरूप ज्ञान मीमांसा महर्षि वेद व्यास का लक्ष्य रहा है। पुराण उनके इसी लक्ष्य की पूर्ति में सबसे बड़ी संस्था की भूमिका अदा करते हैं। क्योंकि वैज्ञानिक सिद्धान्तों एवं तर्कों की जटिल व्याख्याएं सर्वजन बोधगम्य नहीं होती। जिसके फलस्वरूप समाज में एक दिग्भ्रम या मानसिक दिवालियापन की संरचना होती है।

वैदिक ज्ञान के इस उत्तरकालीन स्मृतियों एवं पुराणों का आविर्भाव एक घटना के रूप में हमें उपलब्ध होता है। पुराण देश की प्रजा में विद्यमान मानवीय संवेदना के परिष्कार का कोई अवसर गवॉना नहीं चाहते। अतः वैदिक ऋषि हर वेद में किसी न किसी रूप में वेद पुरूष की स्थापना का प्रशस्त वर्णन करते रहे हैं।

इसी वेद विचार, श्रोत स्मार्त्त ज्ञान की देश की प्राचीनतम धारा को

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

अपने सजीव वर्णन विशेष से युवा वर्ग में पुनः प्रतिष्ठित करने का भगीरथ प्रयास महर्षि वेद व्यास की अपनी निजी परिकल्पना भी है और पुरूषार्थ भी, वे किसी आश्रम, वर्ण, व्यवस्था, तन्त्र इत्यादि की आलोचना न करते हुए। विशुद्ध वैदिक पथ पर चलने की प्रेरणा देने वाले आदिपुरूष हैं। पुराण विद्या इसी का प्रात्यच्छिक रूप है।

हिरण्यमयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम्
तन्मे पूषन अपावृणु सत्यधर्माय दृष्टये।।

महर्षि वेद व्यास सत्य के पारमार्थिक एवं लौकिक दोनों ही धरातलों का स्पष्टीकरण जानते थे। अतः ऋग्संहिता से लेकर अथर्वसंहिता तक, मनु स्मृति से लेकर व्यास स्मृति तक, समस्त ज्ञान को व्यवहारिक भाषा में उसकी समस्त ज्ञान मीमांसाओं के साथ प्रस्तुत करने में उनका काई प्रत्युत्तर अभी तक विश्वसाहित्य में उपलब्ध है और यही पुराण विद्या कहलाती है।

प्रस्तुत निबन्ध संग्रह पुराण वैभवं इसी पुराण विद्या की वर्तमान वैज्ञानिक रूप से संबद्ध तथ्यों की विवेचना पूरे आध्यात्मिक संस्पर्श के साथ रखता है। व्यास किसी का अकल्याण होते नहीं देख सकते, किन्तु संकल्पना और बात है और शान्ति कोई और बात। प्रस्तुत निबन्ध संग्रह में लेखिका ने विभिन्न वैदिक एवं पौराणिक विषयों के सम्बन्ध में अपनी योग्यता सिद्ध कर दी है। इस संकलन के निमित्त जिस विदुषी ने शीर्षकों का क्रमबद्ध चयन प्रस्तुत किया है। वह प्रायः उन उन शीर्षकों में आए हुए विषयों पर ब्रह्म सम्बन्ध की दृष्टि से गहन विचार प्रस्तुत करते हैं। जैसे – संकलन का प्रथम निबन्ध पुराणों में भू विज्ञान जैसे विचारों पर आज की पर्यावरणीय संतुलन एवं भू वैस्तारिक विचारों को प्रस्तुत करता है।
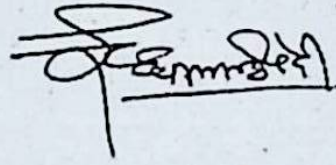
इस श्रंखला में पुस्तक का दूसरा व तीसरा लेख खगोल विज्ञान जैसे विषय की रूपरेखा पुराणों के आधार पर दर्शाता है। जिसमें नक्षत्रों के मान जाति परिवारवाद आदि की परिकल्पनाओं का समावेश है।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

इसके अतिरिक्त सूर्यवंश एवं चन्द्रवंश पर आधारित शोध लेख विशुद्ध ऐतिहासिक दृष्टि को ध्यान में रखकर लिख गए हैं।

पुस्तक में आगत ब्रह्मवैवर्त पुराण में आचार मानविकी शास्त्र आधारित विवेचन है।

इस प्रकार इस ग्रन्थ में विज्ञान की कई शाखा प्रशाखों का पुराण विद्या में विवेचन प्रस्तुत किया गया है। जो साधुवाद के योग्य है।

प्रो0 इच्छाराम द्विवेदी
विभागाध्यक्ष
श्री लालबहादुर राष्ट्रीय संस्कृत
विद्यापीठ, नई दिल्ली

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

कृतज्ञता ज्ञापन

वेद विद्या के अनन्त संसार की प्राचीनतम ज्ञाननिधि पुराण ही हैं यह पुराण विद्या को महर्षि व्यास ने अष्टादश मार्गों में विभाजित किया। पुराण साहित्य इतना विपुल विशालकाय है कि उसका पूर्ण रूपेण विवेचन अभी तक हमारे सम्मुख नहीं आ सका है। अद्यतन समस्त उपपुराण एवं औपपुराणों का भाषानुवाद तक नहीं प्राप्त है।

मेरे पूज्य पिताजी पुराणवेता तो थे ही साथ हो पुराणों के उत्तम वक्ता भी थे। उन्होंने बचपन में जब ग्रीष्मावकाश होता तो हमें सदैव कोई न कोई पुराण पढ़ने की प्रेरणा देते और जब अपने सप्ताह कार्यक्रम से लौटते तो उन कथाओं आख्यानों को हम सब से पूछते। धीरे–धीरे इस प्रक्रिया ने मुझ में पुराण पढ़ने के प्रतिरूचि जाग्रत कर दी और उस विषय को पुनः पुनः पढ़ने पर पुराणों में छिपे विज्ञानात्मक विषय बड़ी सहजता से मुझे दृष्टिगोचर हुए इसके लिए मैं अपने माता पिता की जन्म जन्मान्तर तक आभारी रहूँगी।

मेरे पुराण साहित्य को पढ़ने की प्रक्रिया में मेरे भाई आदरणीय इच्छाराम जी का भी बहुत सहयोग रहा जो बात मुझे समझ नहीं आती वे तुरन्त ही सोदाहरण समझाते और पुराणों की गुत्थियों को हल कर देते हैं मैं इनकी भी अन्तः करण से आभारी हूँ।

मैं अपने गुरूदेव प्रो0 राधावल्लभ त्रिपाठी जी की एवं प्रो0 राजेन्द्र मिश्र के लिए श्री श्यामाचरण त्रिपाठी जी की आभारी हूँ। मैं डॉ0 पुष्पा दीक्षित, प्रो0 हसविहारी द्विवेदी, प्रो0 मनुलता शर्मा, प्रो0 मीरा शर्मा दीदी, की आभारी हूँ।

ज्ञान के चलायमान प्रतिमा स्वरूप परमपूज्यभाई जी प्रो. रमाकान्त जी की मैं सदा आभारी हूँ कि उनके मार्गदर्शन में मेरा यह पौराणिक निबन्ध संग्रह प्रकाशित हो रहा है।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

मैं मुद्रण के लिए भाई श्री राकेश कुमार के कार्य की सराहना करूँगी एवं आभार व्यक्त करती हूँ कि जिन्होंने पुस्तक को सुरम्य कलेवर प्रदान किया।

साथ ही मैं अपने सभी परिवारीजनों एवं विद्यालय परिवार की आभारी हूँ जिनसे मुझे निरन्तर कार्य करने की प्रेरणा प्राप्त हुई।

मैं आशा करती हूँ कि आप सभी गुरूजनों का मुझे सदैव ऐसा ही आशीर्वाद प्राप्त होता रहेगा।

विदुषां वशंवदा

संवत् 2071

कल्पना द्विवेदी

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

विषयानुक्रमणिका

****

क्र.	विषय	पृष्ठ सं.
1.	पुराणों में भू विज्ञान	1-25
2.	पुराणों में खगोल विज्ञान	26-44
3.	श्रीमद्भागवतमहापुराण में खगोल विज्ञान	45-51
4.	भास्कर संहिता रोग कारण एवं निवारण	52-57
5.	आयुर्वेद का इतिहास पौराणिक सन्दर्भ में	58-60
6.	ब्रह्मवैवर्त पुराण में आचार	62-65
7.	शब्दविज्ञानमय गणपति स्वरूप	66-73
8.	सूर्यवंश की ऐतिहासिकता श्रीमद्भागवत के सन्दर्भ में	74-81
9.	चन्द्रवंश – हरिवंश पुराण सन्दर्भ में	82-88
10.	श्रीमद् भागवत महापुराण एवं प्रणव भागवतं का तुलनात्मक अध्ययन	89-97

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

पुराणों में भूविज्ञान

पुराण विद्या को पाँचवा वेद माना जाता है क्योंकि पुराणों मे ज्ञान की सभी विद्या की न्यूनाधिक रूप में चर्चा प्राप्त होती है। पुराण विद्या अतिप्राचीन होने पर भी नवीन सी ही प्रतीत होती है इसमें प्राप्त वर्णन वेदों के समान ही प्रमाणिक है। पुराण विद्या में काव्य, ज्योतिष, छन्द, मूर्तिकला, स्थापत्य कला, कर्मकाण्ड आन्वीक्षकी, न्याय, धर्मशास्त्र, भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, आर्युविज्ञान खगोल विज्ञान एवं भू विज्ञान का सविस्तार वर्णन प्राप्त होता है।

पुराण साहित्य अत्यन्त समृद्ध है इसमें अट्ठाह महापुराण अट्ठारह उपपुराण अट्ठारह औपपुराण प्राप्त होते हैं। इनमें महापुराणों का अपना ही महत्व एवं वैशिष्ट्य है। प्रत्येक पुराण में पञ्च लक्षण अवश्य प्राप्त होते हैं–

सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंश मन्वतराणि च

वंशानुचरितं चैव पुराणं पञ्चलक्षणम्।। [1]

पुराणों में वर्णित प्रतिसर्ग प्रक्रिया के अन्तर्गत ही भू विज्ञान का उल्लेख प्राप्त होता है।

जब भगवान् ने अपनी भूमा स्वरूप (विराट् रूप) की इच्छा की तब सृष्टि प्रक्रिया के आरम्भ में स्पर्श रूप रस गन्ध इन पाँच तन्मात्राओं से आकाश वायु, अग्नि, जल एवं पृथ्वी उत्पन्न हुए। सात द्वीपों से युक्त यह पृथ्वी सात समुद्रों से घिरी है। ब्रह्न्नारदीय पुराण के अनुसार जम्बू, प्लक्ष, शाल्मल कुश, शाक, क्रौञ्च, पुष्कर पाँच, द्वीप है। जो एक दूसरे से क्रमशः विस्तार में दुगने है। इनके क्षीर, लक्षण, इक्षु, सुरा, सर्षि एवं जल के है।

जम्बू प्लक्षाभिधानौ च शाल्मलश्च कुशस्तथा

क्रौञ्च शाकौ पुष्करश्च ते सर्वे देव भूमयः।।

एते द्वीपाः समुद्रैस्तु सप्तसप्तभिरावृताः

लवणेक्षुसुरासर्पिर्दधिक्षीरजलैः समम्।। [2]

इन सभी द्वीपों एवं समुद्रों का उत्तरोत्तर द्विगुणित विस्तार है। हिमाद्रि पर्वत है जिनके दक्षिण में सभी प्रकार के कर्मफल को देने वाला भारत नामक वर्ष है–

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

एते द्वीपः समुद्राश्च पूर्वस्मादुत्तरोत्तरः।
ज्ञेया द्विगुण विस्तारा लोकालोकाच्च पर्वतात्।।
क्षीरोदधेरुत्तरं यद्धिमाद्रेश्चैव दक्षिणम्
ज्ञेयं तद्भारतं वर्ष सर्वकर्मफलप्रदम्।। [3]

मत्स्य पुराण में भू विज्ञान वर्णन विस्तार से प्राप्त होता है। पृथ्वी पर वैसे तो हजारों द्वीप है जो सात के अन्तर्गत ही गिने जाते है–

द्वीपभेदे सहस्राणि सप्त चान्तर्गतानि च।
न शक्यन्त्ते क्रमेणेह वक्तुं वै सकलं जगत्।। [4]

जो विषय मानव तर्क शक्ति से परे होता है वह अचिन्य कहलाता है। इस प्रकृति मे सात द्वीप हैं जिनमें प्रमुख जम्बूद्वीप है। इस जम्बू द्वीप का विस्तार एक लाख योजन है। इसमें सुन्दर नगर व ग्राम देश विद्यमान है इसमें पूर्व एवं पश्चिम में पहले छः अति विस्तृत वर्ष पर्वत है। यहाँ छः ऋतुएं होती है। हिमवान्, हेमकूट, निषध, मेरु यह चौबीस हजार योजन विस्तृत सुवर्ण मय है। इसके ऊपर के वृत्त की आकृति के समान नीचे चार कोण है। पूर्व दिशा में यह सुमेरु श्वेत वर्ण वाला है। दक्षिण दिशा में यह पीले रंग का है। पश्चिम में भ्रमर पंख सदृश श्याम वर्ण का, उत्तर भाग लाल है। इस प्रकार यह क्रमशः ब्राह्मण, वैश्य, शूद्र एवं क्षत्रिय से साम्य रखता है।[5]

सुमेरु के चारों ओर मणिमय पर्वत हैं जो नौ हजार योजन व्यास वाले हैं। मध्य भाग में इलावृत्त नामक वर्ष है इसका विस्तार चौबीस हजार योजन है।

मध्ये त्विलावृतं नाम महामेरोः समन्ततः
चतुर्विंशत्सहस्राणि विस्तीर्णो योजनैः समः।।[6]

इलावृत्त वर्ष में महामेरु धूमरहित अग्नि के समान प्रकाशमान होता है। मेरु के दक्षिणी भाग दक्षिण मेरु एवं उत्तरी भाग उत्तर मेरु के नाम से विख्यात है। इनमें सात वर्ष विद्यमान है उन्हीं में से एक जम्बू द्वीप है इन सभी वर्षो का विस्तार दो–दो हजार योजन माना गया है। जम्बू द्वीप में नील निषध नामक बड़े पर्वत हैं। हेमकूट, श्वेत, हिमवान्, श्रंगवान् ये अपेक्षाकृत छोटे है। ऋषभ पर्वत परिमाण में जम्बूद्वीप के समान ही विस्तृत है। हेमकूट हिमगिरि अट्ठासी हजार योजन का है। हिमवान् पूर्व से पश्चिम अस्सी हजार योजन

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

तक फैला है। इन वर्षो में पर्वतों की भॉति ही भिन्नता है। एक से उत्तर दिशा की ओर दूसरे का क्षेत्र पड़ता है।

प्रत्येक वर्ष दुर्गम पर्वतों एवं झरनों से युक्त है। नदियों के कारण इनमें आवागमन निषिध है। इन सभी वर्षो में अनेक प्रकार की जातियॉ निवास करती है।

हिमवान् नामक वर्ष ही भारत वर्ष के नाम से प्रसिद्ध है, हेमकूट से परे सीमा से निषध पर्वत तक हरिवर्ष है। हरिवर्ष से मेरु तक इलावृत्त है इलावृत्त के बाद नील नामक पर्वत तक रम्यक नामक वर्ष है। रम्यक वर्ष से श्वेत नामक पर्वत तक हिरण्यक नामक वर्ष है। उस हिरण्यक वर्ष के आगे श्रंगशाक नामक वर्ष है जिसे कुरुल्लाभ वर्ष के नाम से जानते है–

इदं हैमवतं वर्षं भारतं नाम विश्रुतम्।।
हेमकूटं परं तस्मान्नाम्ना किंपुरुष स्मृतम्।
हेमकूटाच्च निषधं हरिवर्ष तदुच्यते।।
हरिवर्षात्परं चापिमेरोस्तु तदिलावृतम्
इलावृत्तात्परं नीलं रम्यकं नाम विश्रुतम्।।
रम्यकादपरं श्वेतंविश्रुतं तद्धिरण्यकम्
हिरण्यकात्परं चैव शृङ्गशाकंकुरं स्मृतम्।। [7]

इन वर्षो में माल्यवान् गिरि समुद्र तक विस्तृत है। बत्तीस हजार योजन गन्धमादन का विस्तार है।

मेरु के पूर्व में भद्राशय भारत पश्चिम मे केतुमाल उत्तर के उत्तर कुरु नामक प्रदेश है। इनमें अरुणोद, मानस, सितोद एवं भद्र नाम सरोवर है। जिनमें क्रमशः कटहल, कालाभ्र नामक वृक्ष है। रमणक में वट वृक्ष है। हिरण्वत में हेरण्वत नदी है एवं लमुच वृक्ष है। श्रृंगवान् पर्वत से मीठे जल की नदियॉ बहती है। यहाँ मंगलदायनी वायु बहती है।

भारत– सबको उत्पन्न करने एवं पालन करने के कारण मनु का भरत नाम है और उनके नाम पर इसे भारत वर्ष कहते हैं–

भरणात्प्रजनाच्चैव मनुर्भरत उच्यते
निरूक्तवचनैश्चैव वर्षं तद्भारतं स्मृतम्।। 8

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi
इस भारत वर्ष के नौ भेद हैं इन्द्र द्वीप, कशेरु, ताम्रपर्ण, गभस्तिमान, नागद्वीप सौम्य, गन्धर्व, वरुण नौवॉ भारत। यह उत्तर से दक्षिण एक हजार योजन विस्तृत है। गंगा मुख द्वार से लेकर कुमारी अन्तरीप तक लम्बा है। यह टेढ़े मेढ़े दस हजार योजन विस्तृत है।

आयतस्तु कुमारीतो गंगा प्रवहावधि
तिर्यगूर्ध्व तु विस्तीर्णः सहस्राणि दशैव तु।। 9

इस द्वीप की सीमा पर मलेच्छ जातियों का निवास है। पूर्व में किरात मध्य में चर्तुवर्ण नियम पूर्वक निवास करते हैं। य महेन्द्र, मलय, सह्य, शक्तिमान् ऋक्षवान्, विन्ध्य एवं पारियात्र पर्वत है। यहाँ नदियों की अधिकता है गंगा सिन्धु, सरस्वती, शतद्रु, चन्द्रभाग, यमुना, सरयू, ऐरावती, वितस्ता, देविका कुहु, गोमती, धौतापापा, बाहुदा, दृषद्वती कौशकी, गण्डकी, निश्चला आदि नदियॉ हिमालय से निकलकर बहती है।

शतद्रुश्चन्द्रभागा च यमुना शरयूस्तथा
ऐरावती वितस्ता च विशाला देविका कुहूः।।
गौमती धौतपापा च बाहुदा च दृषद्वती
कौशिकी तु तृतीया च निश्चला गण्डकी तथा।।
वेदस्मृति वेत्रवती वृत्रघ्नी सिन्धुरेव च।
पर्णाशा नर्मदा चैव कावेरी महतो तथा।। 10

दक्षिण में वेदस्मृति वेत्रवती सिन्धु नर्मदा कावेरी महती, पारा अवन्ती विद्रुषा वेणुमती शिप्रा ह्यवन्ती कुन्ती परियन्त्र से निकलती है–

पारा च धन्वतीरूपा विद्रुषा वेणुमत्यपि।
शिप्रा ह्यवन्ती कुन्ती च पारियात्रा श्रिता स्मृताः।। [11]

शोण, महानद, नन्दना, सुक्रशा, मन्दाकिनी, दर्शाणा, चित्रकूटा, पिप्पली, श्मेनी विमला, चञ्चला, धूतवाहिनी, महागौरी, निर्विन्ध्या आदि नदियॉ विन्ध्य प्रसूता है।[12]

काशिका सुकुमारी, मन्दवाहिनी आदि नदियॉ शक्तिमान् पर्वत से उत्पन्न है। इन नदियों के किनारे कुरु पांचाल, शाल्व, जांगल, शूरसेन, भद्रकार, सह पच्चर, मत्स्य, किरात, कुरुष, कुन्तल, काशी, कौशल, अवन्ती, कालिंग, भूम अन्वक आदि देश हैं।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

पूर्व में अंग बंग मदगुर, अन्तर्गिरि, वहिर्गिरि प्लवंग मतंग मल्लवर्णक शुह्म, गांगेय, मालय, प्रा० ज्योतिष पुण्ड्र विदेह आदि देश है। दक्षिणापथ में पाण्ड्य, करेल, चोल, सेतुक, सूतिक, कूपथ, नव राष्ट्र, कलिंग, कारूष आव्य, शबर, पुलिन्द, दण्डक, वैदर्भ, कुलीय, रूपस, तापस, तैत्तिरिक नामक देश है। भारुकच्छ, सारस्वत, समाहेय, काच्छीक, सौराष्ट्र अर्बुद मालव, उत्कल, माष, दशार्ण, किष्किन्धक, भोज, कौशल, वैदिश, तुमुरा नैषध अवन्तिका आदि देश है।

वायु पुराण– वायु पुराण के अनुसार भी भू मण्डल पर सात द्वीप और उनके अन्तर्गत हजारों उपद्वीप है–

द्वीप भेद सहस्राणि सप्तस्वन्तर्गतानि च

न शक्यन्ते प्रमाणे वक्तुं वर्षशतैरपि।।[13]

इस पृथ्वी पर नौ देशों से युक्त वृताकार द्वीप, जम्बू द्वीप है जिसका विस्तार एक हजार एक सौ योजन है यहाँ विविध नगर में सिद्ध, चारण, गन्धर्व पर्वत है यहाँ के पर्वत विविध धातुओं से सुशोभित हैं। शिलाखण्ड एवं पर्वतीय नदियों से सुशोभित हो रहे हैं। इस प्रकार शोभा सम्पन्न विशाल जम्बू द्वीप नौ देशों में विभक्त और भूतभावन देवों से व्याप्त एवं लवण सागर से घिरा हुआ है। इस द्वीप के छः खण्डों में विभक्त करने वाले छः पर्वत है– तुषारावृत्त, हिमवान्, हेममय, हेमकूट, बाल सूर्य के सम्पन्न, सुनहला निषध और चातुवर्ण्यमय सुवर्णमण्डित मेरु। मेरु पर्वत सबसे ऊँचा है इसकी आकृति प्लुताकार है यह चौकोर और ऊँचा है। इसके चारों ओर विभिन्न वर्णों के मनुष्य रहते है। पूर्व में यह श्वेत ब्राह्मणत्य का दक्षिण में पीत वैश्यत्व का, पश्चिम में यह भृंगपत्र की तरह काला शूद्रत्व का एवं उत्तर में लाल वर्ण का होने के कारण क्षत्रियत्व का माना जाता है। नीलगिरी वैदूर्य और हिरण्यमय है। इसके शिखर उज्जवल, मयूरपिच्छ तुल्य सुन्दर है। यह पर्वतराज सिद्ध गन्धर्वो से सेवित है। इसका अन्तर विष्कम्भ नौ हजार योजन का है। इन पर्वतों के मध्य इलावृत नामक वर्ष है।[14]

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

इलावृत्त का विस्तार नौ हजार योजन है जो मेरु से चारों ओर से घिरा हुआ है। मेरु यहाँ बिना धुऐं की अग्नि सा प्रतीत होता है। मेरु के दक्षिणार्द्ध में दक्षिण वेदी एवं उत्तरार्द्ध में उत्तर वेदी है। इनके मध्य सात देश है। जिनका विस्तार दो–दो हजार योजन का है। उनके मध्य नील एवं मध्य नामक दो हजार दो सौ योजन विस्तार वाले पर्वत है। इनकी अपेक्षा श्वेत हेमकूट, हिमवान् श्रृंगवान आदि पर्वत छोटे है। इनका परिमाण बयासी हजार वानबे योजन का है। उनके मध्य जो देश है वह सात खण्डों में विभक्त है। यह सब प्रदेश दुर्गम पर्वतों से घिरे हुए हैं। अनेकानेक नदियों से अगम्य हैं। हैमवत वर्ष भारत के नाम से विख्यात है।

इदं हैमवतं वर्ष भारतं नाम विश्रुतम्

हेमकूटं परं तस्मान्नाम्ना किंपुरुषं स्मृतम्।। [15]

इसके आगे हेमकूट और हेमकूट से आगे किम्पुरुष देश है। नैषध हेमकूट ही हरिवर्ष कहलाता है। हरिवर्ष व मेरु के आगे इलावृत्त है। इलावृत्त के आगे नील रम्यक देश है। रम्यक देश के आगे श्वेत देश है जो हिरण्यमय भी कहलाता है। हिरण्यमय के आगे श्रृंगवान है जो कुरु कहलाता है। [13] दक्षिणोत्तर में धनुषाकार रूप में स्थित देश है। वहाँ चार बड़े–बड़े देश है। किन्तु इलावृत्त मध्यम है। निषध पर्वत के पूर्व भाग में दक्षिण आधी वेदी है और नील पर्वत के पर भाग मे उत्तर आधी वेदी है। इनमें तीन–तीन देश स्थित हैं। महाशैल माल्यवान् नामक पर्वत उत्तर दिशा में फैला है नील निषध पर्वतों की ऊँचाई एक हजार योजन है। इसका विस्तार तैंतालिस हजार योजन है। इसके पश्चिम में गन्धमादन पर्वत है–

तस्य प्रतीच्यां विज्ञेयः पर्वतो गन्धमादनः

आयामादथ विस्तारान्माल्यवानिति विश्रुतः।। [17]

दोनों के मध्य मेरु पर्वत ही श्रेष्ठ है। यह चारों ओर से उन्नत सुन्दर एवं अव्यक्त धातुओं से भरा है। जल की भी यहाँ कमी नहीं है। यह पृथ्वी रूपी कमल की मेरु कर्णिका है। इसी से चारों पथ उत्पन्न हुए हैं। यही पाँच महान् गुणों के प्राकट्य स्थल है। यहाँ कृतात्मा विनीतात्मा, पुरुषोत्तम महायोगी महेश्वर अव्यक्त रूप में विद्यमान रहते हैं।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

इस मेरु के पूर्व में श्वेत, दक्षिण में पीत, उत्तर में रक्त दक्षिण में कृष्ण शिखर है। यह मेरु अप्सरा, देव गन्धर्व राक्षस नाग आदि से घिरा है सभी जीवों को सृष्टि वाले भवुन से घिरा है इसके चारों ओर चार देश है– भद्राश्व, भरत, केतुमाल और उत्तर कुरु। उत्तर कुरु में पुण्यान लोग निवास करते है। इस मेरु की कर्णिका छियानवे हजार योजन विस्तृत है। इसको अन्तराल चौरासी योजन और केशर जाल तीन सौ हजार योजनों तक विस्तीर्ण है। अत्रि मुनि इस मेरु के शताश्रि, भृण्ड ऋषि सहस्राश्रि सावर्णि अष्टाश्रि मानते है। भागुरि इसे चतुरस्र, वार्षायणि समुद्राकार, गालव शरवाकार गार्ग्य ऊर्ध्व वेणी के आकार का क्रोष्टुकि ऋषि इसे परिमण्डलाकार मानते हैं। यह मणियों एवं रत्नों से भरा है। विभिन्न वर्णो की प्रभा से युक्त है। मूंगा इसके पार्श्वों की शोभा बढ़ाता है। मेरु के शिखरों पर हजारों जीव निवास करते हैं सम्पूर्ण फल देने वाले हजारों पुर महाभुवनों से परिपूर्ण इस पर्वत के शिखर है। यहाँ ब्रह्मर्षियों से सेवित ब्रह्म सभा है। इस पर स्वयं चतुरानन विराजते है। इसमें मणियों की छतें, सोने के उद्यान एवं रत्नमयी क्यारियॉ है। इसके एक और अग्नि की तेजोमयी सभा है। तीसरे तट पर वैवस्वत मनु की महासभा है जो संसार में सुसंयमा नाम से प्रसिद्ध है–

तृतीयेऽप्यन्तरतट एवमेव महासभा
वैवस्वतस्य विज्ञेया लोके ख्याता सुसंयमा।। [18]

चौथे तट पर श्रीमान् विरूपाक्ष की कृष्णाङ्गना नाम वाली महासभा है। पॉचवे तट पर वैवस्वत की शुभवती नाम की महासभा है। वहीं जलाधिपति वरुण की सती नामक महासभा है। छठवें तट पर वायु की गन्धवती नामक सभा है। सातवें तट पर चन्द्रमा की महोदया नामक महासभा है। जो वैदूर्यमणि की वेदी से निर्मित है। आठवें तट पर महात्मा ईशान की सोने सी चमकने वाली यशोवती नामक की महासभा है। यह सभी महासभाएं अप्सरा, सिद्ध, ऋषिगण, महासर्पो से सुशोभित हैं।

जम्बू द्वीप– मेरु पर्वत को घेरे हुए सभी दिशाओं में फैले हुए ऊँचे–ऊँचे अनेक पर्वत हैं। यह मर्यादा पर्वत कहलाते है। यह पर्वत निकुंज, कन्दर नदी, गुफा, झरनों से सुशोभित है। ये पर्वत धातुओं एवं दृढ़ रत्नों से बने है।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

इनसे पीले काले झरने निकलते हैं। यहाँ सिंह, व्याघ्र, शरभ आदि जीव पाए जाते हैं। मेरु से पूर्व दिशा में जष्ठर एवं देवकूट पर्वत है। दक्षिणोत्तर में लम्बाई में नील एवं निषध पर्वत है। दक्षिण और उत्तर में कैलाश एवं हिमवान् नामक पर्वत है। यह पर्वत पृथ्वी को पकड़े हुए है। जिससे वह हिल नहीं पाती। पर्वतों को पाद विस्तार हजारों योजन का है। यह हिंगुल, सुवर्ण प्रवाल आदि अन्यान्य धातुओं से विभूषित है।

इनके दक्षिण में गन्ध मादन, पूर्व में मन्दर, पश्चिम में विपुल और उत्तर में सुपार्श्व नामक पर्वत हैं। यहाँ सिद्ध चारण, यक्ष, गन्धर्व आदि जातियॉ सर्वत्र विराजमान रहती है। यहाँ वृक्षों के मूल विशाल होते है। मन्दर गिरि केतुराह नामक महावृक्ष है। इसकी शाखाओं पर घट के समान विशाल पुष्प लगते है। जो अत्यन्त सुगन्धित होते है।

भद्राश्व नामक प्रसिद्ध देश में सिद्धों के द्वारा भगवान् हृषीकेश की पूजा की जाती है। यहाँ कदम्ब वृक्ष के नीचे श्वेत उश्व पर भगवान हरि विराजमान रहते है। उन्होंने सम्पूर्ण द्वीप देखा है इसीलिए इस द्वीप का नाम भद्राश्व है–

तेन चाऽऽलोकितं सर्वं द्वीपं द्विपदनायका:
यस्य नाम्ना समाख्यातो भद्राश्वो नाम नामत:।।[19]

दक्षिण शिखर पर देवो से सेवित माला से विभूषित सदा फूलने वाला जामुन का वृक्ष है। जिसकी जड़े और तना विशाल है। उससे सुस्वादु, अमृत तुल्य, सुकोमल फल टपकते रहते हैं। जिनके रस से नदी बहती है, जिसे जाम्बूनद कहते हैं। यह पापनाशनी एवं स्वर्ण उत्पन्न करने वाली नदी है। इसी के नाम पर इस द्वीप का नाम जम्बूद्वीप पड़ा –

स केतुर्दक्षिणे द्वीपे जम्बूलोकेषुविश्रुता।
यस्या नाम्ना स विख्यातो जम्बूद्वीप सनातन:।।[20]

विशाल पर्वत के पश्चिम में शिखर पर बहुत विशाल पीपल का वृक्ष है। उसकी तना एवं शाखाएं बहुत ऊँची हैं। उसके नीचे की भूमि स्वर्ण खचित है। इसमें बड़े स्वादिष्ट फल लगते है। इस वृक्ष पर माला पड़ी है। इसीलिए इस देश का नाम केतुमाल है। अमृत मन्थन के समय इन्द्र ने अपनी माला यहाँ टॉग दी थी। जो दैत्यों के बार से मुरझा गयी किन्तु सर्वसिद्धि दायिनी

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

यह माला अब भी वहाँ टंगी है। इसकी पूजा सिद्ध चारण आदि करते है। उत्तर के शिखर पर वट का वृक्ष है। यह लाल–लाल फलों से युक्त उत्तर कुरु का केतु वृक्ष है। यह सनत्वकुमार आदि के कारण इसका नाम कुरु पड़ा। यहाँ उन यशस्वी महात्माओं ने अविनाशी मंगलास्यद शाखत् लोक प्राप्त किया वह उत्तर कुरु के नाम से प्रसिद्ध है।

इस पृथ्वी पर सारिका मोर, चकोर शुक, हंस, भौर, जीवजीवक, हेमक कोयल, वल्गु, सुकुण्ठकाञ्चन, कलविक आदि पक्षीगण विचरण करते है। यहाँ पूर्व में चैत्र वन, दक्षिण में नन्दन वन, पश्चिम में वैभ्राज वन और उत्तर में सवितृवन है। यहाँ पूर्व में अरुणोद, दक्षिण में मानस, पश्चिम में शीतोद और उत्तर में महाभद्र नामक सरोवर है।

मन्दर के पूर्व में शीतान्त, कुमुञ्ज, सुवीर, विकङ्क, मणिशील, कृष्ण, महानील, सविन्दु, रेणुमान, सुगेधनिषध और देवाचल नामक पर्वत श्रृंखला है। मान सरोवर के दक्षिण में जो पर्वत है श्रीशिखर, कलिङ्ग, पतङ्ग, रूचक, सानुमान ताम्राभ, विशाख, श्वेतोदर, समूल, विषधार, रत्नधार, महामूल, पंचशैल, कैलाश एवं हिमवान् नामक पर्वत हैं।

शीतोद सरोवर के अपर भाग में सुपक्षा शिखिशैल, काल, वैदूर्यगिरी कपिल, पिंगल, रूद्र, सुरस, कुमुद, मधुपान, अंजन, मुकुट, कृष्ण, पाण्डर परिजात, त्रिश्रृङ्ग नामक पर्वत हैं, ये पश्चिम दिशा के पर्वत हैं।

महाभद्र नामक सरोवर के उत्तर में शंकुकूट, वृषभ, हंस, नाग, कपिल सानुमान, इन्द्रशैल, नील, कनक, श्रृंग पुष्पक मेघ, विराज, शैलेन्द्र जारूधि है।

शोतान्त एवं कुमुञ्ज के मध्य घाटी में पक्षियों का फलख बना रहता है। यहाँ नाना जीव निवास करते है, यह घाटी तीन सौ योजन लम्बी एवं सौ योजन चौड़ी है। यहाँ पुण्डरीक अरविन्द आदि विकसित हैं दुर्धर्ष नाम, महानाग निवास करते है। पअवन में करोड़ो पखुरी वाले पक्ष है, इस सरोवर के पूर्व तट पर विल्व वृक्ष है। उसके हरे पीले फल है। यह फल अमृत तुल्य और भेदी वाघ यन्त्र के जैसे विशाल है। यह श्रीवन गन्धर्व किन्नर यज्ञ महानाग से भरा रहता है।

विकंक एवं मणिशैल के मप्य सौ योजन लम्बा दो सौ योजन चौंडा चम्पक वन है। यहाँ के वृक्ष फूलों के भार से झुके–झुके रहते है। यहाँ दानव देव

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

गन्धर्व राक्षस यक्ष किन्नर अप्सराएं और नाग रहते है। यहाँ चारों वेदों का पाठ होता है। यहाँ कश्यप का आश्रम है।

महानील एवं कुमुंज पर्वतो के बीच सुखदायिनी महानदी बहती है। यहाँ तीस योजन चौड़ा ताल बना है।

कुमुद एवं अंजन पर्वत की दृढ़ है। ऐरावत का वास स्थान यही है।

वेणुमन्त एवं सुमेध पर्वत के मध्य सत्तर हजार योजन लम्बा सौ योजन चौड़ा मैदान है। यहाँ हरी दूर्वा है। निषध एवं देव शैल के उत्तर में हजार योजन लम्बी है। योजन चौड़ी शिलामयी भूमि है। यहाँ लता गुल्म घास कुछ भी नहीं है। थोड़ा पानी सर्वत्र प्राप्त होता है।

शिशिर एवं पतंग के मध्य उदुम्बर वन है। यहाँ की भूमि चिकनी, लता पादप युक्त पक्षि वृन्द से युक्त है। यहाँ लाल पके रसीले फल है। इस भूमि में यक्ष, गन्धर्व, किन्नर, उरग और विद्याधर निवास करते हैं। यहाँ मीठे जल की नदियाँ बहती है।

ताम्रवर्ण और पतंग पर्वत के मध्य सौ योजन लम्बा दो योजन चौड़ा सरोवर है। जिसमें पुण्डरीक सहस्रपत्र, महापद्म खिले है। यहाँ शैवाल भी फैले हैं। यहाँ देव दानव–उरग निवास करते है। उसी के मध्य सौ योजन लम्बा, तीस योजन चौड़ा एक देश है जो मरु भूमि से विभूषित है। यहाँ विद्याधरों के नगर है। अतिउन्नत, अट्टालिकाएं, चन्द्रशालाएं है। जिनमें स्त्री पुरुष निवास करते है।

विशाल व पतंग पर्वत के मध्य ताम्रवर्ण सरोवर है। यहाँ विशाल सुगन्ध युक्त शुद्ध फलों से युक्त भूमि है। यह तीस योजन लम्बी एवं पचास योजन चौड़ी है। यह पक्षियों का कलरव गूंजता रहता है।

वसुधार एवं रत्नधार के मध्य किंशुक वन है। जो तीन योजन चौड़ा एवं सौ योजन लम्बा है। यहाँ सदा फूल सुशोभित होते रहते हैं। सिद्ध चारण अप्सराएं यहाँ निवास करती है।

पंचकूट एवं कैलाश के मध्य वन भूमि है जो सौ योजन लम्बी एवं तिरेसठ योजन चौड़ी है। यह सामान्य देहधारियों के लिए के लिए दुर्गम है। यहाँ की भूमि उज्ज्वल एवं पाण्डुर वर्ण की है।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

पश्चिम दिशा में सुवक्ष एवं शिखि शैल के मध्य, शिलामय भूमिखण्ड है। जिसकी परिधि सौ योजन है यह सदा गर्म रहती है। यह भूमि सभी के लिए दुर्गम है। शिलास्थली के मध्य में अग्नि देव का वास है। सभी और लपटें फैंकने वाले शिखाशाला अग्नि देव यहाँ जलते रहते है। वे ही लोक संवर्तक हैं।

देवापि एवं गम पर्वत के बीच मातुलुंग नामक स्थली है। यह मधुर व्यञ्जनों से पके हुए फलों से सुशोभित वन स्थली है। यहाँ वृहस्पति का पवित्र आश्रम है। यह सिद्धों से घिरा स्थान है। यहाँ कुमुद अञ्जनाचल के केसर द्रोणी है। यहाँ विशाल फूल है, जो चन्द्र से श्वेत है, यहाँ विष्णु का मन्दिर है।

कृष्ण एवं पाण्डुर पर्वतों के मध्य नब्बे योजन लम्बा एवं तीस योजन चौड़ा चिकनी मिट्टी का मैदान है। यहाँ लता गुल्म नहीं हैं भूमि उबड़ खाबड़ नहीं हैं यहाँ पद्मिनी सरोवर है। जिसमें सहस्रपत्र, महापद्म, पुण्डरीक शतपत्र उत्पल नीलोत्पल, विकसित हैं। यहाँ किन्नर, यक्ष, सिद्धचारण विचरण करते है। यहाँ न्यग्रोध का विशाल वृक्ष है जिसके नीचे नीलाम्बरधारी देन विराजते हैं।

सहस्र शिखर एवं कुमुद के मध्य सौ योजन लम्बा एवं बीस योजन चौड़ा पर्वत है। यहाँ पक्षी कलख करते रहते हैं। यहीं शुक्राचार्य का आश्रम है।

शंकुकूट एवं वृषभ पर्वत के मध्य परुषकस्थली है। यहाँ बेल के वृक्ष है। यहाँ फल के रस से भूमि पंकिल हो गयी है। चारण, किन्नर, उरग, साधुगण यहाँ विचरण करते हैं।

कपिंजल और नाग शैल के मध्य नाना वनी से युक्त मनोहर स्थली है। यह दो सौ योजन लम्बी एवं सौ योजन चौड़ी है। यहाँ विविध फूल फल होते है। इस वन मे किन्नर नाग विचरण करते हैं। यहाँ द्राक्षावन, नागवन, खर्जुख, नील अशोक वन, दाडिम वन, अखरोट वन, तिलक वन, बदरी वन है।

द्राक्षावनानि रम्याणि तथा नागावनर्निच।
खर्जुरवनखण्डानि नीलाशोकवनानि च।।
दाडिमानां च स्वादूनामक्षोटकवनानि च।
बदरीणां च स्वादूनां वनखण्डनि सर्वशः
स्वादुशीताम्बुपूर्णाभिर्नदीभिः शोभितानि च।। [21]

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

यह मधुर शीतल जल वाली नदियाँ बहती है।

पुष्पक और महामेघ पर्वतों के मध्य सौ योजन चौड़ी एवं साठ योजन लम्बी भूमि है। जो समतल पाण्डुर एवं घन है। यह वृक्षलता गुल्मादि का अभाव है। यहाँ कोई जीव जन्तु नहीं है। यह कानन स्थली के नाम से प्रसिद्ध है। इस प्रदेश में कितने ही महासरोवर है। कितने ही सरोवर पर्वतों की कुक्षि में वर्तमान है।

पर्वतों के मध्य शीतान्त नामक महापर्वत है वहाँ गौरिक आदि धातुएं और अनेक प्रकार के रत्न उत्पन्न होते हैं। उसका मध्य भाग पुष्पों के ढेरों से संवलित है। वहाँ बहुमूल्य मणियाँ एवं स्वर्णमयी वाँस (सुनहली) उत्पन्न होता है। यहाँ भूमि पर मानों सोने एवं मूंगे से पच्चीकारा की गयी है। पहाड़ों की भूमि पर मानों लताओं ने ही चित्रकारी कर दी हो।[22] यहाँ अनगिनत प्रजाति के फूल होते है। यहाँ फूलों से युक्त झााड़ियों कुंजो की शोभा देखते ही बनती है। यहाँ किन्नर और गन्धर्व प्रजातियाँ रहती है। विविध प्रकार के पुष्प एवं फलों से युक्त होने से यहाँ भोज्य पदार्थो की सुविधा है। अतः अनेकानेक जीव यहाँ निवास करते है, एवं समस्त साधनों से सम्पन्न है। यहाँ पर देवगण इन्द्र का परिजात वन भी है।

तत्र तद्देवराजस्य पारिजातवनं महत्

प्रकाशं त्रिषु लोकेषु गीयते श्रुतिनिश्चयात्।।[23]

पारिजात वन की वायु सौ योजन तक गन्ध फैलाती है। यहाँ बहुत सी वाबड़ी है। जिनमें स्वर्ण कमल विकसित होते हैं। उन कमल के नाल वैदूर्य –सम केसर हीरे के है न वावड़ियों का जल सुवासित है। विकसित शतपत्र एवं महाद्म असंख्य रूप से खिले हैं। यहाँ स्वर्णमयी कछुएँ है। यह परिजात वन विचित्र रंगों के पक्षियों से युक्त है। उन पक्षियों के पंख रत्नों के और किसी की चोंच स्वर्णमय है।

यहाँ क्रीडावन में अग्नियुक्त पर्वत है जिसका पार्श्व स्वर्णमयी है। परिजात पुष्प के वृक्ष एवं लताएँ है। वहाँ देव दानव, पन्नग, यक्ष, राक्षस, गुह्यक, गन्धर्व विद्याधार, सिद्ध, किन्नर, अप्सराएँ क्रीडा करती हैं।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

इस पर्वत के पूर्व पार्श्व में कुमुञ्चन नामक पर्वत है। जिसमें अनेक झरने एवं कन्दराएँ हैं। यह धातुओं से युक्त है यहाँ दानवों के आठ विस्तृत पुर हैं।

अनेक शिखर कन्दराओं से युक्त वज्रक पर्वत पर राक्षसों का निवास है। महानील पर्वत पर घोड़े के समान मुख वाले किन्नरों के पन्द्रह नगर है। यह विविध वर्णो की सोने की परिखा से घिरा है। यहाँ दुर्धर्ष भयंकर अग्नि ताप है। अजगरों का स्थल है। वे सब स्वर्ण के वशवर्ती हैं। वहाँ सर्पो के कारण हजारों दैत्यगण निवास करते हैं। उनकी अट्टालिकाएं ऊँची परिखा से घिरी हैं।

वेणुमान पर्वत पचास हजार योजन लम्बा व तीस हजार योजन चौड़ा है। यहाँ विद्याधरों के तीन पुर निवास करते है। उलूक रोमश– महानेत्र विद्याधरों के अधिपति हैं। वैकंक पर्वत पर गरुड़ पुत्र सुग्रीव का निवास है। यह पर्वत रत्न एवं धातुओं से युक्त है। यह पर्वत महाबली पक्षियों से युक्त है।

करंज पर्वत पर भूतपति भगवान् शिव का निवास है। उस पर विविध वेष धारी प्रमथ गण निवास करते है।

वसुधार पर्वत पर महान तेजस्वी महावसुओं का निवास है। यह पर्वत रत्न, धातुओं से युक्त है। यहीं सप्तर्षियों का भी निवास है।

हेमशृंग पर्वत पर ब्रह्मा का निवास है। गज शैल पर भगवान रूद्र भूत गणों के साथ निवास करते हैं। सुमेध पर्वत पर आदित्य वसु रूद्र एवं अश्विनी कुमार रहते हे। यह पर्वत विविध धातुओं से युक्त है। गुफाओं से भरा है। यहाँ यक्ष, गन्धर्व, किन्नर आदि पूजा करते है।

हेम कुक्ष पर्वत पर गन्धर्व नगरी है। यहाँ अपत्तन नामक सिद्धगण एवं युद्ध प्रेमी गन्धर्व रहते है। जिसके राजा कपिंजल है।

अनल पर्वत पर राक्षस पंचकूट बर दानव रहते है यह दोनों ही आपस में शत्रु है।

शतश्रृंग पर्वत पर पक्षियो के सौ नगर हैं ताम्राभ पर्वत पर कद्रुनन्दन तक्षक के पुत्रों का निवास है। विशाख पर्वत पर गुह का निवास है। श्वेतोदर पर्वत पर गरुड़ पुत्र सुनाभ का नगर है।

पिशाच पर्वत पर कुबेर का भवन है। जहाँ यक्ष रहते है। हरीकूट पर्वत पर हरिदेव है। कुमुद पर किन्नरों का निवास है। अंजन पर्वत पर उरग गण

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

कृष्ण पर्वत पर गन्धर्व गण रहते है। पाण्डुर पर्वत पर विद्याधरों के नगर हैं। सहस्र शिखर पर्वत पर दैत्यों के हजार नगर हैं। मुकुट पर्वत पर पत्तगों का निवास है। पुष्पक पट मुनि गणों का सुपक्ष पर वैवस्वत का सनेक वायु नगाधिप का वास है।

देवकूट नामक पर्वत पर गरुड़ का निवास है।
यहाँ चारों ओर सौ योजन तक अनेक विशाल भवन है।

शाल्मली द्वीप में निवास करने वाले महात्मा गरुड़ का यह पहला भवन है। यहाँ अनेक सर्प तीव्रगामी पक्षि निवास करते हैं इसके दक्षिण में सात शिखर है। चालीस योजन लम्बे तीस योजन चौड़े गन्धर्वो के नगर है। आग्नेय नामक महाबलों कुबेर के अनुचर गन्धर्व गण भवनों के अधिपति हैं।

उस भुवन महागिरि के उत्तर में राहू का निवास है। वह नगर शत्रुओं के लिए अगम्य है यहाँ कितने ही उद्यान वनअट्टालिकाएं कोठे है। इसमें चारों ओर परिखा एवं तोरण लगे है। इस नगर में निरन्तर वाद्य यंत्र बजते रहते है।

देवकूट पर स्थित यह नगर सिद्धों एवं ऋर्षियों की विहारस्थली है।

दूसरे मर्यादा गिरि पर विभिन्न भवनों में कालिकेय नामक असुरों का निवास है। इनके भवन, राजपथ सोने एवं मणियों से मण्डित हैं। यहाँ सदा मंगल होते रहते है। वहाँ सौ योजन लम्बा एवं बासठ योजन चौड़ा सुनास नामक मेघ है। उसी के दक्षिणी शिखर पर बासठ योजन लम्बा एवं बीस योजन चौड़ा औत्कच नामक राक्षसों का नगर है। वेस कामरूप है। उनका नगर सोने की परिखा एवं तोरणों से घिरा है। देवकूट पर्वत के शिखर मणिकम चिकने एवं भव्य हैं। महापुरों में सौ–सौ मंजिल ऊँचे भवन है। उसी देवकूट पर्वत पर एक भूतवट नामक वृक्ष है। जिसके पत्ते चिकने विशाल तना विशाल खड़े एवं घनी छाया है। इस वृक्ष पर अनेक जीव निवास करते हैं। भगवान शिव का यहाँ तीनों लोकों मे विख्यात एक स्थान है।

सुअर, हाथी, सिंह, भालू, बाघ, शरभ, गीध, उल्लू, भटे, ऊँट, बकरा आदि जानवर यहाँ है। यहाँ नाना प्रकार की आकृति धारण करने वाले भूत प्रेत निवास करते है। महादेव की पूजा के समय यहाँ झांझ, मृदङ्ग, पणब

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

शंख, भेरी इत्यादि वाद्य यंत्रो का नाच गाने का भयंकर कोलाहल होता है।

यहाँ भगवान शिव की कृपा के लिए सिद्ध, देव, गन्धर्व, उरग, राक्षस सभी उनकी पूजा करते है। भूतपतेर्भूता नित्यं पूजां प्रमुञ्जते।

देवकूट पर्वत के मध्य शिखर पर कैलाश पर्वत है–

विविक्त चारूशिखरं पत्रितं शङ्खवर्चसम्

कैलासं देवभक्तानामालयं सुकृतात्मनाम्।।[24]

यह कुन्द के पुष्प तुल्य पाँच सौ योजन विस्तृत है। यह सोने आदि धातुओं से निर्मित है। यही कुबेर का नगर है। उनकी सभा विविध प्रकार के सोने से मण्डित है। कुवेर की सभा का नाम विपुला है। वहाँ इच्छानुसार चलने वाला पुष्पक नामक महाविमान है यह सोने से निर्मित है। यहाँ एक पिंगल नामक महादेव के सरवा भी निवास करते हैं। यहाँ अप्सराए गन्धर्व यक्ष सिद्ध एवं चारण गण निवास करते है। यहाँ अकूत सम्पत्ति है।

तत पद्ममहापद्मौ तथा मकरकच्छपौ

कुमुदः शंखनीलस्य नन्दनो निधिसत्तमः।। [25]

यहाँ कैलाश पर यक्षाधिपति का निवास है। यहाँ सोने के मणि सोपान युक्त पुष्पों कटकटा नाम धान है। सोने के कमल नील वैदूर्य के महोत्पल कुमुद खण्ड सुशोभित हैं। यहाँ मन्दाकिनी नामक नदी है। और अलकनन्दा पक्षी है। जो देवर्षियों से सेवित है। इस पर्वत के पूर्व में कूट नामक 1000 योजन विस्तृत पर्वत है। यहाँ गन्धर्वो का महानगर है। सुबाहु, हरिकेश, चित्रसेनादि दस महापराक्रमी गन्धर्वराजों का यहाँ निवास है। पश्चिम में कुन्द चन्द्र के जैसा अस्सी योजन लम्बी चालीस योजन चौड़ी भूमि पर यक्षों के महावन हैं। यहाँ महामालों सुनेत्र और मणिवर तीन उदार पक्ष प्रभु निवास हैं।

यह हिमालय पूर्वीय समुद्र से लेकर पश्चिमी समुद्र तट तक विस्तृत है। इस पर द्रुम सुग्रीव सैन्य भगदत्त आदि सौ प्रमुख निवास करते हे।

तस्यैव दक्षिणे पार्श्वे हिमवत्यचलोत्तमे

निकुञ्जनिर्झर गुहानैकसानुदरी तटे।।[26]

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

रूद्र की महादेव एवं पार्वती का विवाह हुआ है। विभिन्न प्राणियों से युक्त यह भूमि विचित्र पुष्प एवं फलों से युक्त है। यहाँ की गुफाओं में प्रसन्न सुमंगला कृशोदरी किन्नर सुन्दरियाँ रहती हैं।

वहाँ गन्धर्व अप्सराएं निवास करती हैं। यहीं पर उमा वन है जहाँ भगवान् शिव अर्धनारीश्वर रूप को धार करते है–

तत्रैवोमाभवनं नाम सर्वलोकेषु विश्रुतम्

अर्धनारीनरं रूपं धृतवान्यत्र शंकर।।[27]

यहीं पर शरवन है जहाँ भगवान् कार्तिकेय का उद्भव हुआ है। यहीं पर क्रौञ्च पर्वत है। यहाँ सिंह रथ रूद्र कार्तिकेय का स्थान है। यह क्रौञ्च पर्वत विचित्र पुष्पों से युक्त है। ध्वजा व किंकिणी से युक्त है। भगवान् कार्तिकेय सूर्य के समान दैदीप्यमान है। हिमालय का पृष्ठ भाग विभिन्न भूतों से युक्त है एवं पीली चट्टानों से युक्त है।

तथा पाण्डुशिलानाम् ह्याक्रीड़ा क्रौञ्चघातिन:

नानाभूतगणाकीर्णे पृष्ठे हिमवत: शुभि: ।।[28]

इसके पूर्वी तट पर सुन्दर सिद्धों का वास कहा गया है। यह कलाप ग्राम के नाम से प्रसिद्ध स्थान है। मृकण्ड, वसिष्ठ, भरतवल, विश्वामित्र, उद्दालक आदि ऋषियों ने यहाँ उग्र तपस्या की हिमालय में सैकड़ो आश्रम है। अनेक सिद्धों का वास है गन्धर्व यक्ष मलेच्छ यहाँ निवास करते है। यह रत्नों से परिपूर्ण है विभिन्न स्वभाव के जीवों से भरा है। यहाँ से हजारों नदियाँ उत्पन्न हुई है।

निषध– इस हिमालय के पश्चिम में निषध नामक पर्वत है। यह सोने से विभूषित भगवान् विष्णु सिद्धर्षियों से सेवित यक्ष, गन्धर्व, अप्सराओं से भरा हुआ है। यहाँ साक्षात् भगवान् विष्णु विराजते है–

तस्यैवाभ्यन्तरे कूटे नानाधातुविभूषिते

तटे निषधकूटस्य श्लक्ष्ण चारुशिलातले।।[29]

यहाँ उल्लंघी नामक राक्षसों का सुन्दर नगर है। यहाँ के द्वार एवं तोरण सोने के हैं। यहाँ के बाग तीस योजन विस्तृत है। जिसमें विषैले सर्प निवास करते है। इसके दक्षिणी पार्श्व में अनेक दैत्यों के नगर हैं। इसके परिचय में

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.
पारिजात नामक पर्वत देव, दानव, नाग के समृद्ध नगर है। वहाँ सोनशिला नामक पर्वत के महातट से सोम अवतरित होता है। यहाँ चन्द्र की उपासना ऋषि किन्नर गन्धर्व करते है।

इसके उत्तर के ब्रह्म पार्श्व है यह स्थान देवराज का ब्राह्मण पक्षित विधि युक्त है यहाँ स्वयं ब्रह्मा जी उपासन करते है। यही अग्नि देव का वास है। इस श्रेष्ठ पर्वत पर तीन शिखर हैं। ऋषि सिद्ध अन्यान्य प्राणि निवास करते है। यहाँ हेमचित्र नामक लोक विख्यात नगर है। यहाँ त्रिदेव का निवास है। नारायण पूर्व में ब्रह्मा मध्य में एवं शंकर पश्चिम में स्थित है। दैत्य, दानव गन्धर्व, यज्ञ, राक्षस, सर्प इसकी पूजा करते है। यहाँ कहीं–कहीं यक्ष गन्धर्व नागों के नगर है।

इस पर्वत के मध्य भाग में सिद्ध देवर्षि का निवास है। यहाँ
यहाँ आनन्द जल वाला सरोवर है। जिसमें सिद्ध गण स्नान करते हैं। इसके हंस कारक, भ्रमर विचरण करते है। इसमें पक्ष उत्पल सौगन्धिक कुमुद खिलते है। इसकी लम्बाई चौड़ाई तीस योजन है। यहाँ चण्ड नामक नागपति का निवास है। यह सौ सिर वाले एवं विष्णुचक्र से चिन्हित हैं। इन आठो को देव पर्वत समझना चाहिए।

मणि पर्वत, हरिताल पर्वत, हिंगुलकांचन, भास्कर, मनः शिला, विभिन्न धातुओं से रंजित एवं नदी कन्दराओं से युक्त यहाँ की भूमि है।

दैत्य, राक्षस, साधु, किन्नर, नाग, गन्धर्व, सिद्ध, चरण, अप्सरा आदि यहाँ निवास करते हैं। मेरु में केसर के समान यह सिद्ध लोक है। जो विचित्र आश्रमों और सृकृताआम्माओं की बिहार स्थली है। यह मेरु ही स्वर्ग कहा गया है–

नात्युग्रकर्म सिद्धानां प्रतिमा मध्यमाः स्मृता

स हि स्वर्ण इति ख्यातः क्रमस्त्वेष प्रकीर्तितः।।[30]

विविध प्रमाण वाली, वर्षा बल, भक्ष्य अन्न, आच्छान्दन, भूषण से युक्त यह पृथ्वी प्रजा से युक्त है। इस पर चार विशाल महाद्वीप है। भद्र, भरत, केतुमाल और उत्तर कुरु–

चत्वारो नैकवर्णाढ्या महाद्वीपाः परिश्रुताः

भद्राश्व भरताश्चैव केतुमालाश्च पश्चिमाः।।[31]

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

इन द्वीपों से यह पृथ्वी पूर्ण पद्माकार है। इसके अन्दर द्वीप, शैल, वन, विद्यमान है। ब्रह्मलोक से मनुष्य लोक तक सब जीव जन्तुओं के द्वारा त्रिलोक कहलाती है। इस पृथ्वी पर बड़े बड़े सरोवर है। मेरु के चारों ओर साठ हजार योजन में महाभागा नाम की पवित्र नदी बहती है। यह चैत्ररथ वन को खींचती है और अरुणोद सरोवर में गिरती है।

अरुणोद सरोवर से निकलकर शीतान्त पर्वत से गिरने वाली सीता नाम से यह महाभागी नदी जानी जाती है। वैंकक पर्वत से मणिशैल और महाशैल ऋषभ पर्वत पर महानदी बहती है। यह महानदी देवकूट पर्वत पर है। जो समुद्र पार्श्व तक विस्तृत है। यह महानदी भद्राश्वद्वीप को सींचकर पूर्व समुद्र में गिरती है।

गन्धमादन पर्वत पर अनेक प्रतापों से युक्त नन्दन वन को सींचने वाली जो नदी बहती है। उसकी संज्ञा ऊतक नन्दा है।

तद्गन्धमादन वनं नन्दनं देवनन्दनम्
प्लावयन्ती महाभागा प्रयाता सा प्रदक्षिणम्।।
नाम्ना ह्यलकनन्देति सर्वलोकेश्रु विश्रुता।। [32]

मानसरोवर से प्रवेश कर त्रिकूट पर्वत पर गिरती है। वहाँ से रूचक फिर निषध ताम्राभ में प्रवाहित होकर श्वेतोदर, हेमकूट पर्वत पर बहती हुई हिमालय पर गिरती है। यह नदी सैकड़ों स्थलों को सींचती हुई दक्षिण समुद्र में गिरती है। यह पवित्र महानदी गंगा है।

तस्माद्विभवतो गङ्गा गता सा तु महानदी
एवं गङ्गेति नाम्ना हि प्रकाशा सिद्धसेविता ।। [33]

जहाँ यह गंगा नदी प्रवहित है। वह देश बड़ा ही पुण्यशाली है।

भगवान् शिव जिसे धारण किए है देव जिसके जल का उपयोग करते हैं। जो वायुदेवगामिनी मेरूपर्वत से गिरती है। वह स्वर्ण नदी मानों सिद्धों के चरणों द्वारा सेवित है।

देवभ्राज, महाभ्राज और वैभ्राज्य महावनों को प्लावित कराने वाली महाभागा नामक नदी है जो सितोद सरोवर में प्रविष्ट होती है।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

शिखि पर्वत में कंक, वैदूर्य, कपिल, गन्धमादन पर्वत और पिंजर पर्वत सरोवर में कुमुदाचल मुकुट कृष्ण पर्वत आदि पर उतरती महानदी बड़े वेग से परिजात शैल पर गिरती है।

अनेक झरनों नदी, गुफा, शिरों पर बहती चट्टानों से टकराती केतुमाल महाद्वीप को सींचती पश्चिमी समुद्र में गिरी।

केतुमालं महाद्वीपं नानाम्लेच्छगणैयुतम्

प्लावयन्ती महाभागा प्रकाता पश्चिमार्णवम्।। [34]

महानदी हेमकूट तट से गिर कर मेरुगिरि के उत्तर भाग में स्वर्ण चित्रित तटों से सुशोभित महासत्व संकुल पाद देश में गिरती है। सदितृ वन एवं अन्यान्य वनों की परिक्रमा करने वाली यह कल्याणी नाम वाली नदी है। जो महाभद्र सरोवर में मिलती है।

भद्र सरोवर से भद्र सोमा नाम से विख्यात नदी निकलती है। भद्र सोमा बहु विस्तृत वेगवती एवं विभिन्न पर्वतों पर उतरती हुई हेमशिखर पर्वत पर गिरती है।

बराह मयूर पर्वत जातुथि पर्वत पर से महाभाग नदी वीरूधि पर्वत पर गिरती है, एवं अन्त में पश्चिम समुद्र में मिल जाती है। इस प्रकार यह महाभाग नदी विभिन्न नामों से चारों द्वीपों को प्लावित करती है। मेरु के चारों ओर चार द्वीप चार क्रीडा कानन चार सरोवर और चार वृक्ष हैं, एवं चार महापर्वत हैं। गन्धमादन पर्वत पूर्व से पश्चिम बत्तीस हजार योजन लम्बा है। इसके पूर्व में माल्यवान है। यह भद्राश्ववासी प्रसन्नता से निवास करते हैं। यहाँ सालवत है। जिसमें कालाम्र नामक विशाल वृक्ष है।

भद्राश्व द्वीप पर सिद्धों का निवास है। यहाँ शैवाल, वर्ण मालभ्रण, कोरञ्ज श्वेत और नील ये पाँच श्रेष्ठ पर्वत है। यहाँ विभिन्न जातियों के लोग निवास करते हैं। इस द्वीप के देश सुमङ्गल शुद्धचन्द्रकान्त, सुनन्दन, व्रजक, नील मौलेय, सौबीर, विजयस्थल, महास्थल, सुकाम, महाकेश, सुमूर्द्धज, बातरह, सोपासंग, परिवाय, पराचक्र, समवक्र, महानेत्र, शैवाल, स्तनय, कुमुद, शाकमुण्ड

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

उरः संकीर्ण, भौमक,योमक्र, वत्सक, बाराह, हारवाहक, शंख, भाविमनद, उत्तर हैम भौम, कृष्ण भौम, सुभौम एवं महाभौम नामक देश है। यहाँ महापुण्या महानदी गंगा बहती है। अन्य नदियॉ हंसवसति, महाचक्रा, चक्रा, वक्जा, कांची, सुरसा आपगोत्तमा, शाखावती ,इन्द्र नदी, मेघा, मङ्गर वाहिनी, कावेरी, हरितोया, सोमावर्ता, शतह्वदा, वनमाला, वसुमती, पम्पा, पम्पावती, सुवर्णा, पंचवर्णा पुण्या, वपुष्मती, मणि, वप्रा, सुवप्रा, ब्रह्मभागा, शिलाशिनी कृष्ण तोया, पुण्योदा नाग नदी।

मणिवप्रा सुवप्रा च ब्रह्मभागा शिलाशिनी

कृष्णतोया च पुण्योदा तथा नागनदी शुभा।[35]

वैशालिनी, मणितटा, क्षारोदा, चारूणावती, विष्णुपदी, महानदी, हिरण्य वाहिनी, नीला, स्कन्दमाला, सुरावती, वामोदा, पताका, वेताली, आदि नदियॉ है। जो पूर्व की ओर बहती हैं। इनमें मुख्य नदी गंगा है। इनके नाम ग्रह मात्र से जीव पवित्र हो जाता है। भद्राश्व के राष्ट्र समृद्ध विभिन्न वन जनपदों से एवं मंगलपरायण नर नारियों से परिपूर्ण हैं। यहाँ देवाधिदेव शंकर एवं महागौरी की पूजन महात्माओं द्वारा किया जाता है।

केतुमाल द्वीप– पश्चिम दिग्वर्ती निषधाचल से पश्चिमी सात श्रेष्ठ पर्वतों से युक्त नदियों और देश वाला द्वीप है।

निषधस्थाचलेन्द्रस्य पश्चिमस्य महात्मनः।

पश्चिमेन हि यत्तत्र दिक्षु सर्वासु कीर्तितम्।।[36]

केतुमाल द्वीप में विशाल, कम्बल, कृष्णो, जयन्त और हरि वर्धमान अशोक सात श्रेष्ठ पर्वत हैं। इनसे और भी बहुत से पर्वत उत्पन्न होते हैं। यहाँ विभिन्न प्रकार की बस्तियॉ और जनपदों में विभिन्न राजाओं का राज्य है। ये राजा गण अति प्रसिद्ध है। पर्वतों के मध्य सम स्थानों पर देश हैं। सुख भ्रमर, माहेय, सुमौल, स्तबक, क्रौञ्च, कृष्णाङ्ग, मणिपुञ्जक, कूट, कम्बल भौषीय, समुद्रान्तरक, कुरंभव, कुच, श्वेत, स्वर्णकटक शुभ, श्वेतांग, कृष्णापर वहि कपिलकर्णिका, अत्याकरयल, गोज्वाल, हीनान, वनपातक, महिब, कुबेर धूमज, जंग, बंग, राजीव, कोकिंल, बाचांग, महांग, मधैरेय, सुरेचक, पित्तल

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

काचल, श्रवण, मत्तकोकिल, गोदाब, बकुल, बांग, बंगकामोद और कला आदि पक्षिगण जहाँ विचरण करते है। यहाँ की प्रसिद्ध नदियॉ–कंबला तामसी, श्यामा, सुमेधा, बकुला, विकीर्णा, शिखिमाला, दर्भावती, भद्रानदी शुकनदी, पताशा, महानदी, भीमा, प्रंभजना, कोची, पुण्या, कुशावती, दक्षा शाकवती पुष्योदा, भारती, महानदी, चन्द्रवती, सुमूला, ऋषभा, समुद्धमाला चम्पावती, एकाक्षा, पुण्कला, वाहा, सुवर्णा, नन्दिनी, कालिन्दी, पुष्योदा, भारती शीतोदा, पातिका, ब्राहनी, महानदी, विशाला, पीवरी, कुम्भकारी, रूषा, महिषी दण्डा और नद नदी यहाँ प्रवाहित हैं। ये नदियॉ पाव नाशिनी है और देवर्षियों द्वारा सेवित हैं।

यह द्वीप विभिन्न रत्नों से परिपूर्ण हैं–

नाना जनपदा स्फीतं महापगाविभूषितम्।

नानारत्नौघसम्पूर्णं नित्यं प्रमुदितं शिवम्।।[37]

रमणकदेश– श्वेत पर्वत से दक्षिण और नील पर्वत से उत्तर में फैला है। यहाँ के लोग बूढ़े नहीं होते और न ही उनके शरीर से दुर्गन्ध आती है। यहाँ रोहिणी नामक एक महाना वट वृक्ष है। जिसके रस को पीने से वहाँ के निवासी दीघायु पाते है। यहाँ आयु दस हजार वर्ष की आयु होती है।

हिरण्वतदेश– श्वेत पर्वत के उत्तर में श्रृंगाचल के दक्षिण में हिरण्यवत नामदेश है। यहाँ हेरण्वती नदी है–

उत्तरेण तु श्वेतस्य श्रृङ्ग साह्वस्य दक्षिणे

वर्षं हिरण्वतं नाम यत्र हैरण्वती नदी।।[38]

यहाँ के निवासी जीवित तेजस्वी महाबली एवं समस्त ऋतुओं का उपभोग करने वाले हैं। यहाँ षड रस युक्त बड़हर का वृक्ष है। यहाँ श्रृंगवान गिरि के तीन ऊँचे शिखर है जिनमें एक मणि का दूसरा सोने का, और तीसरा रत्नों से परिपूर्ण हैं। वहाँ वृक्षों पर फूल एवं फल बड़े मनोरम और मीठे होते है। यहाँ के वृक्ष वस्रा एवं आभूषण भी प्रदान करते हैं। यहाँ के कुछ वृक्षों से शहद टपकता रहता है। यहाँ दूध देने वाले भी वृक्ष है। यहाँ की भूमि मणिमयी है। धरातल सुकोमल है। यहाँ के मानव चिर युवा रहते हैं। यहाँ स्त्रियों के जुड़वा सन्ताने होती है। यह रोग एवं शोक से रहित देश है। यहाँ के निवासियों की आयु तेरह हजार पाँच सौ वर्ष होती है।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

त्रयोदश सहस्राणि शतानि दशपञ्च च।

जीवन्ति ते महावीर्या न चान्य स्त्रीनिषेविण:।।[39]

उत्तर कुरु– जरुधि पर्वत के उत्तर में उत्तर कुरु नामक देश है–

कुरुणामपि चैतेषां शृणुध्वं विस्तरेण तु।

जारुधे: शैलराजस्याप्युत्तरणे उत्तरस्य हि।। [40]

इस उत्तर कुरु की कीर्ति सर्वत्र फैली हुई है। यह देश अनेक गुफाओं निर्झर, कुञ्जों, वनों, विचित्र धातुओं से विभूषित हैं। यहाँ अनेक धातु है। यह पुष्प फलमूल से युक्त सिद्ध चरणों से सेवित देश है। यहाँ दो श्रेष्ठ पर्वत है। इन पर्वतों के सैकड़ो शिखर हैं। इसकी चोटियॉ चन्द्रकान्त एवं सूर्यकान्त मणि से युक्त है। इनके बीच से भद्रीसीमा महानदी बहती है। और दूसरी सैकड़ो जल पूर्ण नदियॉ इनसे निकलती है। जल, दूध, दही, मदिरा से पूर्ण सैकड़ो तालाब है। यहाँ स्वादिष्ट अन्नों की पर्वताकार ढेरियॉ लगी रहती है। यहाँ भॉति–भॉति के फलदार पेड़ है। जिन फलों की गन्ध सैकड़ो मील से प्रतीत हो जाती है। यहाँ गन्ध वर्ण रसों से युक्त तमाल, अगरु और चन्दन के वन हैं। यहाँ भ्रमर एवं विविध प्रकार के आकाशगामी पक्षी बिहार करते हे। इस देश में विभिन्न कमल शतदल पद्म उत्पल वन है। यहाँ सभी ऋतुऐं सुखदायिनी है। यहाँ भोग विलास एवं आमोद प्रमोद की सामिग्रियॉ बहुतायत से प्राप्त होती हैं। यहाँ स्वर्ण एवं मणियों से परिष्कृत उद्यान, शिलागृह वृक्षगृह एवं कदलीगृह हैं। यहाँ के वृक्षों से मूल्यवान् वस्तु प्राप्त होते है। मृदंग वेणु, पणव, वीणा आदि बाजे यहाँ बजते रहते हैं। यहाँ सैकड़ो कल्पवृक्ष है। उद्यान वनों से परिपूर्ण यह देश बड़ा सुखकारी है। यहाँ चन्द्रकान्त शिखर के समीपवर्ती जन श्यामवर्णी एवं सूर्यकान्त पर्वत के समीपवर्ती मनुष्य श्याम अवदात वर्णा होते है। यहाँ मानव पूर्णकाम होते है आभूषण चित्रकारी संगीत आदि के प्रेमी होते है। यहाँ प्रजा को न प्रसब होता है न वंश क्षय होता है। क्योंकि यहाँ के वृक्ष ही संसति कर है। यहाँ के जन अपने भोग भोगकर बुलबुले के समान नष्ट जो जाते है। यहाँ के जीव धर्मपरायण एवं धर्म प्राण होते है–

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

सामान्य विभवा: सर्वे ममत्वपरिवर्जिता:

न तत्र विद्यते धर्मो नाधर्म: संप्रवर्त्तते।।[41]

चन्द्र द्वीप– उत्तर कुरु के दक्षिण पार्श्व में चन्द्र द्वीप है। जिसका विस्तार पाँच हजार योजन विस्तार है यहाँ चन्द्र मण्डल स्थित है और समुद्र में तीव्र तरंग मालाएं लहराती है–

पञ्चयोजनसाहस्रमतिक्रम्य सुरालयम्

चन्द्रद्वीपमिति ख्यातं चन्द्र मण्डल संस्थितम्।। [42]

यह द्वीप विभिन्न प्रकार के शब्दों से शब्दायमान रहता है। इसका हजारों योजन का घेरा है। जिसकी लम्बाई ऊँचाई सौ–सौ योजन है। यह सिद्धों का निवास स्थल है। यहाँ चन्द्र सदृश श्वेत वैदूर्य और कुमुद प्राप्त होते है। यहाँ विचित्र उद्यान और निर्झर हैं। यहाँ का अधिपति चन्द्र है, और भूधर भी चन्द्र है। यह चन्द्र द्वीप स्वर्ग एवं भू लोक पर प्रसिद्ध है।

भद्राकर द्वीप– चन्द्र द्वीप के पश्चिम इस नाम का द्वीप है। यहाँ समुद्र से चार हजार योजन दूर है। इस का विस्तार दस हजार योजन है–

दशयोजनसाहस्रं सगन्तात्परिमण्डलम्

द्वीपं भद्राकरं नाम नानापुष्पोपशोभितम्।।[43]

इस द्वीप पर विविध पुष्प एवं धन धान्य से सम्पन्न अनेक राजाओं से पालित है यहाँ विशाल पर्वत हैं। वायु देव की पूजा की जाती है।

भारत वर्ष– कुरु वर्ष की स्वाभाविक स्थित को कह दिया। भारत वर्ष की जनां हिमवत से दक्षिण में, पूर्व एवं पश्चिम पर्वत से घिरे भारत वर्ष में जनपदों को प्रजा को सुनो। इसके उत्तर में हितवत एवं दक्षिण में समुद्र है।

उत्तरं यत्समुद्रस्य हिमवद्दक्षिणं च यत्।

वर्ष यद्भारतं नाम यत्रेयं भारती प्रजा

भरणाच्च प्रजानां वै मनुर्भरत उच्यते।।

निरुक्तवचनाच्चैव वर्षतद्भारतं स्मृतम्।।[44]

यह समुद्र से घिरा होने के कारण अगम्य है। इन्द्र द्वीप, उसेरू, तत्मवर्णी गभस्तिमान्, नाग द्वीप, सौम्य, गन्धर्व और वारुण इनके अतिरिक्त नौवां भारत वर्ष सागर से घिरा है। यह कुमारी अन्तरीप से लेकर हिमालय

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

तक तिर्यक् भाव से उत्तर और नौ हजार योजन विस्तीर्ण है। इसके अन्त में म्लेच्छ, पूर्व में किरात पश्चिम में यवन रहते है। मध्य में ब्राह्मण, क्षत्रिय वैश्य एवं शूद्र है। यह द्वीप टेढ़ा एवं लम्बा है। इसे जो जीत लेता है। वह सम्राट कहलाता है। यहाँ सात श्रेष्ठ पर्वत है, महेन्द्र, मलय, सत्य, शुक्तिमान, ऋक्ष विन्ध्य और पारियात्र। इनके अतिरिक्त क्षुद्र पर्वतों की श्रंखला है–मन्दर वैहार, दर्दुर, कोलाहल, मैनाक, वैद्युत, पातन्धन, तान्तुप्रस्थ, कृष्णगिरि गोधन गिरि, उज्जयन्त, रैवतक, श्रीपर्वत, अरू एवं कूटशैल हैं।

इनके पाद क्षेत्र में आर्य एवं म्लेच्छ निवास करते हैं। यहाँ गंगा सिन्धु सरस्वती, कौशिकी, तृतीया, गड़की, निश्चीय, इक्षु, कुहू, गोमती, वाहुक्ष लौहित आदि नदियॉ है। ये सभी नदियॉ हिमालय से निकलती हैं।

चर्मण्ती, वेत्रवती, शिप्रा, अवन्ती, सतीरा, महती, चन्दना, सिन्धु, वृजघ्नी वेदमूर्ति एवं वेदवती नदियॉ पारिमात्र पर्वत से निकलती है।

सोन, महानद, नर्मदा, महाद्रुमा, मन्दाकिनी, दशार्णा, चित्रकूटा, तमसा पिप्पला करतोमा, पिशाचिका, नीलोत्पला, विपाशन, जम्बुला, बालुवाहिनी सितेरजा, शुक्तिमती, निदिवा आदि नदियॉ ऋक्षप्राद पर्वत से उद्भूत हैं।

तापी, पयोष्णी, निर्बन्ध्या, मद्रा, निषधा, वेन्वा, वैतरणी, शितिवाहु, कुमुद्वती तोमर, महागौरी दुर्गा, अन्तशिला, विन्ध्यपाद से उत्पन्न नदियॉ हैं।

गोदावरी, मीमृरक्षी, कृष्णा, वैणश्रक,वञ्जुला, तुङ्गभद्र, सुप्रयोगा, कावेरी नदियॉ सह्याद्रि से निकलती हैं। कृतमाला, ताम्रवर्णी पुष्पजा उत्पलावती मलयपर्वत से उत्पन्न नदियॉ है। इनके गंगा सरस्वती सभी पुण्यों का प्रदान करती है। यह शूरसेन भद्राकार, बोधाः शतपयेश्चरै, वत्स, किसष्ण, कुलय, कुन्तल काशी कोशल, अर्थपाद तिलङ्ग मगध मध्य देश आदि जनपद है।

वाह्लीक, वाटधाना, आभीर, कालतोयकाःअपरीता अदि शूद्र हैं। रमरा रद्धकटका केकथ दशमानिक क्षत्रियों वैश्यों के वंश हैं।

इस प्रकार पुराणों में अतिविस्तार से भू विस्तार उसका राजनैतिक वर्गीकरण, स्थानों का वानस्पतिक, समुच्चयात्मक वर्णन प्राप्त होता है।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

सन्दर्भ सूची:–

1.	श्रीमद् देवी भागवत पुराण		
2.	ब्रह्न्नारदीय पुराण पूर्वभाग		3/43–44
3.	ब्रह्न्नारदीय पुराण	पूर्व भाग	3/45–46
4.	मत्स्य पुराण	पूर्व भाग	113/4
5.	"	"	113/14–18
6.	"	"	113/19
7.	मत्स्य पुराण	पूर्व भाग	113/28–31
8.	मत्स्य महापुराण	पूर्व भाग	114/5–6
9.	मत्स्य महापुराण	पूर्व भाग	114/10
10.	"	"	114/21–23
11.	मत्स्य पुराण	पूर्व भाग	114/24
12.	"	"	114/24–26
13.	वायु पुाराण	"	34/6
14.	वायु पुराण	"	34/22
15.	वायु पुराण	पूर्व भाग	34/28
16.	"	"	34/28–30
17.	"	"	34/35
18.	वायु पुराण	पूर्व भाग	34/86
19.	वायु पुराण	पूर्व भाग	35/25
20.	"	"	35/32
21.	"		38/60–70
22.	वायु पुराण		39/2–3
23.	"		39/11
24.	"		41/11
25.	"		41/10
26.	"		41/27
27.	"		41/36
28.	"		41/42
29.	"		41/51
30.	"		41/80
31.	"		41/85
32.	"		42/26
33.	"		42/39
34.	"		42/57
35.	"		43/28
36.	"		44/2
37.	"		44/24
38.	"		45/6
39.	"		45/20
40.	"		45/21
41.	"		45/48
42.	"		45/52
43.	"		45/62
44.	"		45/75–76

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

पुराणों में खगोल विज्ञान

ज्ञान की असीम अनन्तता से प्रकट, विश्व के सर्वप्रथम ग्रन्थों के रूप में समादृत, वैदिक वाङ्मय जहाँ अपनी विपुलता के लिये प्रसिद्ध है। वैसे ही पुराण वाङ्मय भी अत्यन्त प्राचीन, विपुल एवं प्रामाणिक है। पुराण विद्या के अन्तर्गत ज्ञान विज्ञान की समस्त विधाओं का समावेश हो जाता है। यह पुराण विद्या वैदिक एवं लौकिक वाङ्मय के मध्य सेतु रूप में विद्यमान है। पुराण शब्द की व्युत्पत्ति पुरा अव्यय से ट्यु प्रत्यय करने पर हुई। यहाँ ट्यु प्रत्यय में विद्यमान यु को ''युवौरनाकौ'' सूत्र से अन आदेश और न को, 'ण' आदेश होने पर हुई, अथवा 'पुरा नव' भवतीति पुराणम् इस निर्वचन के आधार पर पुराण की उत्पत्ति मानी गयी है। पुराण विद्या में नाराशंसी तथा आख्यान के माध्यम से विभिन्न विषयों का चित्रण किया गया है। अतः इसमें इतिहास, भूगोल, जीवविज्ञान, पादप विज्ञान, औषधि विज्ञान, भौतिक विज्ञान एवं खगोल विज्ञान का वर्णन प्राप्त होता है। यद्यपि पुराण साहित्य अत्यन्त विशाल है, जिसमें अष्टादश पुराण, अष्टादश उपपुराण एवं अट्ठारह औपपुराणों का समावेश है। किन्तु मैंने अपनी अत्यन्त अल्पबुद्धि से अष्टादश महापुराणों में से खगोल विज्ञान की विषय वस्तु का संकलन नक्षत्र मान गति आदि के आधार पर किया है।

खगोल विज्ञान, विज्ञान की वह शाखा है, जिसमें आकाश में विद्यमान नक्षत्रों, पिण्डों की गति, द्रव्यमान, विस्तार एवं पृथ्वी से उस नक्षत्र की दूरी आदि विषयों पर चिन्तन किया जाता है। खगोल विज्ञान शब्द में 'ख' अर्थात् आकाश 'गोल' अर्थात् विस्तार का वाचक है। अतः खगोल विज्ञान आकाश रूपी ब्रह्माण्ड में विद्यमान तत्वों (पिण्ड, ग्रह, नक्षत्र, क्षुद्र ग्रह, ब्लैक होल) आदि का अध्ययन करे, ज्ञान की उस विशेष शाखा का नाम खगोल विज्ञान है। इसमें नक्षत्र की दूरी मापने के लिए 'प्रकाश वर्ष' का प्रयोग किया जाता है। (ज्योति पुंज)

ब्रह्माण्ड– जन, तप, सत्य, अकृतक, कृतक और मह लोक, पाताल लोक आदि जिसमें सभी लोक भुवन आदि समाहित हैं। उसे हम ब्रह्माण्ड के नाम से पुकराते हैं–

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

जनस्तपस्तथा सत्यमिति चाकृतकं त्रयम्।
कृतकाकृतको मध्येमहर्लोक इति स्मृतम्।।
शून्यो भवति कल्पान्ते योऽन्तं न च विनश्यति।
एते सप्तमहलोका मया वः कथिता द्विजाः
पातालानि च सप्तैव ब्रह्माण्डैष विस्तरा।। [1]

अतः ब्रह्माण्ड पुराण के अनुसार समस्त लोकों का आधार ब्रह्माण्ड ही है। जैसे कैंथे का बीज सभी ओर से आच्छन्न रहता है। वैसे ही ब्रह्माण्ड भी अण्डकटाह (ब्लैक होल) से, क्योंकि इनकी चुम्बकीय शक्ति के कारण वहाँ से प्रकाश तक नहीं निकल सकता। ये सभी ओर से आवृत्त रहता है। यह अण्डकटाह, जल से आवृत रहता है, उससे बाहर अग्नि, अग्नि से वायु, वायु से आकाश, आकाश से महत्तत्त्व, महत्तत्त्व से परे प्रकृति से आवेष्टित रहता है। इस अण्डकटाह के यह सप्तावरण पुराणों में वर्णित हैं। [2]

सूर्य– इस ब्रह्माण्ड के सौर मण्डल का यह सबसे महत्त्वपूर्ण नक्षत्र है। यही नक्षत्र, ब्रह्माण्ड रूपी मृत्प्राय अण्डे को प्रकाशित एवं प्राणवान् करता है। अतः इसे मार्तण्ड कहते है–

मृतेऽण्डे एवं एतस्मिन् यद्भूत्ततो मार्त्तण्ड इति व्यपदेशः
हिरण्यगर्भ इति यद्धिरण्याण्ड समुद्भवः।। [3]

खगोल विज्ञान में सबसे तीव्र प्रकाशमान निकटतम नक्षत्र के रूप में सूर्य की गणना होती है। यह तारा है जो स्वयं प्रकाशित होते हुए अपने आश्रित ग्रह एवं उपग्रहों को प्रकाशवान् कर देता है।

अत उर्ध्व प्रवक्ष्यामि सूर्याचन्द्रमसीर्गतिम्
सूर्याचन्द्रमसावेतौ भ्राजन्तौ यावदेवतु।।
सप्तद्वीप समुद्राणां द्वीपनां भाति विस्तरः
विस्तारार्ध पृथिव्यास्तु भवेदन्यत्र बाह्यतः।।
पर्यासपरिमाणं च चन्द्रादित्यौ प्रकाशतः।
पर्यास परिमाण्यस्तु बुधौस्तुल्यं दिवं स्मृतम्।। [4]

सूर्य चन्द्र ही सप्त द्वीप, सप्त समुद्रों के प्रकाशक है। इनका प्रकाश ब्रह्माण्ड की चरम सीमा तक प्रकाशित करता है। मत्स्य पुराण के

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

अनुसार अनन्त आकाश ही इसकी यह चरम सीमा है। सूर्य अपनी शीघ्रगामी गति के कारण तीनों लोकों मे गमन करता है, एवं शीघ्र ही सभी को प्रकाशित कर देता है। इसी कारण इसे 'रवि' भी कहते हैं–

अचिरात्तु प्रकाशेन अवनान्तु रविः स्मृतः।। [5]

सूर्य के मण्डल की त्रिज्या का विस्तार विष्कम्भ के परिमाण के तुल्य है। 'विष्कम्भ' की परिमाण नव सहस्र योजन है अतः सूर्य के व्यास से इसकी त्रिज्या नौ हजार योजन परिमाण वाली है। परिधि सदैव त्रिज्या से द्विगुणित हुआ करती है। अतः सूर्य की परिधि इस त्रिज्या से दुगुनी है–

मण्डलं भास्करस्याथ योजनैस्तन्निबोधतः।।

नवयोजन साहस्रो विस्तारो मण्डलस्य तु।।

विस्तारात्त्रिगुणश्चापि परिमाणाहोऽत्र मण्डले।। [6]

ब्रह्माण्ड सम्पुट में सूर्य प्रकाश ही सर्वत्र भ्रमणकारी तत्त्व है। पुराणविदों के अनुसार सूर्य भ्रमण करता है–

ब्रह्माण्डसम्पुट परिभ्रमणं समन्तादभ्यन्ते दिनकरस्य करप्रसारः।। [7]

नक्षत्र अपनी मन्द, तीव्र एवं सम गति से द्वादश राशियों में परिभ्रमण करते हैं। श्रीमद्‌भागवत पुराण के अनुसार सूर्य जब मेष एवं तुला राशि पर होते थे तब दिन रात सम हुआ करते थें। [8] किन्तु वर्तमान काल में जब सूर्य मीन एवं कन्या राशि पर होते हैं उस समय दिन रात समान हुआ करते हैं। इसका मुख्य कारण हमारी पृथ्वी की परिभ्रमण गति है। वैज्ञानिकों के अनुसार पृथ्वी पर आने वाले सौरीय चुम्बकीय अन्धड़ इसकी गति को प्रभावित करते हैं।

इस पृथ्वी के समान गति ही स्वः मण्डल है। मेरू पर्वत के पूर्व दिशा में मानसोत्तर पर्वत के शिखर पर इन्द्र की वस्त्वेकसारा नामक नगरी है–

मेरोः प्राच्यां दिशायां तु मानसोत्तर मूर्धनि।

वस्त्वेकसारा माहेन्द्री पुण्याहेमपरिष्कृता।। [9]

वहीं श्रीमद्‌भागवत में इन्द्र की पूर्व दिशा में स्थित देवधानी नाम की नगरी है। [10] मेरु पर्वत के दक्षिण दिशा में यमराज की संयमनी नगरी है। इसकी मत्स्य पुराण में संयमन संज्ञा प्राप्त होती है। मेरु के पश्चिम दिशा में वरूण की निम्लोचना नाम की नगरी का उल्लेख श्रीमद्‌भागवत महापुराण में

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

मिलता है।[11] वहीं मत्स्य पुराण में इस नगरी की संज्ञा सुषा है–

प्रतीच्यां तु पुनर्मेरोर्मानसस्य तु मूर्धनि।

सुषा नाम पुरी रम्या वरुणस्यापि धीमतः।।[12]

मेरु पर्वत के उत्तर दिशा में चन्द्र की विभावरी नाम की नगरी का वर्णन श्रीमद्भागवत पुराण एवं मत्स्य पुराण में प्राप्त होता है। दोनों ही पुराणों में चन्द्रमा की सौम्य संज्ञा है–

दिश्युत्तरस्यां मेरोस्तु मानसस्यैव मूर्धनि।

तुल्या महेन्द्रपुर्याऽपि सोमस्यापि विभावरी।।[13]

सूर्य प्रतिदिन इन चारों नगरियों का परिक्रमण करता है जिससे दिन एवं रात्रि हुआ करती हैं। दक्षिणायन में सूर्य धनुष से निकले शर के समान शीघ्र गति से चलता है। यह अपने ज्योतिश्चक्र को लेकर सदा गतिशील रहता है। सूर्य जब वस्त्वेकसारा नगरी के मध्य में होता है, उस समय वह संयमन पुर में उदित होता दिखाई देता है–

मध्यगश्चामरवत्यां यदा भवति भास्करः।

वैवस्वते संयमने उद्यन्सूर्यः प्रदृश्यते।।[14]

जब सूर्य संयमनपुर में उदित होते है, तो सुषा नगरी में अर्ध रात्रि एवं विभावरी में सांयकाल होता है। जब सूर्य सुषा नगरी में उदित होता है। तब विभावरी में अर्ध रात्रि अमरावती में सांयकाल एवं संयमन पुर में मध्याह्न बेला और वस्त्वेकसारा में रात्रि होती है।[15]
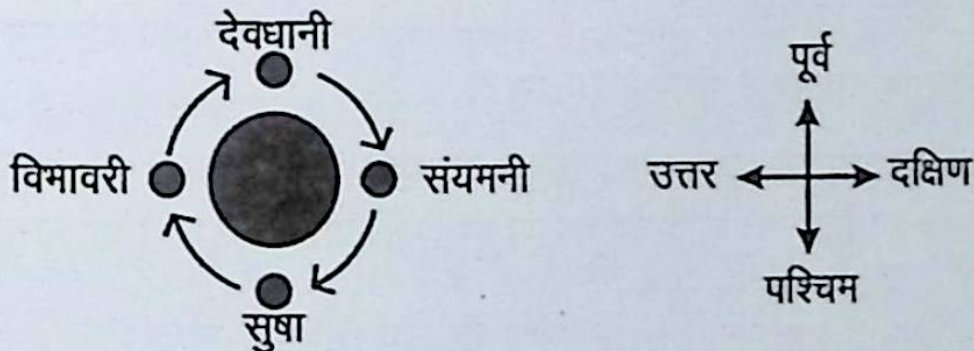
श्रीमद्भागवत पुराण में सूर्य को इन्द्र की देवधानी नगरी से यमराज की संयमनी नगरी तक पहुँचने में पन्द्रह घड़ी का समय अर्थात् छः घण्टे का समय लगता है। इसमें सूर्य लगभग सवा दो करोड़ बारह लाख पच्चीस हजार योजन की दूरी तय करता है–

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

यदा चैन्द्रया पुर्याः प्रचलते पञ्चदशघटिकाभिर्याभ्यां सपाद

कोटिद्वयं योजनानां सार्ध द्वादशलक्षाणि साधिकानि चोपयति।। [16]

इस प्रकार सूर्य एक देव नगरी से दूसरी तक पहुँचने में पन्द्रह घड़ी का समय लेता है। इस गति के आधार पर सूर्य का रथ एक मुहूर्त में चौंतीस लाख योजन की यात्रा कर लेता है, और अलात चक्र के समान शीघ्र गति से भ्रमण करता है। इस प्रकार सूर्य चारों पार्श्वो पर परिक्रमा करता हुआ, बार–बार उदय एवं अस्त हुआ करता है। दिन के प्रथम एवं अन्तिम भाग में वह दो–दो देव स्थानों पर विद्यमान रहता है। इस प्रकार एक पुरी में प्रातः उदित हो बढ़ने वाली किरणों से और भी कान्ति वाली किरणों से और भी कान्ति युक्त हो मध्याह्न समय तक तपता है। मध्याह्न के पश्चात् इसकी किरणें तेज हीन होने लगती है। और धीरे–धीरे यह अस्त हो जाता है–

उदितो वर्धमानाभिर्मध्याह्ने तपते रविः।

अतः परं ह्रसन्तीभिर्गोभिरस्तं स गच्छति।

उदयास्तमयाभ्यां च स्मृते पूर्वापरे तु वै।। [17]

इस प्रकार सूर्य के उदयास्त से पूर्व और पश्चिम दिशाओं में सृष्टि का स्मरण किया जाता है। सूर्य जैसा पूर्व में तपता है। वैसा ही पार्श्व एवं पृष्ठ भाग में भी तपता है। जिस स्थान पर वह उदय दिखाई देता है, उसे उदयाचल एवं जहाँ पर वह लय होता है, उसे अस्ताचल कहते हैं। सूर्य से पृथ्वी अत्यन्त दूर होने के कारण उसकी किरणें अन्य पदार्थो पर पड़कर यहाँ आने से रूक जाती हैं। इसी कारण रात्रि होती है–

विदूरभावाऽर्कस्य भूमेरेषा गतस्य च

श्रयन्ते रश्मयो यस्मान्तेन रात्रौ न दृश्यते।। [18]

वैज्ञानिक लोग दिन एवं रात्रि का कारण पृथ्वी की परिक्रमण गति एवं उसकी गोलाकार आकृति को मानते हैं।

मत्स्यपुराण के अनुसार सूर्य एक मुहूर्त में इकतीस लाख पचास हजार योजन की दूरी तय करता है। दक्षिणायन में सूर्य पुष्कर द्वीप के मध्य भाग में भ्रमण करता है। सूर्य (चौबीस घण्टे) साठ घड़ी में नौ करोड़ पैंतालिस लाख योजन की दूरी तय कर लेता है। दक्षिणायन से लौट कर सूर्य

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

विषुव (विषवत् रेखा) पर लम्बवत् चमकता है। वर्तमान वैज्ञानिकों के अनुसार सूर्य विषुवत् रेख्रा पर सदैव लम्बवत् रहता है।

मण्डलं विषुवच्चापि योजनैस्तन्निबोधत

तिस्त्रः कोट्यस्तु सम्पूर्णा विषुवस्यापि मण्डलम्।। [19]

यह विषुव् क्षेत्र वह है, जहाँ दिन रात सदा ही समान रहते हैं। उत्तरायण (कर्क रेखा 23½°) एवं दक्षिणायन (मकर रेखा 23½°) से यह विषुव् रेखा पच्चीस हजार योजन से कुछ अधिक अन्तर पर है। इन रेखाओं के बाहर व भीतर सूर्य गमन करता है। अतः उत्तरायण व दक्षिणायन हुआ करता है। सूर्य उत्तरायण में कर्क रेखा 23½° उत्तर के भीतरी मण्डलों को पार करता है। और दक्षिणायन में यह यहाँ से बाहर गमन कर मकर रेखा 23½° दक्षिण में गमन करता है। बहि र्भाग (दक्षिणायण) से सूर्य उत्तर में अट्ठारह हजार योजन तक तिर्यक् गमन करता है। सूर्य मेरु मण्डल में कुम्हार के नाभि चक्र के समान घूमता है। उत्तरायण में सूर्य मन्द गति से गमन करता है।

सूर्य अपनी इसी गति के कारण वर्ष, मास, ऋतु का निर्माता बन जाता है। प्रत्येक मास में भिन्न-भिन्न नाम धारण करने वाला सूर्य इस भू मण्डल के नौ करोड़ इक्यावन लाख के घेरे को प्रतिक्षण पार कर जाता है-

यस्यैकचक्रं द्वादशार षण्नेमि संवत्सरात्मक समामनन्ति तस्याक्षो

मेरोर्मूर्धनि कृतो मानसोत्तर कृतेतर भागो यत्र प्रोतं रवि रथ तैल

चक्रवद् भ्रमन्मानसोत्तरगिरौ उपरि भ्रमति चक्रं प्रोतं रविरथ चक्रम्।। [20]

सूर्य सब प्रकार से वृष्टि, धूप, तुषार, दिन-रात, दोनों सन्ध्या को करने वाला, शुभाशुभ कर्मो का प्रवर्तक है। सूर्य, पृथ्वी के ध्रुवों से जल ग्रहण करता है। जीव भस्म होते समय धूम रूप में परिणित होते हैं। जल धूम के संयोग से मेघ उत्पन्न होते है। [21] सूर्य वायु के संयोग से समुद्र से भी जल ग्रहण करता है। तदनन्तर ग्रीष्मादि ऋतु के प्रभाव से उसे निर्मल कर पुनः पृथ्वी पर जल वर्षण कर देता है-

ध्रुवेणाधिष्ठितो वायुर्वृष्टि संहरेत् पुनः।। [22]

निश्चय ही वायु वर्षण कार्य को करती है।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

दिन सूर्य के चक्र की नाभि है, अरे संवत्सर हैं, छः ऋतुएं नेमि है, रात्रि उनके रथ का वरुथ (लोहे का घेरा) एवं धाम ऊर्ध्वध्वजा रूप माने गए है।

अहर्नाभिस्तु सूर्यस्य एकचक्रस्य वै स्मृताः
अराः संवत्सरास्तस्य नेम्यः षड्ऋतवः स्मृता
रात्रिर्वरूथो धर्मश्च ध्वज ऊर्ध्वं व्यवस्थितः
अक्ष कोट्योयुगान्यस्य आतवाहाः कलाः स्मृताः।। [23]

उत्तरायण काल में सूर्य का भ्रमण ध्रुव मण्डल में आविष्ट हो जाता है एवं दक्षिणायन में यह (उत्तरी) ध्रुव मण्डल से बाहर हो जाता है। अर्थात् पुराण काल में पृथ्वी के उत्तरी व दक्षिणी ध्रुव का ज्ञान था। ध्रुव जब रश्मियों को आकृष्ट करता है, तो सूर्य अस्सी सौ मण्डलों के काष्ठाओं पर विचरण करता है।

ध्रुवेण प्रगृहीतो तौ रथौ यौऽवनतो रदिम्
आकृष्येते यदा ते तु ध्रुवेण समधिष्ठिते
तदा सोऽभ्यन्तरे सूर्यो भ्रमेत् मण्डलानि तु।। [24]

सूर्य अपने परिक्रमण गति के कारण भिन्न–भिन्न आभा से युक्त होता है। अतः सूर्य के रथ पर प्रत्येक माह विभिन्न देव समूह सहायक होते हैं। चैत्र में सूर्य की संज्ञा धाता होती है। पुलत्स्य ऋषि उस काल के प्रजापति है। वासुकी नाग, तुम्बरु नामक गन्धर्व, कृतस्थला नामक अप्सरा, रथकृत सारथी हेति नामक राक्षस सहायक है।

वैशाख मास से सूर्य का नाम अर्यमा, पुलहा ऋषि प्रजापति, संकीर्ण नाग, नारद गन्धर्व, पुञ्जस्थली अप्सरा, रथौजा सारथी, प्रहेति राक्षस सहायक हैं। ज्येष्ठ मास में सूर्य को मित्र, अत्रि ऋषि, तक्षक नाग, मेनका अप्सरा, हाहा गन्धर्व, रथन्तर सारथी एवं पुरुषाद राक्षस सूर्य मण्डल में निवास करते हैं। वहीं आषाढ़ में सूर्य को वरुण, ऋषि उस समय वशिष्ठ, रम्भक नाग, हू हू गन्धर्व और वध राक्षस है। श्रावण मास में सूर्य इन्द्र है ऋषि अंगिरा, एलापत्र नाग, विश्वावसु गन्धर्व, प्राप्त सारथी, प्रम्लोचा अप्सरा एवं हेति राक्षस के संग कार्य करते है। वहीं भाद्रपद मास में विवस्वान् देव

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

ऋषि भृगु, शंखपाल नाग, सुषेण गन्धर्व, रवि सारथी, निम्लोचन्ती अप्सरा एवं व्याघ्र राक्षस के संग सूर्य भ्रमण करते है। आश्विन मास में सूर्य पर्जन्य देव, भरद्वाज ऋषि, चित्रसेन गन्धर्व, विश्वाची अप्सरा, ऐरावत नाग, सेनजित् सारथी, नायक चार नामक राक्षस सूर्य के सहयोगी बनते है। कार्तिक मास में सूर्य को पूषा देव, ऋषि गौतम, सुरचि गन्धर्व, घृताची अप्सरा, धनञ्जय नाग, सुषेण सूर्य सारथी, वात नामक राक्षस सूर्यमण्डल के साथ विद्यमान रहते है। मार्गशीर्ष मास में अंश सूर्य देव है। कश्यप ऋषि है महापद्म नाग है। चित्रसेन गन्धर्व, पूर्वचिति अप्सरा एवं सूर्य सारथी तक्षा है। नायक विद्युत राक्षस ये सब सूर्य के सहायक हैं। पौष मास में सूर्य भाग देव है। क्रतु ऋषि कार्केटिक नाग, पूर्णायु गन्धर्व, उर्वशी नामक अप्सरा, अरिष्टनेमि नामक सारथी उग्रसूर्य नामक राक्षस सूर्य सहयोगी रहते है। माघ मास में त्वष्टा देव सूर्य, जमदग्नि ऋषि, काद्रवये नामक सर्प, सूर्यवर्चा नामक गन्धर्व, तिलोत्तमा अप्सरा ऋतजित् सारथी, ब्रह्मवेता राक्षस मण्डल को घेरे रहते है। वहीं फाल्गुन मास में विष्णु देव सूर्य की संज्ञा, विश्वामित्र ऋषि, कम्बलाश्वतर नाग, धृतराष्ट्र नामक गन्धर्व, रम्भा अप्सरा सत्यजित् सारथी, यज्ञोपेत राक्षस सूर्य के सहायक होते है।[25]

इन देव, ऋषि, गन्धर्व, सर्प, सारथी एवं राक्षस आदि के पराक्रम से तपोबल, धर्म, तत्त्व एवं शारीरिक बल से सूर्य और तेजस्वी हो जाता है। उनका तेज रूपी इन्धन सूर्य को और उग्र रूप से तपता है। वहीं पृथ्वी पर प्रतिमास सूर्य के प्रकाश के कारण उत्पन्न परिवर्तनों को भी रेखांकित करता है।

सूर्य ग्रीष्म, वर्षा एवं शिशिर ऋतु में धाम वृष्टि एवं हिम से क्रमशः देव मनुष्य एवं पितरों को सन्तुष्ट करता हुआ प्रतिक्षण भ्रमण करता है–

ग्रीष्मे हिमे च वर्षासु मुञ्चमाना यथाक्रमम्
धर्म हिमं च वर्ष च यथाक्रममहर्निशम्
गच्छत्यासावनुदिनं परिवृत्यरश्मीन्देवांपितृश्च मनुजांश्च सुतर्पयन्तै
शुक्ले च कृष्णे तदहः क्रमेण कालक्षये चैव सुरा पिबन्ति।।[26]

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

यह सूर्य अपनी किरणों से देव, सौम्य को, पितरगणों को अमृत रस एवं समस्त संसार को वृष्टि कर जल से तृप्त करते हैं। वृष्टि जन्य अन्न से मनुष्य गण जीवन धारण करते है। इस प्रकार सूर्य अपने एक चक्रमयी रथ से सम्पूर्ण मण्डल की निर्धारित परिधि की परिक्रमा बाहर एवं भीतर से करते हैं। इस प्रकार दिनमणि सूर्य वेगशाली अश्वों से नक्षत्र वीथी में भ्रमण करते है–

पतङ्गैः पतगैरश्वैर्भ्राम्यमाणो दिवस्पतिः

वीथ्याश्रयाणि चरति नक्षत्राणि तथा शशी।। [27]

चन्द्र– वर्तमान खगोलविदों के अनुसार चन्द्र पृथ्वी का उपग्रह है। यह चन्द्र पृथ्वी की परिक्रमा करता है। चन्द्र सूर्य की किरणों से प्रकाशवान् है। यह बात मत्स्यपुराण में भी कही गयी है–

सर्वऽमृतं तत्पितरं पिबन्ति देवाश्च सौम्याश्च तथैव काव्यः।। [28]

सूर्य से पितर, देवगण, चन्द्र, शुक्र आदि अमृतपान (प्रकाशवान्) करते है। चन्द्र की ह्रास व वृद्धि सूर्य के तुल्य है–

वीथ्याश्रयाणि चरति नक्षत्राणि तथा शशी।

ह्रासवृद्धि तथैवास्य रश्मयः सूर्यवत्स्मृताः।। [29]

चन्द्र का रथ चित्रक्रमी है। चन्द्र, उसका रथ, सारथी अश्व सभी जल से उत्पन्न है। अश्व एक बार में सात महाप्रलय तक भार वहन करने में सक्षम है। इस प्रकार ब्रह्मा की आयु में चतुचन्द्र रथ होते है। अज त्रिपथ, वृष, वाजी, नर, हय, अंशुमान, सप्तधातु, हंस एवं पितरों से घिरा हुआ घूमा करता है। शुक्ल पक्ष के आरम्भ में सूर्य के परभाग में अवस्थित होने के कारण इसकी एक एक कला वृद्धि को प्राप्त हो यह पूर्ण होता है–

देवैः परिवृतः सोमः पितृभिः सह गच्छति
सोमस्य शुक्लपक्षादौ भास्करे परतः स्थिते
आपूर्यते परोभागः सोमस्य तु अहः क्रमात्।। [30]

सूर्य की सुषुम्ना नामक किरणों से तृप्त चन्द्र की शुक्ल पक्ष में कलाएं बढ़ती है और कृष्ण पक्ष में क्रमशः घटती है, तथा पुनः शुक्ल पक्ष आने पर बढ़ती है।

सुषुम्नाप्यायमानस्य शुक्ले वर्धन्ति वै कलाः
तस्माद्ध्रसन्ति वै कृष्णे शुक्ले ह्याप्याययन्ति च।। [31]

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

पूर्णिमा को चन्द्र सम्पूर्ण श्वेतमण्डलमय रहता है। जल का सारभूत चन्द्र के सौम्य अमृत को, कृष्ण पक्ष में द्वितीया से चतुर्दशी तक देवगण पान करते है। पूर्णिमा तक सौर तेज से प्राप्त चन्द्र अमृत से परिपूर्ण हो जाता है। उस रात तक देव, पितर, सोम उसकी उपासना करते हैं। सूर्य सम्मुख होने पर देवों द्वारा पान की जाती कलाएं क्षीण होने लगती हैं–

सोमस्य कृष्णपक्षादौ भास्कराभिमुखास्य वै
प्रक्षीयते पर ह्यात्मा पीयमानकलाक्रमात्।। [32]

इस प्रकार छत्तीस हजार तीन सौ तैंतीस देव चन्द्र का अमृत पान करते है। देवों द्वारा पान की गयी चन्द्र कलाएं कृष्ण पक्ष में ह्रास एवं शुक्ल पक्ष देव पक्ष में वृद्धि को प्राप्त होती हैं। एक एक दिन के क्रम से एक पक्ष तक देव गण चन्द्र अमृत पी कर अमावस्या को अन्यत्र चले जाते हैं। उस समय पितर गण चन्द्र के निकट रहते हैं–

पीत्वाऽर्धमासं गच्छति अमावास्यां सुराश्च ते
पितरश्चोपतिष्ठान्ति अमावास्यां निशाकरम्।। [32]

तदन्तर पन्द्रहवें भाग के कुछ शेष रह जाने पर दूसरे दिन तीसरे प्रहर के समय उन शेष कलाओं को वे पितर गण केवल दो कला समय तक पान करते हैं। अमावास्या को चन्द्र किरण के उस अमृत को पाकर पितरगण भी अन्यत्र चले जाते हैं। पितरगण सौम्य, बर्हिषद, अग्निष्वात्त तथा काव्य नाम से जाने जाते हैं। द्विज पितृलोक में निवास करते है। (पॉच वर्षो में संवत्सर वाले जो काव्य संज्ञक पितरगण है, वे ही द्विज नाम से जाने जाते हैं।) का जो क्षय होता है वह पन्द्रहवॉ भाग है। अमावस्या के बाद चन्द्र का रिक्त भाग पूर्ण होने लगता है।[34] इस प्रकार क्रमशः चन्द्र क्षय वृद्धि को प्राप्त होता रहता है।

चन्द्र मण्डल सूर्य एवं पृथ्वी से एक लाख योजन की दूरी पर है किन्तु वर्तमान वैज्ञानिक इसे पृथ्वी के निकट एवं सूर्य से दूर सिद्ध कर चुके है। ब्रह्माण्ड पुराण के अनुसार–

लक्षे दिवाकराच्चापि मण्डलं शशिनः स्थितम्। [35]

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

चन्द्रमा से नक्षत्रों की वूरी लगभग एक लाख योजन मानी गयी है। श्रीमद्भागवत महापुराण में चन्द्र सूर्य की किरणों से एक लाख योजन ऊपर वर्णित है। चन्द्रमा के क्षीर्ण होने पर कृष्ण पक्ष एवं वृद्धि पर शुक्ल पक्ष का निर्माण होता है। कृष्ण पक्ष में पितरगण के और शुक्ल पक्ष में देव कार्यो का विभाजक यह चन्द्र ही है। यह चन्द्र षोडश कलाओं से युक्त मनोमय, अन्नमय एवं अमृतमय एवं सर्वमय ग्रह है–

य एष षोडशकल पुरुषो भगवान्मनोमयोऽन्नमयो ऽमृतमयो देव पितर्

मनुष्यभूतपशुपक्षिसरीसृपवीरूधां प्राणाप्यायन शीतत्वात्सर्वमयो इति वर्णयन्ति।। [36]

बुध– चन्द्र पुत्र बुध का रथ तेजोमय निर्मल एवं श्वेत रंग का है। वह वायु के समान तीव्रगामी रथ पर पीत वर्णी दश अश्वों से युक्त है। श्वेत पिशांग सारंग, नील, श्याम, विलोहित, श्वेत, हरित, पृषत् और वृष्णि इसके दस अश्व है–

ताराग्रहाणां वक्ष्यामि स्वर्भानोस्तु रथं पुनः

अथ तेजोमयः शुभ्रः सोमपुत्रस्य वै रथः।। [37]

चन्द्रमा से एक लाख योजन दूरी पर समस्त नक्षत्र मण्डल है। नक्षत्र मण्डल से दो लाख योजन दूर बुध नामक ग्रह है–

द्विलक्षे चोत्तरे विप्रा बुधे नक्षत्रमण्डलात्

तावत् प्रमाणभागे तु बुधस्याप्युशना स्थितः।। [38]

शुक्र से दो लाख योजन ऊपर बुध है। यह मंगलकारी ग्रह है, किन्तु जब बुध सूर्य गति का उल्लघंन करता है, तब वह अमंगलकारी हो जाता है। एवं अनावृष्टि तथा अतिवृष्टि का कारण बन जाता है–

उशनसा बुधो व्याख्यातस्तत उपरिष्टाद् द्विलक्षयोजनतो बुधः सोमसुत उपलभ्यमानः प्रायेण शुभकृदक्षर्काद् व्यतिरिच्येत् तदातिवाता भ्रप्रायानां वृष्टयादिभयमाशंसते।। [39]

मंगल– मंगल का रथ आठ चक्र वाला सुवर्ण रचित है। यह भौम रथ अग्नि से उत्पन्न लाल रंग के आठ अश्वों व ध्वजा से युक्त है। इस सुन्दर रथ से कुमार मंगल सरल एवं वक्र गति से गमन करते है–

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

ततो भौमरथश्चापि अष्टाङ्गः काञ्चन स्मृतः
अष्टाभिर्लोहितैरश्वैः सध्वजैरग्निसम्भवैः
सर्पतेऽसौ कुमारो वै ऋतुवक्रानुवक्रणः।। [40]

मंगल शुक्र से दो लाख योजन की दूरी पर अवस्थित है–

अंगारकेऽपि शुक्रस्य तत्प्रमाणे व्यवस्थितः [41]

अभिजित्, नक्षत्र से दो लाख योजन ऊपर मंगल है। यह मंगल कभी मन्द शीघ्र और सम गति से गमन करता है। श्रीमद्भागवत में इसे– अतः ऊर्ध्वमङ्गारकोऽपि योजनलक्षद्वितय उपलभ्यमानस्त्रिभिस्त्रिभिः राशीन्द्वादशानुभुङ्क्ते यरि न वक्रेणाभि वर्तते प्रायेणाशुभग्रहोऽप्यशंसः

बृहस्पति– देव गुरु बृहस्पति श्वेतरंग के सुवर्ण निर्मित सुन्दर रथ पर गमन करते हैं। उनका रथ आठ अश्वों से युक्त है एवं अग्नि से उत्पन्न ध्वजाओं से सुशोभित है। देवगुरु एक राशि पर एक वर्ष निवास करते हैं। एवं अपनी अभीष्ट दिशा को गमन करते हैं–

अतश्चाऽऽङ्गिरसो विद्वान्देवाचार्यो बृहस्पतिः
गौराश्वेन तु रौक्मेण स्यन्दने विसर्पति।।
युक्तेनाष्टाभिरश्वैश्च ध्वजैरग्नि समुद्भवैः
अब्दं वसति यो राशी स्वदिशं तेन गच्छति।। [43]

देवगुरु बृहस्पति भौम से दो लाख योजन दूर हैं–

लक्षद्वयेन भौमस्य स्थितो देवपुरोहितः।। [44]

गुरु यदि वक्री न चले तो एक राशि पर एक वर्ष रहते हैं। यह विप्र वंश के सदैव अनुकूल रहते हैं।

तत् उपरिष्टाद् द्विलक्षयोजनान्तरगतो भगवान् बृहस्पतिरेकैकस्मिन् राशौ परिवत्सरं चरति न वक्रः स्यात्प्रायेणानुकूलो ब्राह्मणस्य।। [45]

शुक्रः– भृगुपुत्र शुक्र आठ सुन्दर अश्वों तथा अग्नि के समान ध्वजाओं से युक्त शीघ्रगामी रथ द्वारा भ्रमण करता है–

युक्तेनाष्टाभिरश्वैश्च सध्वजैरग्निसन्निभैः
रथेन क्षिप्रवेगेन भार्गवस्तेन गच्छति।। [46]

शुक्र गुरु से दो लाख योजन दूर है–

अङ्गारकोऽपि शुक्रस्य तत्प्रमाणे व्यवस्थितः।। [47]

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

अभिजित नक्षत्र से दो लाख योजन ऊपर शुक्र का स्थान है। ऐसा श्रीमद्‌भागवत महापुराण में वर्णन आया है। यह शुक्र अपनी मन्द, शीघ्र एवं सम गति से सूर्य के कभी आगे कभी पीछे गमन करता है। वर्तमान समय में इसे सांझ का तारा कहते है। यह वर्षा कराने वाला ग्रह है। प्राय: सभी के अनकूल रहता है–

तत् उपरिष्टादुशनाद्विलक्षयोजनत उपलभ्यते पुरतः पश्चात्सहैव वार्कस्य श्यमान्द्यसाम्यभिर्गतिभिरर्कवच्चरति लोकानां नित्यदानुकूल एवं प्रायेण वर्षयंश्चारेणानुमीयते स वृष्टि विष्टम्भग्रहोपशमनः।। [48]

शनि– शनि बलवान्, वायु वेग के समान वेगवान् अश्वों से युक्त काले लौह निर्मित रथ पर गमन करते है–

ततः शैनश्चरोऽप्यश्वैः सबलैर्वातरंहसैः

कार्ष्णायिसं समारूह्य स्यन्दनं यात्यसौ शनिः।। [49]

शनि गुरु से दो लाख योजन दूर है–

सौरि बृहस्पतेरूर्ध्व द्विलक्षे समवस्थितः।। [50]

यहाँ गुरु से दो लाख योजन ऊपर शनि का स्थान है। शनि एक राशि पर तीस माह अर्थात् ढाई वर्ष रहता है। यह पुराणों में अमंगलकारी ग्रह है–

तत् उपरिष्टाद्योजनलक्षद्वयात्प्रतीयमानः शनैश्चर एकैकस्मिन् राशौ त्रिंशन्मासान् विलम्बमानः सर्वानिवानुपर्यति तावद्भिरनुवत्सरैः प्रायेण हि सर्वेषामशान्तिकरः।। [51]

राहू– यह काले रंग वाला वायु के समान वेगशाली अश्वों से युक्त नक्षत्र है। यह रथ पर अधिरूढ़ होकर गमन करता है। यह अन्धकार युक्त है। यह भलीभाँति आवरणों से युक्त अश्वगण राहू के रथ को धारण करते है। यह पर्व पर चन्द्र के पास एवं कृष्ण पक्ष के अन्त में सूर्य के निकट जाता है–

स्वर्भानोस्तु यथाऽष्टाश्वाः कृष्णा वै वातरंहसः

रथं तमोमयं तस्य वहन्ति स्म सुदंशिताः।। [52]

सूर्य से दस हजार योजन नीचे राहू का स्थान है। यह नक्षत्रों के मध्य विचरण करता है। सूर्य के अत्यन्त तपते मण्डल के दस हजार योजन

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.
विस्तार, चन्द्रमण्डल के पूर्ण बारह हजार योजन विस्तार से, राहू का विस्तार हजार योजन बढ़ा है। यह अमावस्या पर सूर्य एवं पूर्णिमा पर चन्द्र पर आक्रमण करता है। किन्तु मुहूर्त भर में वहाँ से हट जाता है–

अधस्तात्सवितुर्योजनायुते स्वर्भानुर्नक्षत्रवच्चरतीत्ये के योऽसावमरत्वं ग्रहत्वं चालभत भगवदनुकम्पया स्वयंसुरापसद सैंहिकेया ह्यतदर्हस्तस्य तात जन्म कर्माणे चोपरिष्टाद्दृक्ष्याम:।। [53]

केतु– वायु के समान गतिमान आठ अश्वों से युक्त केतु है। इसके धुएँ के समान कान्ति वाले दुर्बल और दारुण अश्व हैं–

ततः केतुमतस्वश्व अष्टौ ते वातरंहसः।

पलालधूमवर्णाभाः क्षामदेहाः सुदारुण:।। [54]

ध्रुव– सभी नक्षत्रों की अश्वरूपी रश्मियाँ ध्रुव से बँधी हुई हैं। अदृश्य के द्वारा ये ग्रह स्व–स्व मार्ग पर भ्रमण करते हैं। जैसे नदी में नौका बंधी रहती है वैसे ही वायु की शक्ति से देव अपने अपने निवास स्थान का बहन करते हैं। सूर्य चन्द्र मण्डलादि की रश्मियों को धारण करते है। आकाश में जितनी तारा संख्या है उतनी ध्रुव की रश्मियों की संख्या है। सभी रश्मियाँ ध्रुव से जुड़ी है–

यावत्यश्चैव ताराः स्युस्तावन्तोऽस्य मरीचयः

सर्वा ध्रुवनिबद्धास्ता भ्रमन्त्यो भ्रामयन्ति च।। [55]

जैसे तैलयन्त्र स्वयं घूमता है और दूसरों को घूमाता भी है। वैसे ही वायु के द्वारा बद्ध ज्योतिर्गण ध्रुव में बंध कर घूमते है। ध्रुव सभी ग्रहों का केन्द्र है–

मेढीभूतः समस्तस्य ज्योतिश्चक्रस्य वै ध्रुवम्।। [56]

शिंशुमार चक्र– ज्योति ग्रहों की, नक्षत्रों की यह अवस्थिति पुराणों में शिंशुमार चक्र के नाम से प्रसिद्ध है। सभी तारों समेत ध्रुव उसकी नाभि है। इस शिंशुमार चक्र के पूर्ण शरीर में जितने तारागण है, प्राणी उतने ही वर्षों तक जीवित रहता है। इस शिंशुमार के उत्तरी कपोल को उत्तानपाद मानना चाहिए यज्ञ इसके अधर, धर्म इसकी मूर्धा, हृदय नारायण तथा साध्य देव, दोनों पादों में अश्विनी कुमार, वरुण, अर्यमा ये पश्चिम भाग में रथ अवयव के रूप में अवस्थित है। वहीं शिशन स्थान पर संवत्सर और गुदा

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

स्थान पर मित्र को जानना चाहिए। इसकी पूँछ में अग्नि, महेन्द्र, मरीचि कश्यप और ध्रुव स्थित है। यह तारों से बना हुआ स्तम्भ है। जहाँ सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र तारागण कभी नष्ट नहीं होते और न ही उदित इसकी ओर अभिमुख होकर ज्योति चक्र आकाश में अवस्थित रहते हैं।

शिंशुमार चक्र की आकृति सुंस के समान है। जैसे सुंस कुण्डली मारकर बैठता है, वैसे ही यह शिंशुमार चक्र अखिल ब्रह्माण्ड में व्याप्त है। इसका मुख नीचे एवं पूँछ ऊपर ध्रुवलोक पर है। इसके कटि भाग में सप्तर्षिगण हैं। इस शिंशुमार के दाहिने पार्श्व पर अभिजित से लेकर पुनर्वसु पर्यन्त चौदह नक्षत्र इसके वाम पार्श्व में स्थित हैं। इसकी पीठ में अजवीथी है, जिसमें मूल, पूर्वाषाढा और उत्तराषाढा नक्षत्र विद्यमान हैं। इसके उदर भाग में आकाश गंगाएँ है–

यस्य पुच्छाग्रेऽर्वाक्शिरसः कुण्डली भूतस्य ध्रुव उपकल्पितस्तस्यला ङ्गूले प्रजापतिरिग्नरिन्द्रोधर्म इति पुच्छमूले धाता विधाता च कट्यां सप्तर्षयः तस्य दक्षिणावर्तकुण्डलीभूतशरीरस्य यान्युदगयनानि दक्षिणापार्श्वे तु नक्षत्राण्युपकल्पयन्ति दक्षिणायनानि तु सव्ये। यथा शिंशुमारस्य कुण्डलाभोगसन्निवेशस्य पार्श्वरूभ्योदप्य वयवाः समसंख्या भवन्ति। पृष्ठे त्वजवीथी आकाशगंगा चोदरतः।। [57]

इसके दाहिने कटि पर पुष्य एवं पुनर्वसु पीछे चरणों पर आर्द्रा और आश्लेषा दाएँ बाएँ नथुनों पर अभिजित् एवं उत्तराषाढ़ नक्षत्र हैं। नेत्रों में धनिष्ठा एवं मूल नक्षत्र, मघा आदि आठ नक्षत्र इसकी पसली रूप में हैं और मृगशिरा आदि आठ नक्षत्र दायीं पसली रूप हैं। ऊपरी थूथन में अगस्त्य और नीचे हनु में मंगल, लिंग में शनि ककुद में गुरु, छाती में सूर्य, हृदय में नारायण मन में चन्द्र, नाभि में शुक्र स्तनों में अश्विन कुमार, प्राण अपान वायु में बुध कण्ठ में राहू समस्त अंङ्गो में केतु, रोमों मे तारागण स्थित हैं। यह शिंशुमार चक्र विष्णु का सर्ववेदमयी स्वरूप है।

कक्ष निर्धारण– ब्रह्माण्ड में सभी ग्रह, नक्षत्र अपनी–अपनी कक्षाओं में स्थित हैं। जिनमें वह परिभ्रमण कार्य करते हैं। सूर्य अपनी सौर नामक कक्षा में सदैव स्थित रहता है। चन्द्र अपने सौम्य नामक अपने स्थान पर

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

भ्रमण करता है। वहीं शुक्र शौक्र नामक अपनी कक्षा में स्थित है। गुरु बृहत् नामक अपने भवन में विचरण करता है। मंगल अपनी लोहित नाम वाली कक्षा का परिक्रमण करता है। शनि अपनी शनैश्चरी कक्षा में सदा विचरणशील है। राहू अपनी स्वर्भानु कक्षा में प्रविष्ट रहता है। [58] यह नक्षत्र कभी भी अपनी निर्धारित कक्षा का उल्लंघन नहीं करते है। नक्षत्रों की यह कक्षा सूर्य के गुरुत्वाकर्षण शक्ति पर आधारित है।

पौराणिक परिवारवादी स्वरूप– इस स्वरूप में कश्यप अदिति की आठवीं सन्तान विवस्वान् हैं। कान्तिमान् धर्मपरायण चन्द्र देव वसु नाम से जाने जाते है। वही महर्षि भृगु के पुत्र शुक्र है, यह असुरों के पुरोहित एवं दैत्य गुरु है। मन आकर्षित कर लेने वाले बुध चन्द्र पुत्र हैं। विकराल रूप शनि सूर्य एवं छाया के पुत्र हैं। वहीं लोहिताधिप मंगल अग्नि एवं विकेशी के पुत्र माने गए हैं। समस्त नक्षत्र दक्ष प्रजापति की सताईस कन्याएँ ही हैं। सभी जीवों के विनाशक सिंहिका के पुत्र राहू हैं। [59]

नक्षत्र परिमाण– पुराणों में नक्षत्रों का अलग–अलग परिमाण (विस्तार) दिया गया है। सूर्य का विष्कम्भ मण्डल (त्रिज्या) नव सहस्र योजन विस्तृत है और सम्पूर्ण सूर्य मण्डल का विस्तार इससे तीन गुना अर्थात् सत्ताईस हजार योजन है।

नव योजन सहस्रो विष्कम्भकः सवितुः स्मृतः
मण्डलं त्रिगुणं चास्य विस्तारो भास्करस्य तु [60]

चन्द्र मण्डल की चौड़ाई सूर्य से तीन गुनी है। सभी मण्डलों के ऊपर तारामण्डल है। प्रत्येक तारा मण्डल का आधा योजन विस्तार माना गया है। [61] राहू एवं केतु ग्रह नहीं अपितु छाया मात्र है। यह अपनी छाया से चन्द्र एवं सूर्य को कष्ट पहुँचाने है। इसीलिए इनकी संज्ञा स्वर्भानु है। [62] नक्षत्र मण्डल में चन्द्रमा का सोलहवॉ भाग शुक्र का परिमाण है–

चन्द्रतः षोडशो भागो भार्गवस्य विधीयते
विष्कम्भान्मण्डलाच्चैव योजनानां तु सा स्मृताः।। [63]

शुक्र के परिमाण से चौथाई अंश छोटा बृहस्पति का परिमाण पुराणों में वर्णित है गुरु से चतुर्थांश हीन केतु व राहू है–

भार्गवात्पादहीनश्च विज्ञेया वै बृहस्पतिः
बृहस्पतेः पादहीनौ केतुवक्रावुभौ स्मृतो।। [64]

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

राहु केतु से चतुर्थांश हीन बुध है। नक्षत्र व तारागण अपने अपने परिमाण में प्रकाशित होते है–

विस्तारमण्डलाभ्यां तु पादहीनस्तयोर्बुधः

तारानक्षत्ररूपाणि वपुष्मन्तीह यानि वै।। [65]

आकाश में तारा एवं नक्षत्र गण है, वे सभी विस्तार व मण्डल मे बुध के समान स्वरूप वाले है। इनका स्वरूप व मण्डल एक दूसरे से हीन नहीं है। [66]

नक्षत्र गति– शनि, गुरु, भौम मन्द गति से गमन करते हैं। सूर्य, बुध, शुक्र शीघ्रगामी माने जाते हैं। जितने तारागण हैं उतने करोड़ तारिकाएँ हैं। सूर्य उनके नीचे गमन करता है–

यावन्ति चैव नक्षत्राणि कोट्यस्तावन्ति तारकाः

सर्वेषां तु ग्रहाणां वै सूर्यो ऽ धस्तात्प्रसर्पति।। [67]

इस प्रकार पुराणों में सभी नक्षत्रों का स्वरूप उनकी गति, उनका परिमाण उनका प्रभाव आदि वर्णित है। जो वास्तविकता में बिना यान्त्रिक सहायता के खगोल विज्ञान की आरम्भिक चर्चा से मुझे प्रतीत होते हैं। जिसमें सौर परिवार, नक्षत्र, समूह, ग्रहों का द्रव्यमान, उनकी निर्धारित कक्षाएं छायाग्रह (राहु केतु) का वर्णन है।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

1. ब्रह्माण्ड पुराण	33/19–21
2. ब्रह्माण्ड पुराण	33/22–25
3. श्रीमद्भागवत महापुराण	
4. मत्स्य पुराण	124/1–3
5. मत्स्य पुराण	124/4
6. मत्स्य पुराण	124/6–7
7. सूर्य सिद्धान्त	भूगोलाध्याय
8. श्रीमद्भागवत पुराण	5/20/44
9. मत्स्य पुराण	124/20 ½ – 21 ½
10. श्रीमद्भागवत महापुराण	5/21/1
11. श्रीमद्भागवत महापुराण	5/21/2
12. मत्स्य पुराण	124/22 ½ – 23 ½
13. मत्स्य पुराण	124/23 ½ – 24 ½
14. "	124/27 ½ – 28 ½
15. "	124/28 ½ – 30 ½
16. श्रीमद्भागवत महापुराण	5/21/10
17. मत्स्य पुराण	124/35 ½ – 36
18. "	124/39
19. मत्स्य पुराण	124/48 ½ – 49 ½
20. श्रीमद्भागवत महापुराण	5/21/13
21. मत्स्य पुराण	125/31
22. "	125/36
23. "	125/43–44
24. "	125/54 ½ – 56
25. "	126/2–12
26. "	126/35–36
27. "	126/47
28. "	126/53–54
29. "	125/47 ½ – 48 ½
30. "	125/55 – 56
31. "	125/57
32. "	126/62 ½ – 63 ½
33. "	126/66
34. "	126/73
35. ब्रह्म पुराण	33/3
36. श्रीमद्भागवत	5/22/10
37. मत्स्य पुराण	127/1

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

38. ब्रह्म पुराण	33 / 7
39. श्रीमद्भागवत महापुराण	5 / 22 / 13
40. मत्स्य पुराण	127 / 4
41. ब्रह्म पुराण	33 / 9½
42. श्रीमद्भागवत महापुराण	5 / 22 / 12
43. मत्स्य पुराण	127 / 5–6
44. ब्रह्माण्ड पुराण	33 / 8
45. श्रीमद्भागवत महापुराण	5 / 22 / 15
46. मत्स्य पुराण	127 / 7
47. ब्रह्माण्ड पुराण	33 / 8½
48. श्रीमद्भागवत महापुराण	5 / 22 / 12
49. मत्स्य पुराण	127 / 8
50. ब्रह्माण्ड पुराण	33 / 9½
51. श्रीमद्भागवत महापुराण	5 / 22 / 14
52. मत्स्य पुराण	127 / 9–10
53. श्रीमद्भागवत महापुराण	5 / 22 / 1
54. मत्स्य पुराण	127 / 1
55. मत्स्य पुराण	127 / 16
56. ब्रह्माण्ड पुराण	33 / 10
57. श्रीमद्भागवत महापुराण	5 / 24 / 5
58. मत्स्य पुराण	128 / 40–42
59. मत्स्य पुराण	128 / 46½ – 50
60. मत्स्य पुराण	128 / 57
61. "	128 / 59
62. "	128 / 62
63. "	128 / 63
64. "	128 / 54
65. "	128 / 65
66. "	128 / 66½ –66
67. "	128 / 60½ – 61½

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

श्रीमद्भागवत महापुराण में खगोल विज्ञान

विश्व के सबसे प्राचीन ज्ञान विज्ञान का आधार संस्कृत भाषा ही रही है। संस्कृत भाषा का वाङ्मय, आधुनिक संस्कृत वाङ्मय में वैदिक वाङ्मय, पौराणिक वाङ्मय, लौकिक वाङ्मय, आधुनिक संस्कृत वाङ्मय आदि स्वरूप प्रचलित है। वैदिक एवं लौकिक वाङ्मय के स्वरूप में पर्याप्त अन्तर है। लौकिक एवं वैदिक वाङ्मय के मध्य में पौराणिक वाङ्मय इन्हें जोड़ने का सेतु रूप से कार्य करता है।

पुराण शब्द पुरा नवं भवतीति पुराणं इस प्रकार बना है अर्थात् जो प्राचीन को नवीन सा प्रस्तुत करे उस साहित्य को पुराण कहते हैं, पुराणों की रचना व्यास द्वारा मानी गयी। पौराणिक वाङ्मय में अट्ठाईस व्यासों का उल्लेख मिलता है।

पुराणों के विषय में उक्ति प्रसिद्ध है कि ब्रह्मा जी के मुख से पहले पुराण निकले तत्पश्चात् वेद इससे पुराण वाङ्मय की प्राचीनता सिद्ध होती है। पुराण वाङ्मय अत्यन्त विपुल हैं– इसमें महापुराण, उपपुराण एवं औपपुराण सम्मलित है। महापुराणों के विषय में श्रीमद्देवीभागवत का श्लोक प्रसिद्ध है–

मद्वयं भद्वयं चैव ब्रत्रय वाचतुष्टयम्।

अनापकूस्कलिङ्गानि पुराणनि प्रच्छते।।[1]

मकार से दो पुराण मत्स्य महापुराण एवं मार्कण्डेय महापुराण, भकार से दो महापुराण– भागवत महापुराण एवं भविष्य महापुराण ब्रत्रय से तीन महापुराण– ब्रह्माण्ड महापुराण, ब्रह्म महापुराण एवं ब्रह्मवैवत महापुराण, वकार से चार महापुराण– विष्णु महापुराण वामन महापुराण, वायु महापुराण एवं वाराह महापुराण। अ से अग्नि महापुराण, ना से नारदीय महापुराण, प से पद्म महापुराण, स्क से स्कन्ध महापुराण कू से कूर्म महापुराण एवं लि से लिङ्ग महापुराण ग से गरूड़ महापुराण।

श्रीमद् भागवत महापुराण में भी अष्टादश पुराणों का उल्लेख इस प्रकार प्राप्त होता है–

ब्राह्म दश सहस्राणि पाद्म पंचोनषष्टि च
श्री वैष्णवं त्रयोविंशच्चतुर्विंशति शैवकम्।
दशाष्टौ श्री भागवतं नारदं पंचविंशतिः।
मार्कण्डं नव वाह्नं च दशपंचचतुःशतम्।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

चतुर्दश भविष्यं स्यात्तथा पंचशतानि च।
दशाष्टौ ब्रह्मवैवर्त लिङ्गमेकादशैव तु।।
चतुर्विंशति वाराहमेकाशीतिसहस्त्रकम्।
स्कान्दं शतं तथा चैकं वामनं दशकीर्तितम्।।
कौर्म सप्तदशाख्यातं मात्स्यं तत्तुचतुर्दशम्।
एकोनविंशत्सौपर्ण ब्रह्माण्डं द्वादशैव तु।। [2]

इन सभी महापुराणों में श्रीमद् भागवत महापुराण का अद्वितीय स्थान है यह भक्ति, ज्ञान, योग, दर्शन, विविध भौतिक ज्ञान, आत्मिक ज्ञान, दैविक ज्ञान से युक्त ग्रन्थ है। अतः इसमें हमें भूगोल, खगोल आदि विज्ञान की शाखाओं का भी परिचय मिलता है।

श्रीमद् भागवत महापुराण के पंचम स्कन्ध के विंशति अध्याय से चतुर्विंशति अध्याय पर्यन्त हमें खगोल विज्ञान का वर्णन प्राप्त होता है।

खगोल विज्ञान में ख अर्थात आकाश गोलक का अध्ययन होता है। खगोल का ही अपर नाम ब्रह्माण्ड है। इस ब्रह्माण्ड रूपी गोलक को प्रकाशवान् एवं प्राणवान बनाने वाला तत्व सूर्य है जो इस जड़ ब्रह्माण्ड को सजीव कर देता है। इसीलिए सूर्य का एक नाम मार्त्तण्ड भी प्राप्त होता है।

मृतेऽण्डे एवं एतस्मिन् यद्भूत्ततो मार्तण्ड इति व्यपदेशः
हिरण्यगर्भ इति यद्धिरण्याण्डसमुद्भवः।। [3]

अतः इस खगोल विज्ञान का सार रूप नक्षत्र सूर्य ही है। यह सूर्य ही समस्त ब्रह्माण्ड एवं पृथ्वी के क्रियाकलापों का कारण है। सूर्य ही दिशा, आकाश, द्युलोक, स्वर्ग, मोक्ष एवं नर्क रसातल एवं अन्यान्य समस्त विभागों का विभाजक है।

सूर्य– भगवान् सूर्य अपनी मंद, तीव्र एवं सम गति से उत्तरायण एवं दक्षिणायण होते हैं एवं द्वादश राशियों पर परिभ्रमण करते है। भागवत महापुराण के अनुसार जब सूर्य मेष एवं तुला राशि पर होते है। तब दिन एवं रात समान होते हैं । किन्तु वर्तमान समय में जब सूर्य मीन एवं कन्या राशि पर गोचर होते है। तब दिन रात समान होते है। इसका कारण पृथ्वी की परिक्रमण गति में परिवर्तन वैज्ञानिक मानते है। उनके अनुसार पृथ्वी पर आने वाले विशाल भूकम्प सौरिय चुम्बकीय अधड़ इसकी गति में प्रभावित करते है। इस सूर्य के गति के आधार पर संवत्सर, परिवत्सर इडावत्सर, अनुवत्सर एवं वत्सर की संरचना होती है।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

सूर्य देव अपना परिक्रमण मार्ग जो कुल नौ करोड़ इक्यावन लाख योजन का है इसे वर्ष भर में पूर्ण करते है। सुमेरू पर्वत के पूर्व दिशा में इन्द्र की देवधानी नाम वाली नगरी है, दक्षिण दिशा में यमराज की संयमनी नाम वाली नगरी है। सुमेरू के पश्चिम में वरूण की निम्लोचना नाम वाली नगरी है। और उत्तर दिशा में सौम्य की विभावरी नाम वाली नगरी है। सूर्य देवधानी नगरी पर होते है। सूर्य वहां से जब विभावरी की यात्रा प्रारम्भ करते है तब रात्रि और जब विभावरी पर पहुॅचते है तब अर्ध रात्रि होती है।[4] सूर्य देव जब इन्द्र की पुरी से यमराज की पुरी को प्रस्थान करते है। तब पन्द्रह घड़ी में सवा दो करोड़ और साढ़े बारह लाख योजन से कुछ पच्चीस हजार योजन अधिक चलते है।

यदा चैन्द्रयां पुर्याः प्रचलते पञ्चदशघटिकाभिर्याम्यां सपादकोटिद्वयं योजनानां सार्ध द्वादशलक्षाणि साधिकानि चोपयाति।[5]

सूर्य परिक्रमण एक नगरी से दूसरी के मध्य का समय पन्द्रह घड़ी होता है और इतने समय में वह दो करोड़ साढ़े बारह लाख लाख पच्चीस हजार योजन की यात्रा दूरी करते हैं। सूर्य को वेदमय रथ एक मुहूर्त में चौंतीस लाख योजन चला है।

एवं मुहूर्तेन चतुस्त्रिशंल्लक्षयोजनान्यष्टशताधिकानि सौरोरथस्त्रयीमयोऽसौ चतुसृषु परिवर्तते पुरीषु।[6]

यस्यैक चक्रं द्वादशार षण्नेमि त्रिणाभि संवत्सरात्मक समामनन्ति तस्याक्षो मेरोर्मूर्धनि कृतो मानसोत्तर कृतेतर भागो यत्र प्रोतं रविरथ तैलच्न्क्रवद् भ्रमन्मानसोत्तरगिरौ उपरि भ्रमति चक्रं प्रोतं रविरथ चक्रं।[7]

सूर्य के वेदमय रथ के संवत्सर पहिए हैं, मास अरे है, ऋतु नेमि है और तीनों चौमास नाभि हैं। प्रत्येक मास में भिन्न भिन्न नामों को धारण करने वाले सूर्य देव इस भूमण्डल के नौ करोड़ इक्यावन लाख घेरे में से प्रत्येक क्षण दो हजार दो योजन की दूरी पार कर लेते हैं।

चन्द्र– सूर्य की किरणों से एक लाख योजन ऊपर चन्द्र का स्थान है। इसके क्षीर्ण होने से कृष्ण पक्ष एवं वृद्धि होने पर शुक्ल पक्ष का निर्माण होता है।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

कृष्ण पक्ष पितरगण के और शुक्ल पक्ष देव कार्य का विभाजक यही चन्द्र है। यह चन्द्र षोडश कलाओं से युक्त मनोमय, अन्नमय, अमृतमय एवं सर्वमय ग्रह है–

य एष षोडशकलः पुरूषो भगवान्मनोमयोऽन्नमयोऽमृतमयो देवपितृ मनुष्यभूतपशुपक्षिसरीसृपवीरूधां प्राणाप्यायन शीलत्वात्सर्वमय इति वर्णयन्ति।[8]

अभिजित्– यह नक्षत्र या काल विशेष है इस नक्षत्र का अत्यधिक महत्त्व कर्मकाण्ड एवं ज्योतिष शास्त्र में माना जाता है। यह अभिजित् नक्षत्र चन्द्रमा से तीन लाख योजन ऊपर स्थित है। भगवान् ने इसे काल रूप से नियुक्त किया है–

तत् उपरिष्टात्त्रिलक्षयोजनतो नक्षत्राणि मेरू दक्षिणेनैव कालायन ईश्वरयोजितानि सहाभिजिताष्टाविंशातिः।[8]

शुक्र– अभिजित् नक्षत्र से दो लाख योजन ऊपर शुक्र का स्थान है। यह शुक्र सूर्य के समान ही मन्द शीघ्र और सम गति से कभी आगे एवं कभी पीछे चलता है। वर्तमान में इसे सांझ का तारा एवं भोर का तारा कहते है। यह वर्षा कराने वाला ग्रह है। इसलिये लोकों के प्रायः सर्वदा अनुकूल रहता है–

तत् उपरिष्टादुशनाद्विलक्षयोजनत उपलभ्यते पुरतः पश्चात्सहैव वार्कस्य शैध्यमान्द्यसाम्याभिर्गतिभिरर्कवच्चरति लोकनां नित्यदानुकूल एव प्रायेण वर्षयंश्चारेणानुमीयते स वृष्टिविष्टम्भग्रहोपशमनः।[10]

बुध– शुक्र से दो लाख योजन ऊपर बुध है यह मंगलकारी ग्रह है किन्तु जब बुध सूर्य गति का उल्लंघन करता तब यह ग्रह अमंगलकारी हो जाता है एवं अनावृष्टि अतिवृष्टि का कारक बनता है–

उशनसा बुधो व्याख्यातस्तत उपरिष्टाद्द्विलक्षयोजनतो बुधः सोमसुत उपलभ्यमानः प्रायेण शुभकृदार्काद् व्यतिरिच्येत तदातिवाताभ्रप्रायानांवृष्ट्यादि भयमाशंसते।।[11]

मङ्गल– बुध ग्रह से दो लाख योजन ऊपर मङ्ल ग्रह है। यह यदि बक्री न चले तो एक राशि पर तीन पक्ष रहता हुआ, डेढ वर्ष में अपना परिक्रमण पूरा करता है। यह अशुभ ग्रह माना जाता है–

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

अत ऊर्ध्वमङ्गारकोऽपि योजनलक्षद्वितय उपलभ्यमानस्त्रिभिस्त्रिभिः पक्षेरेकैकशो राशीन्द्वादशानुभुङ्क्ते यदि नः वक्रेणाभिवर्तते प्रायेणाशुभग्रहो ऽघशंसः।। [12]

बृहस्पति– इससे दो लाख योजन ऊपर बृहस्पति का स्थान है। बृहस्पति ग्रह यदि बक्री न चले तो एक राशि पर एक वर्ष रहता है। यह शुभ ग्रह है और विप्र वंश के अनुकूल रहता है।

तत् उपरिष्टाद् द्विलक्षयोजनान्तरगतो भगवान् बृहस्पतिरकैकस्मिन् राशौ परिवत्सरं परिवत्सर चरति न वक्रः स्यात्प्रायेणानुकूलो ब्राह्मणकुलस्य।। [13]

शनि– गुरु से दो लाख योजन ऊपर शनि का स्थान है। यह एक राशी पर तीस माह अर्थात ढाई वर्ष रहता है। यह पुराणोंके अनुसार अमंगलकारी ग्रह है।

तत् उपरिष्टाद्योजनलक्षद्वयात्प्रतीयमानः शनैश्चर एकैकस्मिन् राशौ त्रिंशन्मासान् विलम्बमानः सर्वानेवानुपर्येति तावाद्भिरनुवत्सरैः प्रायेण हि सर्वेषामशान्तिकरः।। [14]

पृथ्वी– सूर्य से दश हजार योजन नीचे राहू है, और राहू से सौ योजन नीचे पृथ्वी है। जिस पर जीवन का संचार निरन्तर है जहाँ विभिन्न पक्षी उड़ते हैं वही इसकी सीमा है। यह हरा भरा ग्रह है–

ततोऽधस्ताच्छतयोजनान्तर इयं पृथिवी यावद्धंसभासश्येनसुपर्णोदयः पतत्रिप्रवरा उत्पतन्तीति।। [15]

राहू– सूर्य से दश हजार योजन नीचे राहू नामक छाया ग्रह का स्थान है। यह ग्रह नक्षत्रों के मध्य विचरण करता है। सूर्य के अत्यन्त तपते मण्डल का विस्तार दस हजार योजन है वहीं चन्द्र के मण्डल का पूर्ण विस्तार बारह हजार योजन माना जाता है। राहू का विस्तार तेरह हजार योजन है। अमृत पान के समय सूर्य चन्द्र से बंधी शत्रुता के कारण यह अमावस्या एवं पूर्णिमा की सूर्य चन्द्र पर आक्रमण करता है। किन्तु मुहूर्त मात्रा में वहाँ से हट जाता है–

अधस्तात्सवितुर्योजनायुते स्वर्भानुर्नक्षत्रवच्चरतीत्यके योऽसावमरत्वं ग्रहत्वं चालभत भगवदनुकम्पया स्वयसुरापसदः सैंहिकेयो ह्यतदर्हस्तस्य तात जन्म कर्माणि चोपरिष्टाद्वक्ष्यामः।। [16]

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

शिंशुमार चक्र– यह वास्तव में ब्रह्माण्ड गोलक का चित्रण है जैसे सुंस कुण्डली मारे बैठा रहता है वैसे ही यह चक्र स्थित है। यह चक्र शनि से ग्यारह लाख योजन ऊपर सप्तर्षियों का स्थान है। सप्तर्षियों से तेरह लाख योजन ऊपर ध्रुव लोक हैं। समस्त ग्रह नक्षत्र देव गण इसी ध्रुव लोक की परिक्रमा करते रहते है।

भगवान हरि स्वयं अपनी योगमाया शक्ति से शिंशुमार रूप में इस अखिल ब्रह्माण्ड मे व्याप्त है। इस शिंशुमार का मुख नीचे है और पुंछ ऊपर ध्रुव लोक पर है। इसके कटि प्रदेश में सप्तर्षिगण है। यह शिंशुमार दाहिने पार्श्व पर कुण्डली मारे स्थित है। इसके इस पार्श्व पर अभिजित से लेकर पुनर्वसु पर्यन्त चौदह नक्षत्र विद्यमान है। शेष चौदह नक्षत्र इसके वाम पार्श्व में अवस्थित है। इस शिंशुमार के पीठ में अजवीथी है। जिसमें मूल पूर्वाषाढ़ा और उत्तराषाढा नामक नक्षत्र विद्यमान है। इसके उदर में आकाशगंगाएं है–

यस्य पुच्छाग्रेऽवाक्शिरसः कुण्डलीभूतदेहस्य ध्रुव उपकल्पितस्तस्य लाङ्गूले प्रजापतिरग्निरिन्द्रो धर्म इति पुच्छमूले धाता विधाता च कट्यां सप्तर्षयः। तस्य दक्षिणावर्त कुण्डलीभूतशरीरस्य यान्युदगयनानि दक्षिणपार्श्वे तु नक्षत्राण्युपकल्पयन्ति दक्षिणायनानि तु सव्ये। यथा शिंशुमारस्य कुण्डलाभोगसन्निवेशस्य पार्श्वयोरुभ्योरप्यवयवाः समसंख्या भवन्ति। पृष्ठे त्वजवीथी आकाशगंगा चोदरतः।। [17]

इसके दाहिने कटि पर पुष्य एवं पुनर्वसु पीछे चरणों पर आर्द्रा और आश्लेषा, दाएं बाए नथुनों पर अभिजित एवं उत्तराषाढ़ नक्षत्र है। नेत्रों में धनिष्ठा एवं मूल नक्षत्र है। मघा आदि आठ नक्षत्र इसकी बायीं पसली रूप है और मृगशिरा आदि आठ नक्षत्र उत्तरायण के दायीं पसली रूप है। [18]

ऊपरी थूथन में अगस्त्य और नीचे ठोड़ी में यम मुख में मङ्गल, लिङ्ग में शनि, ककुद में गुरु, छाती में सूर्य, हृदय में नारायण, मन में चन्द्र, नाभि में शुक्र, स्तनों में अश्विन कुमार, प्राण अपान वायु, में बुध, गले में राहू, समस्त अंगो में केतु रोमों में तारागण स्थित है। यह विष्णु का सर्व वेदमयी स्वरूप है।

इस प्रकार सूर्य, चन्द्र, अभिजित्, शुक्र, बुध, मंगल, गुरु इत्यादि सौर परिवार राहू, केतु आदि छाया ग्रह, सत्ताईस नक्षत्र अभिजित्,

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

सप्तर्षिमण्डल, ध्रुव लोक, आकाश गंगा इत्यादि खगोल विज्ञान के सभी पक्षों का वर्णन,उनकी गति, उनके विस्तार एवं एक दूसरे के मध्य दूरी सभी का चित्रण हमें श्रीमद् भागवत महापुराण में विस्तार से प्राप्त होता है। सूर्य ही इस ब्रह्माण्ड गोलक को प्रकाशित करता है, अतः भास्कर है।

सन्दर्भ सूची:–

1. श्रीमद् देवी भागवत महापुराण
2. श्रीमद् भागवत महापुराण 12/13/4 से 12/13/8
3. श्रीमद् भागवत महापुराण 5/20/44
4. श्रीमद् भागवत महापुराण 5/21/1
5. श्रीमद् भागवत महापुराण 5/21/10
6. श्रीमद् भागवत महापुराण 5/21/22
7. श्रीमद् भागवत महापुराण 5/21/13
8. श्रीमद् भागवत महापुराण 5/22/10
9. श्रीमद् भागवत महापुराण 5/22/11
10. श्रीमद् भागवत महापुराण 5/22/12
11. श्रीमद् भागवत महापुराण 5/22/13
12. श्रीमद् भागवत महापुराण 5/22/14
13. श्रीमद् भागवत महापुराण 5/22/15
14. श्रीमद् भागवत महापुराण 5/22/16
15. श्रीमद् भागवत महापुराण 5/24/2
16. श्रीमद् भागवत महापुराण 5/24/1
17. श्रीमद् भागवत महापुराण 5/23/5
18. श्रीमद् भागवत महापुराण 5/24/6

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

भास्कर संहिता- रोग कारण एवं निवारण

आयुर्वेद की रचना ब्रह्मा ने की। आचार्य धन्वन्तरि दिवोदास, काशीराम नकुल सहदेव, अत्रि च्यवन, जनक, बुध, जाबाल, जाजलि, पैल, करज अगस्त्य आदि आचार्यो ने इस विज्ञान को भली भाँति पुष्ट किया एवं इसमें षोडश तन्त्र का विस्तार किया। सूर्य देव भी इस विद्या के सर्वश्रेष्ठ आचार्य रहे हैं। भास्कर संहिता नामक चिकित्सा शास्त्र के ग्रन्थ की रचना की जिसमें रोग के कारण एवं निवारण तथा पथ्य कुपथ्य पर विचार किया गया।

आयुर्वेद के ज्ञान से हम रोग के तत्त्व को जान सकते हैं और उसके निवारण करने में समर्थ हो सकते है। व्याधि हमारे पाप से ही उत्पन्न होती है। द्धावस्था, दैन्य, शोक, भय और कलह इन सबके बीज पाप में ही निहित है। पाप एवं व्याधि की मैत्री सर्वविदित है। व्याधि ही जराबीज है और विघ्न बीज है-

पापेन जायते व्याधिः पापेन जायते जरा।
पापने जायते दैन्यं दुःखं शोको भयं कलिः।।
पापानां व्याधिभिः सार्ध मित्रता सततं ध्रुवम्।
पापं व्याधिजराबीजं विघ्नबीजं च निश्चितम्।।[1]

इसीलिए भारतवर्ष में पाप को महावैर को, दोष बीज को अमङ्गल को हे मानव भयाक्रान्त होकर कभी भी कही भी पापाचार नहीं करना चाहिए-

स्वधर्म उत्तम आचरण से युक्त हरि का सेवक गुरु देव अतिथि की सेवा करने वाला भक्तों का तपश्चरण में आसक्त व्रत और उपवास से युक्त, तीर्थ सेवी को देखकर के रोग पलायन कर जाते हैं जैसे गरुड़ को देखकर सर्प पलायन कर जाते हैं। जो नियमाचरण का पालन करते हैं वृद्धावस्था उनका सेवन नहीं करती है। रोगो का समूह सदैव दुर्जय होता है यही सबको असमय में काल का ग्रास बना देती है-

ज्वर सर्वरोगाणां जनकः कथितः सति।
पित्तश्लेष्मसमीराश्च ज्वरस्य जनकास्त्रयः।।[2]

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

वात पित्त कफ सभी देह धारियों में संचरण करते रहते हैं। उनकी शान्ति के विविध उपाय पुराण में कहे गए हैं।

पित्त– क्षुधा के जाग्रत होने पर भी अनाहार रहने से ग्रीष्म के प्रकोप से प्राणियों में पित्त जनित रोगों का संचार हो जाता है। तालफल, वेल का फल, जलपान से तत्क्षण पित्त प्राण हारक हो जाता है। पित्त मणिपूरक चक्र में उत्पन्न होता है

सुधि जाज्वल्यमानायामाहाराभाव एव च।

प्रणिनां जायते पित्तं चक्रे च मणिपूरके।।[1]

शिशिर में गर्म जल से सिर धोने से, भाद्रपद (चतुर्मास) में तीखा भोजन करने से और दैवग्रस्त होने पर शरीर में पित्त का प्रकोप बढ़ जाता है।–

तप्तोदकं च शिरसि (शिशिरे) भाद्रे तिक्तं विशेषतः।

दैवग्रस्तश्च यो भुङ्क्ते पित्तं तस्य प्रजायते।।[2]

पित्त की शान्ति के लिए शर्करायुक्त मीण अन्न, पिष्टक, शीतल जल, चना सर्वगव्य दधि, खटाश रहित मट्ठा। वेल का फल, ताल का फल सभी पके हुए खाद्य पदार्थ, अदरख, मूंग की दाल, तिल पीठी, शक्कर आदि पित्त रोग के शामक है यह पित्त को शान्त कर शक्ति में वर्धन भी करते हैं।

सशर्कर च धान्यांक पिष्ट। शीतोरकान्वितम्

चणकं सर्वगव्यञ्च दधितक्रविवर्जितम्।।

विल्वताल फलं पक्वं सर्वभैक्षवमेव।

आर्द्रकं मुर्गसूपं च तिलपिष्टं सरार्करम्।।

पित्तक्षयकरं सद्यो बलपुष्टिप्रदंपरम्।

पित्तनाशञ्च तद्बीजमुक्तम्न्यन्निबोध में।।[2]

श्लेष्म (कफ)– बहुत से व्यक्तियों की प्रकृति कफमयी होती है। कफमयी प्रकृति होने पर व्यक्ति की शक्ति क्षीण हो जाती है। यह कफ मूलतः भोजन के अनन्तर स्नान, बिना पिपासा के जलपान, तिल तैल, चिकने तैल, ऑवले के रस से बासे अन्न से मट्ठे से पका केला खाने से, दही से, वर्षा के जल में भींगने से, शरबत पीने से तैलीय जल के सेवन से, नारियल के जल से, रूखे स्नान से, बासे जल से, पोखर स्नान से और वर्षा से, तरबूज के फल से

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

पकी ककड़ी से ब्रहवरन्ध से कफ उत्पन्न होता है जो व्यक्ति की शक्ति का क्षय कर देता है–

भोजनानन्तरं स्नानं जलपानं बिना तृषा।
तिलतैलं स्नीधतैलं स्नाधमायलकी द्रवम्।।
पर्युषितान्नं तक्रं च पक्वं रम्भाफलं दधि।
मेघाम्बु शर्करातोयं सुस्नीध जलसेवनम्।।
नारिकेलोदकं रूक्षस्नानं पर्युषितं जलम्।
तरुमुञ्जापक्वफलं सुपक्वंकर्कटीफलम्।।
खातस्नानं च वर्षासु मूलकं श्लेष्मकारकम्।
ब्रहरन्ध्रे च तज्जन्म महद्वीर्यविनाशनम्।।1

अग्नि से, पसीने से, पके तैल से, भ्रमण से सुखा भोजन लेने से सुखी पकी हरड़ के सेवन से, कच्चे पिडारे, कच्चे केले, वेसवार, सिन्धुवार बिना भोजन के, बिना जल के लेने से घी युक्त रोचना चूर्ण लेने से, घी युक्त शक्कर लेने से, मिर्च, पीपल, सुखी अदरख, जीवक को, शहद को लेने से कफ का नाश होता है–

वह्निस्वेदं भ्रष्टभङ्गं पक्वतैल विशेषकम्।
भ्रमणं शुष्कभसं च शुष्कपक्वहरीतकी।।
पिण्डारकमपक्वं च रम्भाफलमपक्वफम्।
वेसवारः सिन्धुवार अनाहार म पानक्रम।।
सघृतं रोचनाचूर्ण सघृतं शुष्कशर्करम्।
मरीचं पिप्पलं शुष्कमार्द्रकं जीवकं मधु।।
द्रव्याण्येतानि गान्धर्वि सव्यंः श्लेष्महारिणः च।।1

वायुजनित रोग– भोजनानन्तर तुरन्त चल देना और दौड़ लगना, छेदन आग तापना, निरन्तर घूमते रहना, लगातार मैथुन मे आसक्त रहना, वृद्धा स्त्री से संबन्ध बनाना, और मन में किसी सन्ताप का होना, अत्यन्त रूखा होना, आहार रहित रहने पर, युद्ध में झगड़ा करने में, कड़वे वाक्य बोलने में भय में, शोक में, आज्ञा चक्र से वायु विकार उत्पन्न होता है–

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

भोजनानन्तरं सद्यो गमनं धावनं तथा।
छेदनं वह्नितापश्च शश्वद्भ्रमण मैथुनम्।।
वृद्धस्त्रीगमनं चैव मनः संताप एवं च।
अतिरुक्षमनाहारं युद्धं कलहमेव च।।
कटुवाक्यं भयं शोकं केवलं वायुकारणं।
आज्ञाख्यचक्रे तज्जन्म निशामयं तदौषधम्।।2

वायुविकार के कारण विविध रोग शरीर में जन्मले लेते हैं। यह विकार दीर्घ समय तक रहने पर रोगों का कारक बन जाता है।

वायुविकार के शान्ति के लिए हमें पकें हुए केला लेने चाहिए, बीज सहित शक्कर युक्त जल, नारियल का जल, ताजा मट्ठा, सुपिष्टक, भैंस का दही मीण या केवल शक्कर शीघ्र पर्युषित अन्न, सौवीर, शीतल जल, पका तेल विशेष रूप से तिल का तैल लाङ्गली, ताल, खजूर, सूखा ऑवला, ऑवले का रस, ठण्डा गर्म जल का स्नान, शीतल चन्दन रस, स्निाध कमल पत्र का विछौना स्निाध पंखे से सब वस्तुऐं वायु विकार का शन्ति कर देती हैं–

पक्वं रम्भाफलं चैव सबीजं शर्करोदकम्।
नारिकेलोदकं चैव सद्यस्तक्रं सुपिष्टकम्।।
माहिषं दधिमिष्टं च केवल शर्करम्।
सद्यः पर्युषिन्नं च सौवीरं शीतलोदकम्।।
पक्वतैल विशेषं च तिलतैलच केवलम्।
लाङ्गली ताल खर्जूरमुष्णमामलकीद्रवम्।।
शीतलोष्णोदक स्नानं सुस्निग्धचन्दनद्रवम्
स्निग्धपद्मपत्रतल्पं सुस्निाधवयजनानि च।।1

ज्वर समस्त रोगों का जनक हैं। यह ज्वर त्रिपाद (वात पित्त एवं कफज) त्रिशिरा षड्भुजा, नवलोपन, जीवन को भस्म करने में दक्ष यमराज के समान है। मंदाग्नि से यह उत्पन्न होता है। मन्दाग्नि के तीन जनक हैं। पित्त, श्लेष्म वायु यही तीन समस्त व्याधि समूह के जनक हैं।

इनके आधार पर ज्वर त्रिदिध है और चौथा त्रिदोषज है–

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

वायुजः पित्तजश्चैव श्लेष्मजश्च तथैव च।

ज्वरभेदाश्च गिविधाश्चतुर्यश्च त्रिदोषजः।।1

पीलिया रोग, कोड़, सूजन प्लीहा, पीड़ा ज्वर अतिसार ग्रहणी, खाँसी, घाव हलीमका, मृगकृच्छ, गुल्म, रक्तदोष विकार, विषमेल, कुब्ज, गोद, गलगण्डक भ्रमरी, सन्निपात विषूची, दारुणी, यही रोग अपने भेद प्रभेद से चौंसठ प्रकार के रोग माने गए हैं–

पाण्डुश्च कामलः कुष्ठः शोथः प्लीहा च शूलकः।

ज्वरातिसार ग्रहणी कासव्रणहलीमकाः।।

मूत्रकृच्छश्च गुल्मश्च रक्तदोष विकाराजः।

विषमेहश्च कुण्जश्च गोदश्च गलगण्डकः।।

भ्रमरी संन्पित्श्च विषूची दारूणी सति।

एषां भेरप्रभेदेन चतुषष्टी रुजः स्मृताः।।2

इन रोगों की मृत्यु एवं वृद्धावस्था कन्याएं है। यह भाईयों के साथ समस्म भूतल पर भ्रमण करती है। जो इन रोगों के उपायों को जानने वाले से यह रोग भाग जाते है।

नेत्रों का जल से प्राच्छालन, तलवों में तैल मर्दन, कानों के नीचे तैल लगाने से रोग शान्ति को पाते है। वसन्त ऋतु मे भ्रमण व अग्निसेवा कर्म करे स्त्री सेवन करे उसे वृद्धावस्था प्राप्त नहीं होती। तालाब में स्नान, शीतल जल से स्नान लेप ग्रीष्म ऋतु में करे तो वृद्धावस्था एवं रोग नहीं आते है। शिशिर ऋतु में अग्नि नवीन ऊष्मा अन्न का सेवन न करे जो गुनगुने पानी से नहाता है उसे रोग व वृद्धावस्था नही घेरते। शीघ्र मांस, नवीन अन्न स्त्री खीर भोजन में लें घी लें तो वृद्धावस्था नहीं आती है1

श्रेष्ठ अन्न क्षुधा के समय खाए, प्यास लगने पर जल पान करे, प्रतिदिन ताबूल ग्रहण करे उसे वृद्धावस्था नहीं प्राप्त होती हैं।

किन्तु जो मनुष्य सूखा मांस, वृद्धावस्था की सेवा, उगते सूर्य का सेवन, दही का सेवन करने वाले को वृद्धावस्था व रोग घर लेते है। जो रात्रि में दही का सेवन, वैश्या का रजस्वला स्त्री का सेवन करने वाले को वृद्धावस्था घेर लेती है। रजस्वला, गुलटा, असन्तानां, जारदूतिका, शूद्र याजक की

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.
की पत्नी का ऋतुहीना का जो उपभोग करे वह वृद्धावस्था व रोग का भागी वनता है–

रात्रौ ये दधि सेवन्ते पुंश्चलीश्च रजस्वला:
तानुपैति जरा हृष्टा भ्रातृभि: सह सुन्दरि।।
रजस्वला च कुलटा चावरी जारदूतिका।
शूद्रयाजकपत्नी या ऋतुहीना च या सति।।
यो हि तासामन्नभोजी ब्रह्नहत्यां लभेन्तु स:।
तेन पापेन सार्धं सा जरातमुपगच्दति।।1

इस प्रकार ब्रह्मवैवर्त पुराण में समस्त रोग समूह उसके निवारण के उपाय कारण व निकान सभी का सविस्तार लक्षण प्राप्त होता है।

सन्दर्भ ग्रन्थि:–

1. ब्रह्मवैवर्त पुराण ब्रह्नखण्ड 16/51–50
2. ब्रह्मवैवर्त पुराण ब्रह्मखण्ड 16/55
3. ब्रह्मवैवर्त पुराण ब्रह्मखण्ड 16/56
4. ब्रह्मवैवर्त पुराण ब्रह्मखण्ड 16/60
5. ब्रह्मवैवर्त पुराण ब्रह्मखण्ड 16/61–63
6. ब्रह्मवैवर्त पुराण ब्रह्मखण्ड 16/64–67
7. ब्रह्मवैवर्त पुराण बह्मखण्ड 16/68–71½
8. ब्रह्मवैवर्त पुराण ब्रह्मखण्ड 16/72–74
9. ब्रह्मवैवर्त पुराण ब्रह्मखण्ड 16/75–78
10. ब्रह्मवैवर्त पुराण बह्मखण्ड 17/36–46
11. ब्रह्मवैवर्त पुराण ब्रह्मखण्ड 17/47–49

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

आयुर्वेद का इतिहास– पौराणिक सन्दर्भ में

स्वास्थ्य जीवन की बहुमूल्य निधि है। इस निधि के लिए आयुर्विज्ञान का सृजन आदि काल में ब्रह्मा जी ने किया। ब्रह्मा जी ने चारों वेदों का सार संकलित करके स्वास्थ्य से सम्बन्धित वेद की रचना की जिसे आयुर्वेद के नाम से जानते हैं। ब्रह्मवैवर्त पुराण में कहा गया है–

तेषां नामानि विदुषां तन्त्राणि तत्कृतानि च।

व्याधि प्रणाशबीजानि साध्विमत्तो निशामय।।[2]

यह शास्त्र व्याधि विनाश के उपाय कहे गए है। समुद्र मन्थन से अमृत कलश लेकर आए आचार्य धन्वन्तरि इस आयुर्विज्ञान का आदि आचार्य हैं। इस परम्परा दिवोदास, काशीराम, सहदेव, नकुल, अश्विनी कुमार, जावालि च्यवन, जनक, बुध जाजल, पैल, करथ अगस्त्य आदि इस प्राचीन विज्ञान के आचार्य एवं ग्रन्थ प्रणेता ज्ञान के वेद वेदाङ्ग के एवं रोगों के विनाश्क आचार्य हैं–

धन्वन्तरिर्दिवोदासः काशीराजोऽश्विनी सुते।

नकुलः सहदेवोऽर्किश्च्यवनो जनको बुधः।।

जाबालो जाजलिः पैलः करथोऽगस्त्य एव च।

एते वेदाङ्गवेदज्ञाः षोडश व्याधिनाशकाः।।[3]

इन आचार्यो के द्वारा रचित ग्रन्थों का विवरण हमें ब्रह्नवैवर्त पुराण में प्राप्त होता है। चिकित्सा शास्त्र का मनोहारी तत्त्वात्मक ग्रन्थ प्राप्त होते हैं। इनमें सबसे पहले भगवान् धन्वन्तरि का ग्रन्थ प्राप्त होता है जिसका नाम ''चिकित्सातत्वविज्ञान'' प्राप्त होता है।

चिकित्सातत्त्वविज्ञान नामतन्त्रं मनोहरम्।

धन्वन्तरिश्च भगवांश्चकार प्रथमे सति।।[4]

वाराणसी नरेश दिवोदास के द्वारा भी चिकित्सादर्पण नामक ग्रन्थ रचा। काशीनरेश ने चिकित्साकौमुदी नामक दिव्य आयुर्वेद के ग्रन्थ का विवरण मिलता है।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

चिकित्सा दर्पणं नाम दिवोदासश्चकार सः।

चिकित्साकौमुदीं दिव्यां काशीराजश्चकार सः।।4

चिकित्सा विज्ञान के सार स्वरूप ग्रन्थों का प्रणयन आश्विनी कुमार के पुत्रो ने किया इसमें नकुल ने ''तन्त्र वैधक सर्वस्व'' नामक ग्रन्थ की रचना की। वहीं सहदेव ने ''व्याधिसिन्धुविमर्दन'' नामक ग्रन्थ रचा।

चिकित्सासारतन्त्रं च भ्रमघ्नं चाश्विनीसुतौ।

तन्त्रं वैद्यकसर्वस्वं नकुलश्च चकार सः।।5

चकार सहदेवश्च व्याधिसिन्धुविमर्दनम्।

यमराज ने ज्ञानार्णव महातन्त्र नामक आयुर्वेद के ग्रन्थ की रचना की। ऋषि च्यवन ने जीवदानं नामक बहुमूल्य ग्रन्थ की रचना की। परम योगी मिथिला नरेश राजा जनक ने वैद्य सन्देह भञ्जनं नाम के ग्रन्थ का सृजन किया।

ज्ञानार्णवं महातन्त्रं यमराजश्चकार ह

च्यवनो जीवदानं च चकार भगवानृषिः

चकार जनको योगी वैद्य सन्देह भञ्जनम्।।6

चन्द्रमा पुत्र बुध ने जो कि सोम वंश प्रवर्तक है ने सर्वसार नामक आयुर्वैज्ञानिक ग्रन्थ रचा। सत्यकाम जाबाला ने तन्त्रसारकम् नाम से चिकित्सा विज्ञान के ग्रन्थ की रचना की जाजलिमुनि ने वेदाङ्गसार तन्त्रम् नाम से इसी विज्ञान में रचा–

सर्वसार चन्द्रसुतो जाबालो स्तन्त्रसारकम्।

वेदाङ्गसारं तन्त्रं च चकार जाजलिमुनिः।।7

ऋग्वेद के आचार्य पैल ने निदान्तं नाम से चिकित्सा ग्रन्थ रचा करथ ने सर्वधरतन्त्रं पुस्तक का सृजन किया। अगस्त्य ऋषि ने द्वैध निर्णयतन्त्र नामक चिकित्सीय ग्रन्थ की रचना की।

पैलो निदानं करथस्तन्त्रं सर्वधरं परम्

द्वैधनिर्णयतन्त्रं च चकार कुम्भसम्भवः।।8

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

इन सोलह आचार्यो ने आयुर्वेद के सोलह तन्त्रों की स्थापना की। जो रोग रोगलक्षण एवं निदान तथा उपचार पर आधारित हैं एवं यह सूत्र बल का आधान करते हैं।

इन आचार्यो ने ज्ञान एवं मंत्रो का मन्थन करके यह आयुर्वेद नामक नवनीत का सृजन किया।

चिकित्साशास्त्रबीजानि तन्त्राण्येतानि षोडश
व्याधिप्रणाशबीजान बलाधानकराणि च
मथित्वा ज्ञानमन्त्रेणैवा ऽऽयुर्वेद पयोनिधिम्
ततरतस्मादुदाजसुर्नवनीतानि कोविदा:।।9

सन्दर्भ ग्रन्थि:–

1. ब्रह्मवैवर्त पुराण ब्रह्मखण्ड 16/12
2. ब्रह्मवैवर्त पुराण ब्रह्मखण्ड 16/13–14
3. ब्रह्मवैवर्त पुराण ब्रह्मखण्ड 16/15
4. ब्रह्मवैवर्त पुराण ब्रह्मखण्ड 16/16
5. ब्रह्मवैवर्त पुराण ब्रह्मखण्ड 16/17–18½
6. ब्रह्मवैवर्त पुराण ब्रह्मखण्ड 16/18½–19
7. ब्रह्मवैवर्त पुराण ब्रह्मखण्ड 16/20
8. ब्रह्मवैवर्त पुराण ब्रह्मखण्ड 16/21
9. ब्रह्मवैवर्त पुराण ब्रह्मखण्ड 16/22–23

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

ब्रह्मवैवर्त पुराण में आचार

पुराण शब्द की उत्पत्ति पुरा+नी+ड प्रत्यय करने पर हुई अथवा पुरा शब्द से ट्यु प्रत्यय करने पर यु को युवौरनाकौ से अन आदेश होकर पुराण शब्द की व्युत्पत्ति हुई है। पुराण ज्ञान की सबसे प्राचीनतम निधि है। पद्मपुराण के अनुसार यह वेदों से भी प्राचीन है।

पुराणं सर्वशास्त्राणां प्रथम ब्रह्मणा स्मृतम्

अनन्तरं च वक्त्रेभ्यो वेदास्तस्य विनिर्गतः।।[1]

यह पुराण सभी शास्त्रों में सबसे पहले ब्रह्मा के मुख से निकले तदनन्तर वेद आदि का सृजन हुआ ।

जो पहले कहे गए एवं वेद का निरूक्ति है सभी पापों से मुक्त कराते है। वह पुराण हैं–

यस्मात्पुरा ह्यनक्तीदं पुराणं तेन तत्स्मृतम्।

निरूक्तमस्य यो वेद सर्वपापैः प्रमुच्यते।।[2]

ऐसे यह पुराण जिनको अष्टादशात्मक स्वरूप व्यास के द्वारा निर्धारित हुआ। पुराणों में दिव्य कथाओं से वंशादि से पहले पिता आदि से सुने गए हैं। इसलिए पुराण है।

पुराणे हि कथा दिव्या आदिवंशाश्च धीमताम्।

कथ्यन्ते ये पुरास्माभिः श्रुतपूर्वं पितुस्त्वव।।[3]

नदी का जल, उससे गंगाजल स्नान श्रेष्ठ है। यह सारे मल साफ कर देता है। जलाशय में डुबकी लगाकर फिर आचमन कर जल का परिमार्जन करें। हिरण्य वर्णा.....इत्यादि तीन मंत्र शन्नोदेवी अभिष्ठ आपोभवन्तु पीतए मंत्र जाप करें। जप हमेशा तालाब के जल में प्रविष्ट होकर करना चाहिए। पुरुष एवं युञ्जते मनः आदि सूक्त का पाठ करना चाहिए। इसके अतिरिक्त अघमर्षण सूक्त में आने वाली गायत्री का जप करना चाहिए। अघमर्षण के

---

1. पद्मपुराण सृष्टि खण्ड 104 अध्याय
2. ब्रह्माण्डपुराण
3. महाभारत

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

देवता भगवान् विष्णु हैं। पुरुष सूक्त से जलाञ्जलि एवं हवन करे। अपने आसन, शयन, यान, अपनी स्त्री, अपना पुत्र अपना कमण्डल पवित्र होता है परन्तु दूसरे की ये वस्तुएं अपवित्र होती हैं। मार्ग में सामने पड़ने वाले भारवाह व गर्भिणी स्त्री के लिए मार्ग छोड़ देना चाहिए। उदय होत हुए सूर्य, नग्न स्त्री की ओर कभी न देखना चाहिए। कुँए वध्यस्थान चक्की सूत्र हड्डी भस्म और किसी कुत्सित वस्तु को नहीं साधना चाहिए। मनुष्य की अन्त:पुर कोषागार और दैत्यकर्म में नहीं जाना चाहिए। ऊँची नीची भूमि नाव के ऊपर, वृक्ष के ऊपर पर्वत पर आरोहण नहीं करना चाहिए। अर्थोपार्जन एवं शास्त्र के प्रति सदैव प्रयत्नशील रहना चाहिए। लोष्ठ को तोड़ना, तिनके को काटना नाखून चबाने वाला शीघ्र नष्ट हो जाता है। न मुखादि को बजाना चाहिए। न रात्रि में कहीं जाना चाहिए। भवन में बिना द्वार के प्रवेश नहीं करना चाहिए। न मुँह भटकना चाहिए। न कथा को मध्य में भङ्ग करना चाहिए। न वस्त्रों को उल्टा धारण करना चाहिए। सदैव कल्याणकारी बातों को ध्यान में रखना चाहिए। कहीं अनिष्ट भाषण नहीं करना चाहिए। पत्तों के बिछोने का ध्यान करना चाहिए। देवता आदि की छाया के साथ–साथ नहीं चलना चाहिए। दो पूज्य व्यक्तियों के साथ नहीं चलना चाहिए। जूठे मुँह नक्षत्रादि का दर्शन नहीं करना चाहिए। एक नदी में दूसरी का नाम नहीं लेना चाहिए। दोनों हाथों से खुजलाना नहीं चाहिए। देव पितर तर्पण के बिना नदी पार नहीं करनी चाहिए। नदी में मल नहीं फेंकना चाहिए। नग्न स्नान नहीं करना चाहिए। योग क्षेम के लिए ईश्वर सान्निध्य प्राप्त करना चाहिए।

पुराणों में आचार के कई स्वरूप प्राप्त होते हैं उसमें से एक सभी के प्रति सेवा भाव है। मानव को नित्य माता–पिता, गुरु, पत्नी, बालकों, अनाथ एवं बान्धवों को पोषण करना चाहिए–

> पिता माता गुरूर्भाया शिशुश्चानाथबान्धवा:
> एते पुंसा नित्यपोष्या इत्याह कमलोद्भव:।। "

---

1. देवी भागवत पुराण

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

व्यक्ति को अपनी कन्या पालन कर बड़े होने पर विवाह करना चाहिए। जो मूर्ख व्यक्ति इसके विपरीत कन्या का विक्रय करता है। वह मांसकुण्ड को प्राप्त होता है–

स्वकन्या पालनं कृत्वा विक्रीणाति हि यो नर:
अर्थ लोभान्महामूढो मांसकुण्डं प्रयाति स:।। [12]

पुराणों में परस्त्री गमन को दोष माना गया एवं इसको निषध आचरण में रखा गया। जिसका चित्त पर स्त्री में लगा है वह सभी कर्मो में निन्दनीय एवं पापी है–

यस्य चितं परस्त्रीषु सोऽशुचि: सर्वकर्मसु
न कर्मफलभाक्पापी निन्द्यो विश्वेषु सर्वत:।। [13]

वही स्त्रियों के लिए रक्षा हेतु बाल्यावस्था में पिता, मध्य में पति और शेष अवस्था में पुत्र का दायित्व है। उन्हें ही स्त्रियों का सदैव ध्यान रखना चाहिए–

पिता कौमारकाले च सदा पालनकारक:
भर्ता मध्ये सुत: शेषे त्रिधाऽवस्था सुयोषिताम्।।

अपनी पत्नी के अतिरिक्त अन्य स्त्रियॉ माता है पुराण में षोडश माताओं का वर्णन मिलता है। इन सें व्यक्ति को प्रेम सम्बन्ध नहीं बनाना चाहिए। अपितु इन के मान सम्मान की रक्षा करनी चाहिए–

स्तनदात्री गर्भदात्री भक्ष्यदात्री गुरुप्रिया
अभीष्टदेवपत्नी च पितु: पत्नी च कन्यका:।
सगर्भकन्या भगिनी पुत्रपत्नी प्रिया प्रसू:
मातृर्माता पितार्माता सोदरस्य प्रिया तथा।
मातु: पितुश्च भगिनी मातुरानी तथैव च।
जनानां वेद विहिता मातर:षोडश स्मृता:।।

व्यक्ति को सदैव इन पापों से बचना चाहिए। कभी भी व्यक्ति को अपने धर्म को नहीं छोड़ना चाहिए, श्रद्धा से हीन नहीं होना चाहिए–

स्वधर्माचारहीना ये नित्यकृत्यविवर्जिता:
श्रद्धाहीनाश्च वेदेषु तेषां भारेण पीडिता।। [1]

---

1. महाभारत
2. ब्रह्मवैवर्त पुराण श्रीकृष्ण जन्म खण्ड 60/5
3. ब्रह्मवैवर्त पुराण प्रकृति खण्ड 30/33
4. प्रकृति खण्ड 58/32
5. गणपति खण्ड 4/6

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

जो व्यक्ति माता पिता गुरु स्त्री एवं पुत्रादि का पोषण कार्य नहीं करता वह व्यक्ति पृथ्वी का भार है। उनका भार वहन करने में पृथ्वी भी असमर्थ है–

पितृमातृ गुरु स्त्रीणां पोषणं पुत्र पोष्ययोः
ये न कुर्वन्ति तेषां च न शक्तां भारवाहने।। [2]

जो झूठ बोलते हैं दया, सत्य से हीन है गुरु देव आदि के निन्दकों की भी पुराणों में भत्सर्ना की गयी है। [3] ये आचरण हमें नहीं करना चाहिए–

मित्र से द्रोह, कृतघ्न, झूठे साक्ष्य देना, विश्वासघाती आदि भी नहीं होना चाहिए। इससे पृथ्वी पीड़ित होती है।

मित्रद्रोही कृतघ्नश्चं मिथ्यासाक्ष्यप्रदायकः
विश्वासघ्नः स्थाप्यहारी तेषां साक्ष्यप्रदायकः।। [4]

मानव को कभी भी धर्मपत्नी का त्याग नहीं करना चाहिए। धर्मपत्नी के त्याग से वह मोक्ष का अधिकारी नहीं रहता। मानव को इनको त्याग कर संन्यास नहीं लेना चाहिए।

अनपत्यां च युवती कुलजां च पतिव्रताम्।
त्यक्त्वा भवेद्यः संन्यासी ब्रह्मचारी यतीति वा।।
वाणिज्ये वा प्रवासे वा चिरं दूर प्रयाति यः।
तीर्थे वा तपसे वापि मोक्षार्थ जन्म खण्डितुम्।।
न मोक्षस्तस्य भवति धर्मस्य स्खलनं ध्रुवम्।
अभिशापेन भार्याया नरकं च परत्र च ।। [5]

इस प्रकार ब्रह्मवैर्वत पुराण में माता, पिता, गुरु की सेवा पत्नी संतति का पालन रूप कर्तव्य रूपी आचार का निर्धारण एवं नियमन है। साथ ही कभी भी मित्रद्रोह, कृतघ्नता आदि कार्य न करने का सदुपदेश है। ऐसा करने से व्यक्ति समाज व स्वयं दोनों की नजरों में गिर जाता है।

अतः हमें सदैव सदाचरण का पालन करना चाहिए कहा भी गया है।

अष्टादश पुराणेषु व्यासस्य वचनद्वयं
परोपकाराय पुण्याय पापाय परपीडनम्।।

---

1. श्रीकृष्ण जन्मखण्ड 4/21
2. श्रीकृष्ण जन्मखण्ड 4/22
3. श्रीकृष्ण जन्मखण्ड 4/23
4. श्रीकृष्ण जन्मखण्ड 113/6–8

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

शब्द विज्ञानमय गणपति स्वरूप

भारतीय परम्परा एवं जनमानस सदैव धर्मपरायण रहा है। अतः इस समाज में इष्टोपासना की पद्धतियों का प्रादुर्भाव हुआ है। इन उपासना पद्धतियों का तन्त्रागम में विशेष महत्व है जिनका सविस्तार रूप हमें यामल ग्रन्थों में दृष्टिगोचर होता है। यामल ग्रन्थ बहुलता से प्राप्त होते है। किन्तु उनमें आठ यामल ग्रन्थों को विशेष रूप से उद्धत किया गया है। गणेश यामल, ब्रह्मयामल, रूद्रयामल विष्णुयामल एवं शक्ति यामलादि।[1] यह पूजन विधान दुरित ग्रह शमन के लिए है इसीलिए यामलों का अपना महत्व है। इन यामल ग्रन्थों में अथर्वशीर्ष एवं सहस्त्रनाम द्वारा उस अनन्त स्वरूप परमात्मा का यजन याजन का विधान है। वैसे तो यह सहस्त्रनाम विभिन्न पुराणों, उपपुराणों, औपपुराण तथा महाभारत आदि ग्रन्थों में प्राप्त है।

शैवागम परम्परा के अंगभूत जानी वाली एवं कुछ विद्द्वजनों के मत में स्वतन्त्र सत्ता वाले गाणपत्य सम्प्रदाय में भी श्रीमद्गणपतिसहस्त्रनाममाला नामक ग्रन्थ प्रचलित है। इस सहस्त्रनाम परम्परा का एक अपना अनूठा रूप अक्षर ब्रह्मोपासना है। यह अक्षर ब्रह्म की उपासना बिना अक्षर (वर्ण) के सम्भव नहीं है। अतः गाणपत्य सम्प्रदाय में भगवान् गणपति के वर्णमालानुसार संज्ञाओं का संकलन किया गया है। इस वर्णमाला अनुक्रम में कहीं भी व्यवधान या व्यतिक्रम नहीं हुआ है।

वर्णमाला के आरम्भ में स्वर आते हैं। जो ह्रस्व, दीर्घ आदि क्रम से संकलित है। इस गणपति सहस्त्रनाम के मध्यमें इस परम्परा का भी पूर्ण ध्यान रखा गया है।

'अ' वर्णमाला इसी वर्ण से आरम्भ है। ये अकार ही गणपति का अनन्तानन्तशक्तियों का बोधक, अनामय, अनापाय, अप्रमेय, अजर, अमर, अनाविल, अप्रतिहति अच्युतः अमृत, अक्षर अप्रतर्क्य, अक्षय, अजय्य अनाधार, अमल, एवं अमेयसिद्ध आदि रूप से उस परासत्ता को प्रतिष्ठित करता है–

अनापायोऽनन्तशक्तिप्रमेयोऽजरोमरः
अनाविलोऽप्रतिहतिरच्युतोऽमृतमक्षरम्।।
अप्रतर्क्योऽक्षयोऽजय्योऽनाधारोऽमलः
अमेयसिद्धिरतमघोरोऽप्रमितानन:।।
अनाकारो ऽब्धिभूम्यग्निबलघ्नोऽव्यक्त लक्षण:।।[2]

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

दीर्घ आकार के स्वरूप में भी गणपति ही है वहाँ वह आधार पीठ रूप में, सर्वाधार हैं, आधार आधेय भाव से रहित है, आखु उनके केतन में विराजमान है आशा के पूरक हैं और आखुमहारथ हैं–

आधारपीठं आधार आधाराधेयवर्जिता
आखुकेतन आशापूरक आखुमहारथ:।।[3]

इ कार भी गणपति रूप है वह इक्षु सागर के मध्य विराजते है इक्षु भक्षण लालसा से युक्त हैं, इक्षुचाप के अतिरेक से शोभायमान, इक्षु–चापनिषेवित, इन्द्रगोप समान श्री, इन्द्र नीलमणि के सम कान्तिमान्, इन्दीवर दल जैसे श्याम, इन्दुमण्डल से मंडित, दूध्मप्रिय, इडाभाग, इक्ष्वाकु वंश के विघ्नहर्त्ता आदि स्वरूपों में प्रतिष्ठत हैं। ई के रूप में गणपति का ईशान मौलि, ईशान ईशानप्रिय, ईतिहा, ईषणात्रय कल्पान्त आदि रूप प्रसिद्ध है।

ईशानमौलिरीशानईशानप्रिय ईतिहा।
ईषणात्रयकल्पान्त इहामुत्रविवर्जिता।।[4]

उ कार रूप भी भगवान् गणपति ही हैं वही उपेन्द्र, उडाभृन्मौलि, उन्दूरेक बलिप्रिय, उन्नतानन, उत्तुंग, उदार उदारत्रिदशाग्रणी हैं एवं ऊ कार रूप भी वही परमसत्ता है। ऊर्जस्वानूष्मलमद ऊहापोह दुरासहद है–

उपेन्द्र उडभृन्मौलिरुन्दरुकबलिप्रिय:
उन्नतानन उत्तुं उदार उदारत्रिदशाग्रणी।
ऊर्जस्वानूष्मलमद उहापोहदुरासद:।। [5]

ऋ कार के आधार पर गणपति ऋक यजु साम नयन रूप है, ऋद्धिसिद्धि सम्पर्क है, ऋजुचित्त से सुभल ऋणत्रयविमोचन है। लृ कार स्वरूप में भगवान गणपति भक्तों के विघ्न विनाशक हैं, देव शत्रुओं की शक्ति को लुप्त कर देने वाले हैं विमुखों की श्री लुप्त करने वाले है–

ऋग्यजु: सामनयन ऋद्धिसिद्धिसमर्पक:
ऋजुचित्तैकसुलभ: ऋणत्रयविमोचन:।
लुप्तविघ्न:सुभक्तानां लुप्तशक्तिसुरषाम्
लुप्तश्रीविमुखार्चानां लूताविस्फोटनाशनम्।।[6]

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

ए कार के अनुसार गणपति के पीठ का स्वरूप भी एकारात्मक हैं। एक पैर के आसान से युक्त एवं दैत्य श्री को कम्पायमान करने वाले, अखिल संश्रय को प्रदान करने वाले हैं। ऐ के आधार पर गणपति ऐश्वर्यनिधि, ऐहिकामुष्मिक ऐश्वर्य देने वाले हैं। ऐरावत के समान उन्मेष वाले तथा ऐरावत के समान गजमुख है–

एकारापीठमध्यस्थ एकपादकृतासनः

एजिताखिलदैत्यश्रीरेधिताखिलसंश्रयः।।

ऐश्वर्यनिधि ऐश्वर्यमैहिकामुष्किप्रदः

ऐरावतसमोन्मेष ऐरावतनिभाननः।। [7]

ओ कार में गणपति ऊ कार शब्द से वाच्य हैं ॐ कार है, ओजस्वान् है। ओषधीपति हैं। औ वर्ण से औदार्य निधि एवं औद्धत्यधुर्य, औन्नत्य निःस्वन की संज्ञा दी गई है।–

ओकारवाच्य ओंकार ओजस्वानोषधीपतिः

औदार्यनिधिरौद्धत्यधुर्य औन्नत्यनिः स्वनः।। [8]

अं स्वर भेद में गणपति अनुशासन रूप है, वह ही देव हाथियों के अंकुश रूप है। अः स्वरूप गणपति समस्त पदों में विसर्ग रूप से विराजते है।

अंकुश ःसुरनागामंकुशाकारसंस्थितः

अः समस्त विसर्गाणां पदेषु परिकर्तितः।। [9]

इस प्रकार हिन्दी वर्णमाला के स्वरानुसार गणपति की संज्ञा करने है। अनन्तर वर्णमाला के व्यंजन क्रम से गणपति की संज्ञा दी गयी है।

नाशा में कार्यरत प्रो० ओमप्रकाश पाण्डेय जी के अनुसार समस्त स्वरात्मक ध्वनियों की उत्पत्ति सूर्य की गति से होती हैं एवं समस्त व्यंजनात्मक ध्वनिया पृथ्वी की गति से उत्पन्न होती है। इस प्रकार सूर्य एवं पृथ्वी के सहयोग से हमें समस्त वर्णमाला की चौसठ ध्वनिया प्राप्त होती है। [10]

इस क्रम में सर्वप्रथम स्थान क वर्ग का आता है। क गणपति कमण्डलुधर है, कल्प हैं, कथक हैं, कटिसूत्रभृत हैं, कर्म साक्षी रूप हैं, कर्मकर्ता है, कर्माकर्म के फलदाता हैं, कदम्बगोलकाकार है। कूमाण्डगण नायक हैं, कारुण्यदेह है कपिल है, कथक है एवं कटिसूत्रभृत है–

कमण्डलुधरः कल्पः कपर्दी, कलभाननः
कर्मसाक्षी कर्मकर्ता कमाकर्मफलप्रदः
कदम्बगोलकाकार कूष्माण्डगणनायकः
कारुण्यदेहः कपिलः कथकः कटिसूत्रभृत्।। [10]

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

ख नामक महाघोष ध्वनि में गणपति प्रतिष्ठित है, खर्ब, खर्बपति, खड्गी खांतरस्थ, खनिर्मल खल्वाटशृंगनिलय खटवांगी एवं खदुरासद है।

ग का रूप में गणपति गुणाढय हैं गहन, गस्थ, गद्यपद्यसुधार्णव गद्य ज्ञान प्रिय है जीर्वाण पूर्वज रूप गुह्य आदि है।

खर्बः खड्गप्रिय खड्गी खांतरस्थ खनिर्मलः

खल्वाटशृंगनिलयः खट्वांगी खदुरासदः।।

गुणाढयो गहनो गस्थो गद्यपद्यसुधार्वणः

गद्यगानप्रियो गर्जगीतो गीर्वाणपूर्वजः

गुह्याचाररतो गुह्यो गुह्यागमनिरूपितः

गुह्यशयो गुडाब्धिस्थो गुरुगम्यो गुरोगुरूः।। [11]

घ कार रूप ध्वनि में गणपति घंटा घर्घरिकामाली, घटकुंभ सदृश उदर वाले है ङ कार ध्वनि रूप गणपति ङ कार वाच्य है, ङ कार तुल्य शुण्ड वाले है–

घंटा घर्घरिकामाली घटकुम्भो घटोदरः

ङकारवाच्यो ङकारो ङकाराकारशुण्डभृत।। [12]

च वर्ग के प्रथमाक्षर से गणपति की संज्ञाए चण्ड, चण्डेश्वर, चण्डविक्रम चराचरपिता, चिन्तामणि मंत्र स्वरूप, चर्वण लालसा हैं छ कार ध्वनि से गणपति ही छन्द स्वरूप हैं, छन्दोद्भव हैं, छन्दविग्रह हैं। ज कार ध्वनि से गणपति जगत्योगी जगत्साक्षी, जगदीश, जगन्मय, जप, जपपर एवं जाप्य हैं जिह्वा सिंहासन हैं। झ कार ध्वनि के अनुसार झल्झल्लोसद्धानो झंकारि भ्रमराकुल हैं–

चण्डश्चण्डेश्वर चण्ड चण्डेश्वर चण्डविक्रमः

चराचरपिताश्चिंतामणिश्चर्वणलालसः

छन्दश्च्छन्दोद्भवश्च्छन्दोदुर्लक्ष्यश्च्छन्दविग्रहः

झल्झ्झल्लोसद्धानो झंकारिभ्रमराकुलः।। [13]

ट वर्ग के अक्षरों पर भगवान गणपति ही टंकारस्वरूप है। उन के मणियों की टंकार हैं। ठ कार से भगवान् द्विविध ठ कार पल्लव मध्य स्थित सिद्धि प्रदाता हैं डकार से भगवान की संज्ञाए डिण्डिमुण्ड, डाकिनीश, डमर, डिंडिमप्रिय हैं वहाँ ढ कार से ढक्कानिनादमुदित एवं ढौंक, ढौंढ विनायक आदि संज्ञाए हैं।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

टंकारस्फारसंरावष्टंकारमणिनूपुरः
ठद्वयपल्लवान्त:स्थ सर्वमन्त्रेषुसिद्धिद:।
डिंडिमुण्ड डाकिनीशो डामरो डिंडिमप्रियः
ढक्कानिनादमुदितो ढौंको ढौंढविनायक।। [15]

त वर्ग के वर्णो पर भगवान् गणपति की संज्ञा तत्वों की प्रकृति, तत्व तत्वपद को निरूपित करने वाले, तारकान्तक संस्थान, तारक एवं तारकान्तक थ अक्षर से स्थाणुप्रिय स्थाता, स्थावरजंगमंजगत्, दकार से दक्षयज्ञप्रमथन, दाता, दानदम, दया, दयावान्, दिव्यविभव, दण्डभृत दण्डनायक इत्यादि संज्ञाएं, ध कार से ध्यान से प्रकट होने वाले, ध्येय, ध्यान ध्यानपरायण ध्वनि प्रकृति इत्यादि एवं न कार से नन्द्य, नादप्रिय, नाद नादमध्व प्रतिष्ठापित: निष्कल, निर्मल, नित्य निरामय, आदि संज्ञाए हैं।

तत्वानां प्रकृतिस्तत्व तत्वंपदनिरूपितः
तारकांतरसंस्थानस्तारकस्तारकांतक:।
स्थाणु:स्थाणुप्रिय:स्थातास्थावरंजगमंजगत्
दक्षयज्ञप्रमथनो दातादानंदमोदया।।
दयावान्दिव्यविवोदंडभृद्दंडनायकः
दंष्ट्रालग्न द्विपघटो देवार्थान्तगजाकृतिः
धनं धनपतेर्बुध धनदो धरणीधर:।।
ध्यानैकप्रकटो ध्येयो ध्यानं ध्यानपरायण
ध्वनिप्रकृतिचीत्कार ब्रह्माण्डावलिमेखल:।।
नंद्यो न:दप्रियो नादो नादमध्येप्रतिष्ठितः
निष्कलो निर्मलो नित्ये नित्यानित्यो निरामय:।। [16]

प वर्ग के वर्णो के अनुसार भक्त गणों ने भगवान् गणपति की परक संज्ञाए इस प्रकार दी हैं– परंव्योम परंधाम, परमात्मा, परंपद, परात्पर, पशुपति पशुपाशविमोचन, पूर्णानन्द, परानन्द, पुराणपुरुषोत्तम, प्रसन्नान्नद प्रणताज्ञाननाशन:, प्रमाण प्रत्यय से अतीत, प्रणतजन के कष्ट निवार आदि।

परंव्योम परंधाम परमात्मा परंपदं
परात्परः पशुपति पशुपाश विमोचन:।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

पूर्णानन्दः परानन्दः पुराणपुरूषोत्तमः
पद्मप्रसन्ननयनः प्रणताज्ञाननाशनः।।
प्रमाण प्रत्ययातीतः प्रणतार्तिविनाशनः [17]

फ कार पर भगवान गणपति फणिहस्त फणिपति फूत्कार एवं फाणितप्रिय है। ब कार पर बाण नामक असुर से पूजित चरण युगल वाले है। बाल क्रीडा कौतुकी है, ब्रह्म है, ब्रह्मा द्वारा पूजित है, ब्रह्माचार्य एवं बृहस्पतिः है। बृहत्तर हैं ब्रह्मवित् है। भ कार से भगवान भ्रू मात्र से लक्ष्मी प्रदाता है भर्ग है। भद्र, भयापह, भूति, भूतिभूषण, भव्य एवं भोगदाता है। म कार से भगवान् मंत्र मंत्रपति, मदमत्त, मनोकाय, महाबल, महावीर्य महामना है–

फणिहस्तः फणिपति फूत्कार फाणितप्रियः।
बाणार्चितांघ्रियुगलो बालकेलीकुतूहली
ब्रह्म ब्रह्मचितपदो ब्रह्मचारी बृहस्पतिः।।
ब्रह्मतरो ब्रह्मपरो ब्रह्मण्यो ब्रह्मवित्प्रियः
भ्रूक्षेपदत्त लक्ष्मीको भर्गो भद्रो भयापहः।।
भगवान् भक्तिसुलभो भूतिदो भूतिभूषणः
भव्यो भूतालयो भोगदाता भ्रूमध्यगोचरः।
मंत्रो मंत्रपतिर्मंत्री मदमत्तो मनोमयः
मेखलाहीश्वरो मंदगतिर्मद निभेक्षणः।।
महाबलो महावीर्यो महाप्राणो महामना।। [18]

अन्तः एक वर्णो के आधार पर भगवान् गणपति को भक्तो ने य वर्ण के आधार पर यज्ञ, यज्ञपति, यज्ञफल दाता, यशस्कर एवं योगगम्य, याज्ञिक याचकों के प्रिय र कार से रस रसप्रिय रस्य, रंजक एवं रावणार्चित, राज्य रक्षाकर एवं रत्नगर्भ एवं रत्नगर्भ तथा राज्य सुख संज्ञाएं दी गयी वही ल कार से लक्ष्य, लक्ष्यपति, लक्ष्य लयस्थ एवं लड्डूक प्रिय एवं लानप्रिय तथा लास्यपर एवं लाभकृत तथा लोक विश्रुत कहा गया है। व कार के अनुसार गणपति वरेण्य है वह्नि वदन हैं वंद्य वेदान्तगोचर हैं। विकर्ता हैं विश्व का आधार हैं विश्वेश्वर हैं विभु है।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

यज्ञो यज्ञपतिर्यज्ञगोप्ता यज्ञफलप्रदः।
यशस्करो योगगम्यो याज्ञिको याचकप्रियः
रसो रसप्रियो रसो रंजको रावणार्चितः।।
राज्यरक्षाकरो रत्नगर्भो राज्यसुखप्रदः
लक्ष्यो लक्ष्यपतिर्लक्ष्यलयस्थो लड्डूकप्रियः।।
ज्ञानप्रियो लास्यपरे लाभकृल्लोकविश्रुतः
वरेण्ये बह्निवदनो वंद्यो वेदान्तगोचरः
विकर्ता विश्वतश्चक्षुर्विधाता विश्वतोमुखः
वामदेवो वज्रिनेता वज्रिवज्र निवारणः।।
विवस्वब्दंधनो विश्वाधारो विश्वेश्वरो विभुः।।[19]

ऊष्माण वर्णो के अनुसार गणपति की संज्ञाए श से शब्दब्रह्ममय, शंभु शक्ति गणेश्वर शास्ता, शिखाग्रनिलय, शरण्य, शम्बरेश्वर है वही ष कार के अनुसार भगवान् गणपति षड ऋतु कुसुम की मालाधारी है, षडाधार है एवं षडक्षर हैं। स वर्ण से भगवान् गणपति संसार के वैद्य हैं सर्वज्ञ, सर्व भेषज हैं सृष्टि स्थिति लय क्रीडा कारक है, साक्षी है, स्वयं वेद्य हैं स्वदक्षिण हैं स्वतंत्र हैं सत्य संकल्प हैं सुख हैं। ह वर्ण के अनुसार गणपति ही हंस है, हस्तिपिशाचीश हैं हवन स्वरूप है, हव्य कव्य भोक्ता हैं हव्य हैं हुतप्रिय हैं हृष्ट हैं, हुतप्रिय हैं एवं हृल्लेखामंत्रमध्यगा है–

शब्दब्रह्ममय प्राप्यः शंभुशक्ति गणेश्वरः।।
शास्ता शिखाग्रनिलयः शरण्यः शम्बरेश्वरः
षड्ऋतुकुसुमस्रग्वीषडाधारःषडाक्षरः।।
संसार वैद्यः सर्वज्ञः सर्वभेषजभेषजं
सृष्टिस्थितिलयक्रीडः सुरकुंजर भेदकः।
सन्दूरितमहाकुम्भः सदसदव्यक्तिदायकः
साक्षी समुद्रमंथनः स्वयंवेद्यः स्वदक्षिणः।।
स्वतंत्र सत्यसंकल्पः सामगानरतः सुखी
हंसो हस्तिपिशाचीशो हवनं हव्यकव्यभुक्।।
हव्यं हुतप्रियो हृष्टो हृल्लेखामंत्रमध्यगः।। [20]

संयुक्ताक्षर क्ष त्र एवं ज्ञ के आधार पर भगवान् की संज्ञाएं क्षेत्राधिप क्षमाभर्ता क्षमापरायण आदि संज्ञा दी गयी है।

क्षेत्राधिपः क्षमाभर्त्ता क्षमापरपरायणः
क्षिप्रक्षेमकरः क्षेमनन्दः क्षोणी सुरद्रुमः।। [21]

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

त्रा–त्राता एवं ज्ञ से ज्ञान एवं ज्ञानद संज्ञा दी गयी हैं।

इस प्रकार गणपति सहस्त्र नाम में भगवान् गणपति का पहले हृस्व एवं दीर्घ स्वरों के आधार पर क्रमबद्ध संज्ञाए है। व्यंजन वर्ण आते ही रचनाकार ने उदित वर्णो के अनुरूप गणपति की संज्ञा तत्पश्चात् अन्तः एवं ऊष्माण वर्णो पर संज्ञा निरूपण किया।

इस प्रकार गणेशपुराण के उपासना खण्ड में त्रिपुर दाह के प्रसंग में भगवान् गणपति का वर्ण स्वरूप वर्णित है।

1. धर्म शास्त्र का इतिहास– लेखक पी० बी० काणे
2. गणपति सहस्र नाम – 64 से 67
3. गणपति सहस्र नाम – 68 से 69
4. गणपति सहस्र नाम – 70 से 71
5. गणपति सहस्र नाम – 71 से 72
6. गणपति सहस्र नाम – 73
7. गणपति सहस्र नाम – 75 से 76
8. गणपति सहस्र नाम – 78
9. गणपति सहस्र नाम – 79 से 80
10. डॉ० ओमप्रकाश पाण्डेय
11. गणपति सहस्र नाम – 81 से 84
12. गणपति सहस्र नाम – 85 से 87
13. गणपति सहस्र नाम – 88 से 90
14. गणपति सहस्र नाम – 91 से 95
15. गणपति सहस्र नाम – 95 से 98
16. गणपति सहस्र नाम – 98 से 101
17. गणपति सहस्र नाम – 101 से 103
18. गणपति सहस्र नाम – 103 से 108
19. गणपति सहस्र नाम – 108 से 113
20. गणपति सहस्र नाम – 113 से 114
21. गणपति सहस्र नाम – 115

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

सूर्यवंश की ऐतिहासिकता- श्रीमद् भागवत के सन्दर्भ में

इति+हा+आस के संयोग से इतिहास शब्द निष्पन्न हुआ जिसका अर्थ ऐसा निश्चय ही हुआ। इतिहास लेखन एवं उसका संरक्षण हम भारतीयों की अपनी शैली है। जिसे हम पुराण के नाम से जानते है। पुराणों की इन कथानकों के प्रमाण हमें वैदिक साहित्य में बीज रूप में प्राप्त होते है। यथा ऋग्वेद के अश्विन सूक्त में सौदास की पत्नी विश्वपला का आख्यान वर्णित है।[1] इस भाँति अन्यान्य राजाओं के हमें ऐतिहासिक प्रमाण प्राप्त होते है।

किन्तु आंग्लों ने भारत पर आधिपत्य के अनन्तर स्वयं को श्रेष्ठ सिद्ध करने के लिये भारतीय ज्ञान विज्ञान को न्यून सिद्ध करने के लिये भारतीय शिक्षा पद्धति पर प्रहार किया एवं ऐतिहासिक तथ्यों को अपने तर्को से कस कर परिवर्तित कर दिया। इस विचार धारा का प्रतिनिधित्व मैकाले ने किया, जिसमें घोर घृणा के भाव भरे थे। मैकाले की इस नीति का विरोध वहीं के प्राच्य विद्याविदों ने किया किन्तु उन्होंने भी ज्ञान विज्ञान मूल उत्स यूनान को सिद्ध कर भारतीय ज्ञान को सराहा एवं विश्व पटल पर स्थापित किया। इस का प्रतिनिधित्व लार्ड एफ० मैक्समूलर ने किया। किन्तु यह दोनों पाश्चात्य धाराऐं अतिवादिता के दंश से दंशित होने के कारण हमारे पुराणेतिहास को ठीक ठीक समझ न सकी।

उन्नीसवीं सदी के भारत में जिन व्यक्तियों का भारत के साथ सबसे ज्यादा सीधा सरोकार थे, वे बिट्रिश प्रशासक ही भारत के इतिहास लेखक बने। अतः उनकी तिरस्कारपूर्ण नीति ने भारतीय इतिहास के लेखन को प्रभावित किया। उन्होंने इतिहास लेखन में मुद्राऐं भाण्ड, नगरों के मन्दिरों के भग्नावशेष आदि को आधार बनाया किन्तु भारतीय इतिहास या मानव जाति का इतिहास इतना प्राचीन है कि किसी भी साक्ष्य के प्राप्ति की सम्भावना शेष नहीं रहती। अतः वे पुराणों को कवि कल्पित सिद्ध करने का प्रयत्न भी करते है।

परन्तु शनैः शनैः वैज्ञानिक पृथ्वी की आयु वही मानने लगे हैं जो भारतीय ज्योतिष गणना सिद्ध करती है। भूगर्भशास्त्री भी गंगा वेसिन को 6000 ईसा. पूर्व से पूर्व का सिद्ध करते है।[2]

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

भारतीय ऐतिहासिक परम्परा में ब्रह्मा ही सृष्टि कर्ता हैं उनसे ही यह जगत क्रियाशील है। इस परम्परा में चौदह मनु आते है। अब तक छः मनुओं का एवं उनके वंशजो का काल (मन्वन्तर) व्यतीत हो चुका है। एवं सातवें मनु वैवस्वत् मनु का यह युग है। इस युग के आदि पुरुष यह सूर्य पुत्र मनु ही हैं। मनु पुत्रों की इस परम्परा की ऐतिहासिकता को प्रसिद्ध इतिहासकार डॉ० रोमिला थापर ने इस प्रकार व्यक्त किया है –

भारतीय इतिहास को काल के विस्तार में द्वीपों की श्रृंखला के रूप में देखा गया, जिसमें हर द्वीप का नाम एक राजवंश के नाम से जुड़ा हुआ था और भारतीय इतिहासकारों की अधिकांश मानक रचनाओं में इसी ढॉचे का उपयोग किया गया है।[3]

पुराणों के अधिकांश तथ्य वैदिक साहित्य में प्राप्त हैं जो उसकी प्रमाणिकता का एक सुदृढ़ आधार है। इस वैवस्वत मन्वन्तर के युग में सबसे प्राचीन एवं विशाल वंश सूर्य वंश है। इस वंश की उत्पत्ति ब्रह्मा के पुत्र मरीच ऋषि के पुत्र महर्षि कश्यप एवं अदिति के पुत्र भगवान् विवस्वान् (सूर्य) से एवं उनकी पत्नी संज्ञा से मनु की उत्पत्ति हुई। यह मनु ही इस वर्तमान युग के अधिपति मनु है।

मनु एवं श्रद्धा से मनु जी को यमुना तट पर तपस्या करने से दस पुत्रों की प्राप्ति हुई वे क्रमशः इक्ष्वाकु, नृग, शर्याति दिष्ट, धृष्ट, करूष, नरिष्यन्त, पृषध, नभग और कवि थे–

इक्ष्वाकु नृग शर्याति दिष्टधृष्ट करुषकान्
नरिष्यन्तं पृषध्रं च नभगं च कविं विभुः।।[4]

इन दस पुत्रों से पूर्व मनु जी ने वसिष्ठ जी के तत्वाधान में पुत्र कामना से यज्ञ किया किन्तु श्रद्धा को पुत्री चाहिए थी उन्होंने ऋषियों से निवेदन किया तो इला नामक पुत्री को प्राप्त किया। गुरु वसिष्ठ की कृपा से वह सुद्युम्न नाम पुरुष में परिवर्तित हो गयी। एक बार मृगया के लिए गये सुद्युम्न उस वन में प्रवेश कर गए जहाँ पार्वती जी विहार कर रही थी। फलतः वह पुनः स्त्री रूप मे परिवर्तित हो गए। पुनः शंकर के वरदान से मास पर्यन्त स्री मास पर्यन्त पुरुष रूप में परिवर्तित हो गए। चन्द्र के संयोग से इस इला से जो संतति हुई उसने वंश की नींव रखी।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.
मनु एवं श्रद्धा ने वंश विस्तार की कामना से यमुना के तट पर पुनः तपस्या आरम्भ की तब उनके दश पुत्र हुए–
इक्ष्वाकु, नृग, शर्याति, दिष्ट, धृष्ट, करुष, नरिष्यन्त, पृषध्र, नभग एवं कवि। यह सभी बालक गुरु वसिष्ठ के आश्रम में अध्ययन हेतु गए वहाँ गुरु ने सब को अलग–अलग सेवा कार्य दिया। पृषध्र को गौ सेवा का कार्य दिया गया। एक बार रात्रि में सिंह गौ को ले जाने लगा तब गाय की आवाज सुनकर गाय की रक्षा हेतु पृषध्र ने सिंह पर प्रहार किया किन्तु अन्धकार के कारण गाय ही तलवार से कट गयी रूष्ट गुरु ने उन्होंने शूद्र होने का शाप दिया।[5] पृषध्र ने अपने अन्तः करण को परमेश्वर को समर्पित कर दिया एवं अन्त में परमपद को प्राप्त हुए।

मनु के सबसे छोटे पुत्र कवि विषयों से निःस्पृह थे। अतः गृह त्यागकर परमात्मा में लीन हो गए।[6]

मनुनन्दन करूष से कारूष उत्पन्न हुए। यह क्षत्रिय थे। धृष्ट से धार्ष्ट उत्पन्न हुए। पहले यह धार्ष्ट क्षत्रिय थे किन्तु बाद में ब्राह्मण बन गए।

मनु पुत्र नृग से सुमति उत्पन्न हुए। सुमति नन्दन भूतिज्योति थे। भूतज्योति से वसु हुए। वसु से प्रतीक की उत्पत्ति हुई। प्रतीक से ओघवान् पुत्र रूप में उत्पन्न हुए। ओघवान् के ओघवती नामक कन्या उत्पन्न हुई–

वसोः प्रतीकस्तत्पुत्र ओघवानोघवत्पिता
कन्या चौघवती नाम सुदर्शन उवाह तम्।।[7]

इस प्रकार नृग का वंश ओघवती तक चला।

मनु पुत्र दिष्ट से नाभाग हुए। यह कर्मणा वैश्य बने एवं वैश्यों के प्रवर्तक हुए। नाभाग के पुत्र रूप में भलन्दन हुए। भलन्दन के वत्सप्रीति नामक पुत्र हुआ। वत्सप्रीति से प्रांशु, प्रांशु से प्रमति, प्रमति नन्दन हुए खनित्र। खनित्र से चाक्षुष हुए। चाक्षुष के पुत्र विविशंति थे। उनसे से रम्भ, रम्भ से खनिनेत्र, खनिनेत्र से करन्धम, करन्धम से अवीक्षित, अवीक्षित से मरुत्–चक्रवर्ती साम्राट थे एवं इस वंश के प्रतापी राजा थे। मरुत् के पुत्र दम थे। दम से राज्यवर्धन, राज्यवर्धन से सुधृति, सुधृति से नर, नर से केवल, केवल से बन्धुमान, बन्धुमान के पुत्र थे बेगवान्, बेगवान से बन्धु, बन्धु से तृणबिन्दु, तृणबिन्दु के तीन पुत्र

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

विशाल, शून्य बन्धु, एवं धूम्रकेतु अत्यन्त प्रसिद्ध हुए। विशाल से हेमचन्द्र, हेमचन्द्र से धूम्राक्ष, धूम्राक्ष के पुत्र संयम थे। उनसे कुश्वाश्व एवं देवल दो पुत्र हुए। कुश्वाश्व के पुत्र सोमदत्त उनसे सुमति, सुमति से जनमेजय नामक पुत्र उत्पन्न हुआ। जनमेजय पर दिष्ट की वंश परम्परा विराम प्राप्त करती है।

मनु के एक पुत्र शर्याति थे, शर्याति के एक कन्या सुकन्या एवं तीन पुत्र उत्तानबर्हि, आनर्त्त एवं भूरिषेण हुए।[1] सुकन्या का विवाह महर्षि च्यवन के साथ हुआ। शर्याति के मध्यम पुत्र आनर्त्त से वंश परम्परा चली इनके पुत्र का नाम रेवत था। जिन्होंने कुशस्थली बसाई। रेवत के सौ पुत्र थे। इनमें सबसे बड़े कुकधी थे जिनकी पुत्री रेवती का विवाह बलराम जी से हुआ।

मनु पुत्र नभग से नाभाग उत्पन्न हुए। यह पितृभक्त थे एवं उनकी आज्ञा से भगवान् शिव के साक्षात्कार को प्राप्त हुए। नाभाग के परम वैष्णव पुत्र अम्बरीष जी हुए। जिनकी भक्ति को दुर्वासा जी ने भी प्रणाम किया, एवं ब्रह्मशाप अम्बरीश का स्पर्श तक नहीं कर सका–

नाभागादम्बरीषोऽभून्महाभागवतः कृती।
नास्पृशद् ब्रह्मशापोऽपि यं न प्रतिहतः क्वचित्।।[2]

अम्बरीष जी के तीन पुत्र थे– विरूप, केतुमान एवं शम्भू। विरूप के पृषदश्व हुए। पृषदश्व के पुत्र रथीतर थे। इसके बाद नभग के वंश को श्रीमद् भागवत में वर्णन प्राप्त नहीं होता।

मनु नन्दन नरिष्यन्त के पुत्र चित्रसेन थे। चित्रसेन से ऋक्ष उत्पन्न हुए। ऋक्ष से मीढ़वान, मीढ़वान के कूर्च, कूर्च से पुत्र रूप में इन्द्रसेन, इन्द्रसेन से वीतिहोत्र, वीतिहोत्र से सत्यश्रवा उनसे उरुस्रवा, उरुस्रवा के पुत्र देवदत्त हुए। देवदत्त से अग्निवेश्य हुए जिनसे ब्राह्मणों का अग्निवेश्यायन गोत्र प्रचलित हुआ। अग्निवेश्य के पुत्र कनीन एवं जातुकर्ण तक नरिष्यन्त के वंशजों का वर्णन श्रीमद्भागवत में प्राप्त होता है।

इस प्रकार मनु के नौ छोटे पुत्रों की वंश परम्परा के अनन्तर महर्षि व्यास जी ने मनु के ज्येष्ठ पुत्र इक्ष्वाकु की वंश परम्परा का वर्णन आरम्भ किया। भारतीय वंशावली में सबसे सुदीर्घ वंश यही है। मनु पुत्र इक्ष्वाकु के सौ पुत्र थे।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.
इनमें विकुक्षि निमि एवं दण्डक अति प्रसिद्ध हुए। इक्ष्वाकु के मध्यम पुत्र निमि ने एक अलग वंश परम्परा का प्रवर्तन किया जो पुराणों में निमि वंश या जनक के नाम से जाने जाते है। इक्ष्वाकु के ज्येष्ठ पुत्र विकुक्षि से पुरंजय हुए, यह अत्यन्त प्रतापी राजा थे जिन्होंने इन्द्र को वाहन के रूप में उपयोग किया, इन्द्र ने बैल का रूप धारण किया और पुरंजय उनके ककुद पर बैठे इसलिए इनका एक नाम इन्द्रवाह एवं ककुस्थ था–

जित्वां पुरं धनं सर्वं सश्रीकं वज्रपाणये।
प्रत्ययच्छत् स राजर्षिरिति नामभिराहृतः।।[10]

पुरञ्जय के पुत्र अनेना थे। अनेना नन्दन पृथु हुए। पृथु के पुत्र विश्वरन्ध्रि उनसे चन्द्र, चन्द्र के भुवनाश्व, भुवनाश्व के पुत्र शाबस्त हुए। शाबस्त के पुत्र बृहदश्व, बृहदश्व से कुवलयाश्व हुए। इन्होंने धुन्ध नामक असुर का बध किया। इसलिए धुन्धमार कहलाए। कुवलयाश्व के तीन पुत्र थे– दृढाश्व, कपिलाश्व एवं भद्राश्व। दृढाश्व के पुत्र हर्यश्व थे। हर्यश्व से विकुम्भ, विकुम्भ से बर्हणाश्व, बर्हणाश्व से कुशाश्व उत्पन्न हुए। उनसे सेनजित्, सेनजित् से युवनाश्व, युवनाश्व के अत्यन्त प्रतापी राजपुत्र त्रसद्दस्यु उत्पन्न हुए जो मान्धाता के नाम से पुराणों में प्रसिद्ध हैं। मान्धाता के शशबिन्दु की पुत्री बिन्दुमती से तीन पुत्र हुए– पुरुकुत्स मुचुकुन्द, अम्बरीष

शशबिन्दोर्दुहितरि बिन्दुमत्यामधान्नृपः।
पुरुकुत्समम्बरीषं मुचुकुन्दं च योगिनम्
तेषां स्वसारः पञ्चाशत् सौभरिं वव्रिरे पतिम्।।[11]

मान्धाता की पचास कन्याओं ने सौभरि ऋषि को पति रूप में चुना। मुचुकुन्द ने योग द्वारा द्वापर में भगवान श्रीकृष्ण का दर्शन प्राप्त किया। अम्बरीष से यौवनाश्व और यौवनाश्व से हारीत हुए। मान्धाता के ज्येष्ठ पुत्र पुरुकुत्स त्रसद्दस्यु हुए। त्रसद्दस्यु के अनरण्य, अनरण्य से हर्यश्व, हर्यश्व से अरुण, अरुण से त्रिबन्धन, त्रिबन्धन के सत्यव्रत हुए जो अपनी जिद के कारण विश्वामित्र द्वारा त्रिशंकु बना दिए गये। सत्यव्रत के सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र हुए। इनके माध्यम से श्रीमद् भागवत में विस्तार से शुनः शेप का आख्यान दिया गया है। हरिश्चन्द्र के पुत्र रोहित थे। रोहित के पुत्र का नाम हरित था।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

हरित से चम्प उत्पन्न हुए। चम्प से सुदेव, सुदेव से विजय, विजय के भरुक भरुक के वक, वक के पुत्र बाहुक हुए। बाहुक निःसन्तान ही मृत्यु को प्राप्त हुए उनकी पत्नी ने उनके साथ सती होने की निश्चय किया किन्तु वसिष्ठ जी ने उसे रोक दिया क्योंकि वह गर्भवती थी। रानी की अन्य पत्नियों ने उसे गर दे दिया यह बालक गर सहित उत्पन्न हुआ इसलिए सगर कहलाया–

आज्ञयास्यै सपत्नीभिर्गरो दत्तोऽन्धसा सह
सह तेनैव संजातः सगराख्ययो महायशाः।।[12]

सगर के सौ पुत्र एवं दूसरी पत्नी से असमञ्जस हुए जो परमयोगी थे। सौ पुत्र कपिल के शाप से दग्ध हुए। असमञ्जस के पुत्र अंशुमान् थे अंशुमान् ने गंगा को पृथ्वी पर लाने का बहुत प्रयास किया किन्तु निष्फल रहे। अंशुमान के पुत्र राजा दिलीप थे। दिलीप के पुत्र भागीरथ थे जो गंगा को पृथ्वी पर लाने मे सफल रहे।[13] भागीरथ के पुत्र श्रुत के नाभ नाभ से सिन्धुद्वीप उससे अयुतायु, अयुतायु के पुत्र ऋतुपर्णा थे जो निषध राजा नल के समकालिक थे जिन्होंने नल से अश्व विद्या सीखी थी। ऋतुपर्णा से सर्वकाम, सर्वकाम से सुदास सुदास के पुत्र सौदास कहलाए। सौदास निःसन्तान थे तब उनकी पत्नी मदयन्ती के गुरु की कृपा से अश्मक नामक पुत्र हुआ। अश्मक से मूलक हुए जिन्हें नारी कवच भी कहा जाता है। जब परशुराम ने धरती को क्षत्रिय विहीन किया तब स्त्रियों ने इनकी रक्षा की थी–

अश्मकान्मूलको जज्ञे यः स्त्रीभिः परिरक्षितः
नारीकवच इत्युक्तो निःक्षत्रियो मूलकोऽभवत्।।[14]

भागवत परम्परा में मूलक नन्दन दशरथ थे। दशरथ से ऐडविड हुए। ऐडविड के पुत्र विश्वसह थे। विश्वसह के खट्वाङ्ग राजा खट्वाङ्ग के दीर्घबाहु नामक पुत्र थे उन दीर्घबाहु से रघु नामक प्रतापी पुत्र हुए। रघु से अज हुए एवं अजनन्दन दशरथ थे जिनके घर स्वयं अंशावतार भगवान विष्णु पुत्र रूप में पधारे। दशरथ के चार पुत्र थे राम, लक्ष्मण भरत, शत्रुघ्न।

तस्यापि भगवानेष साक्षाद् ब्रह्ममयो हरिः
अंशांशेन चतुर्धागात् पुत्रत्वं प्राथितः सुरैः
रामलक्ष्मणभरतशत्रुघ्ना इति संज्ञिता ।।[15]

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.
भागवत राम के चरित्र का एक अध्याय में संक्षेप में वर्णित है। भगवान राम के दो पुत्र लव कुश, लक्ष्मण के अंगद एवं चित्रकेतु, भरत के तक्ष एवं पुष्कल तथा शत्रुघ्न के सुवाहु एवं श्रुतसेन पुत्र रूप में हुए।

अन्तर्वत्न्यागते काले यमौ सा सुषुवे सुतौ–
कुशोलव इति ख्यातौ तयोश्चक्रे क्रिया मुनिः।।
अङ्गदश्चित्रकेतुश्च लक्ष्मणस्यात्मजौ स्मृतौ
तक्षः पुष्कल इत्यास्तां भरत महीपते।।
सुबाहुः श्रुतसेनश्च शत्रुघ्नस्य बभूवतुः
गन्धर्वानां कोटिशो जघ्ने भरतो विजये दिशाम्।। [16]

कुश के पुत्र अतिथ थे। अतिथ के निषध, निषध से नभ, नभ से पुण्डरीक पुण्डरीक से क्षेमधन्वा। क्षेमधन्वा से देवानीक देवानीक के पुत्र अनीह थे अनीह के पुत्र पारियात्र हुए। पारियात्र के पुत्र बलस्थल हुए। बलस्थल के ब्रजनाभ। ब्रजनाभ से खगण, खगण से विधृति, विधृति से हिरण्यनाभ, हिरण्यनाभ के पुत्र रूप में पुण्य हुए। पुण्य के ध्रुवसन्धि, ध्रुवसन्धि से सुदर्शन, सुदर्शन से अग्निवर्ण, अग्निवर्ण से शीघ्र नामक पुत्र हुआ। शीघ्र से मरु, मरु के पुत्र प्रसुश्रुत हुए। प्रसुश्रुत से सन्धि, सन्धि से अमषर्ण अमर्षण से महस्वान, महस्वान् के पुत्र विश्वसाख विश्वसाख के पुत्र प्रसेनजित हुए। प्रसेनजित से तक्षक, तक्षक के पुत्र बृहद्बल थे जो अभिमन्यु के समकालिक थे–

ततः प्रसेनजित् तस्मात् तक्षको भविता पुनः
ततो बृहद्बलो यस्तु पित्रा ते समरे हतः ।। [17]

व्यास ने भविष्यगामी सूर्यवंशीय राजाओं का चित्रण करते हुए बृहद्बल से बृहद्रण, बृहद्रण के पुत्र उरूक्रिया हुए। उरूक्रिया नन्दन वत्सवृद्ध, वत्सवृद्ध के पुत्र प्रतिव्योम थे। प्रतिव्योम के सुत भानु थे। भानुनन्दन दिवाक, दिवाक के पुत्र सहदेव सहदेव के पुत्र बृहदश्व हुये। बृहदश्व के पुत्र भानुमान, भानुमान के पुत्र प्रतीकश्व होंगे। प्रतीकाश्व के पुत्र सुप्रतीक है। सुप्रतीक के मरुदेव जी हुए। मरुदेव के पुत्र सुनक्षत्र, सुनक्षत्र से पुष्कर, पुष्कर से सुतपा पुत्र रूप में हुए। सुतपा के पुत्र अग्निमित्र अग्निमित्र के पुत्र बृहद्राज्य, बृहद्राज्य के पुत्र बर्हि, बर्हि के पुत्र कृतञ्जय, कृतञ्जय नन्दन रणञ्जय होंगे। रणञ्जय के पुत्र

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

सञ्जय सञ्जय के पुत्र शुद्धोद, शुद्धोद के लाङ्गल, लाङ्गल के प्रसेनजित् प्रसेनजित् के क्षुद्रक, क्षुद्रक के रणक एवं रणक के पुत्र सुमित्र होंगे सुमित्र सूर्य वंश के अन्तिम शासक होंगे–

इक्ष्वाकूणामयं वंशः सुमित्रान्तो भविष्यति
यतस्त प्राप्य राजानं संस्थां प्राप्स्यति वै कलौ ।।[8]

इस प्रकार सूर्य वंश की इस सुदीर्घ वंश परम्परा में बहुत से ऐतिहासिक साक्ष्य प्राप्त होते है।

भारतीय परम्परा में सदैव मानव कल्याणकारी राज परम्परा का वर्णन प्राप्त होता रहा है।1 पुराण परम्परा के अधिकांश राजाओं का उल्लेख नाराशंसी आख्यान उपाख्यान में प्राप्त होते है।

सन्दर्भ सूची :–

1. ऋग्वेद
2. ऋग्वैदिक इतिहास वलदेव उपाध्याय
3. प्राचीन भारत इतिहास रोमिला थापर पृ०सं० 16
4. श्रीमद् भागवत 9/1/12
5. श्रीमद् भागवत 9/2/18
6. श्रीमद् भागवत 9/2/15
7. श्रीमद् भागवत 9/2/18
8. श्रीमद् भागवत 9/4/13
9. श्रीमद् भागवत 9/6/19
10. श्रीमद् भागवत 9/6/38
11. श्रीमद् भागवत 9/8/4
12. श्रीमद् भागवत 9/10/2
13. श्रीमद् भागवत 9/10/12
14. श्रीमद् भागवत 9/11/11
15. श्रीमद् भागवत 9/11/11–13
16. श्रीमद् भागवत 9/12/8
17. श्रीमद् भागवत 9/12/16

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

चन्द्रवंश – हरिवंश पुराण के सन्दर्भ में

हमारे यहाँ इतिहास में वंश वर्णन का सदैव से ही प्रचलन रहा है। वैदिक काल में गाथाएं एवं नाराशंसी प्रचलित थी, जो पौराणिक काल में सूर्यवंश, चन्द्र वंश है। चन्द्र वंश की उत्पत्ति कब कैसे हुई इसी क्रम पर विचार करते हुए यह शोध लेख लिख गया।

चन्द्र वंश के प्रवर्तक चन्द्र की उत्पत्ति ऋषि अत्रि के नेत्रों से हुई। उन्हीं चन्द्र और तारा के संयोग से बुध की उत्पत्ति पुराणों में बताई गयी है।

सोमस्येति महात्मानं कुमारं दस्युहन्तमम्[1]
ततस्तं मूघ्नर्न्युपाघ्राय सोमो धाता प्रजापति।।
बुध इत्येकरोभाम् तस्य पुत्रस्य धीमतः

बुध व इला से राजा पुरूरवा उत्पन्न हुए। जो अत्यन्त तेजस्वी दानवीर धर्मनिष्ठ एवं उदार थे। राजा पुरूरवा ही विशेष रूप से चन्द्र वंश के प्रथम नरेश हुए।

बुधस्य तु महाराज विद्वान् पुत्रः पुरूरवाः[2]
तेजस्वी दानशीलश्च यज्वा विपुल दक्षिणः।।

राजा पुरूरवा के आयु, अमावसु, विश्वायु, श्रतायु, दृढायु, वनायु एवं शतायु नामक सात देवतुल्य पुत्र हुए –

तस्य पुत्रा बभूवस्ते सप्त देवसुतोपमा[3]
दिवि जाता महात्मान आयुर्धीमनमावसुः
विश्वायुश्चैव धर्मात्मा श्रतायुश्च तथापरः
दृढायुश्च वनायुश्च शतायुश्चोर्वशीसुतः।।

राजा अमावसु के दायाद राजा भीम एवं नग्नजित् थे।

अमावसोश्च दायादो भीमो राजाथ नग्नजित[4]

राजा भीम के पुत्र राजा कञ्चनप्रभ और उनके पुत्र महाबली सुहोत्र हुए –

श्रीमान् भीमस्य दायादो राजासीत् काञ्चनप्रभः[5]
विद्वांस्तु काञ्चनस्थापि सुहोत्रे ऽ भून्महाबलः।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

सुहोत्र तथा रानी केशिनी के राजा जह्नु हुए इन्होंने सर्वमेध नामक महायज्ञ किया। इन्हीं के नाम पर गंगा को जान्वी पड़ा–

सौहोत्रिरभवज्जह्नुः केशिन्या गर्भसम्भवः [6]
आजह्रे यो महासत्रं सर्वमेधमहामखम्।।

जह्नु के पुत्र सुनह, सुनह के तथा कावेरी के पुत्र राजा अजक है –

जह्नुस्तु दयितं पुत्रं सुनहं नाम धर्मिकम् [6]
कावेंर्य जनयामास अजकस्तस्थ चात्मजः।।

राजा अजक के पुत्र बलाकाश्व एवं उनका मृगया प्रिय पुत्र कुश हुआ। कुश के चार देवतुल्य पुत्र हुए। वे थे कुशिक, कुशनाभ, कुशाम्ब मूर्तिमान थे।

अजकस्य तु दायादो बलाकाश्व महीपतिः [7]
बभूव मृगयाशीलः कुशास्तस्यात्मजोऽभवत्।।
कुशपुत्र बभूर्वाह चत्वारो देववर्चसः
कुशिकः कुशनाभश्च कुशाम्बो मूतिमांस्तथा।।

कुशिक के पुत्र महातेजस्वी गाधि हुए जिनकी कन्या सत्यवती ऋचीक से ब्याही गई। जिसके जमदग्नि शुनःशेप शुनःपुच्छ तीन पुत्र हुए और राजा गाधि के विश्वामित्र नामक ब्रह्मर्षि पुत्र हुए।

स गाधिरभवद् राजा मधवान् कौशिकः स्वयम् [8]
पौरकुत्स्यभवद् भार्या गाधिस्तस्यामजायत।।
गाधेः कन्या महाभागा नाम्ना सत्यवती शुभा
तां गाधिर्भृगुपुत्राय ऋचीकाय ददौ प्रभुः।।
और्वस्यैवमृचीकस्य सत्यवत्यां महायशाः
जमदग्निस्तपोवीर्याज्जज्ञे ब्रह्मविदां वरः।।
मध्यमश्च शुनःशेप शुनःपुच्छ कनिष्ठकः
विश्वामित्रं तु दायादं गाधिः कुशिक नन्दनः।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain, Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi

गाधि पुत्र विश्वामित्र सौ पुत्र थे। उनमें देवरात मुख्य थे। इनका नाम तीनों लोकों में विख्यात था। इनके अतिरिक्त देवाश्रवा, कति, शालावती, हिरण्याक्ष, रेणो, रेणुमान्, सांकृति, गालव, मृगल, मधुच्छन्दा, जय, देवल, कच्छप, हारित, पाणिन, बभ्रव, शांकलायन, वाष्कल, लोहित, यामदूत, कारीषव, सौश्रुया, कौशिक, सैन्धवायन, देवल, रेणु, याज्ञवल्क्य, औदुम्बर, अभिष्णात, तारकायन, चुञ्चुल, शाल्वत्य, हिरण्याक्ष, सांकृत्य, गांलव, बादरायण यह विश्वामित्र के अन्य पुत्र थे—

विश्वामित्र च सुता देवरातादयः स्मृताः [10]
प्रख्यातस्त्रिषु लोकेषु तेषां नामानि मे श्रृणु।।
देवाश्रवाः कतिश्चैव यस्मात्कात्यायना स्मृताः
शालावत्यां हिरण्याक्षो रेणोर्जज्ञेऽथ रेणुमान्।।
सांकृतिर्गालवश्चैव मुगलश्चेति विश्रुताः
मधुच्छन्दो जयश्चैव देवलश्च तथाष्टकः।।
कच्छपो हारितश्चैव विश्वामित्रस्य वै सुताः
\+ \+ \+ \+ \+
पाणिन बभ्रवश्चैव ध्यान जप्यास्तथैव च
पार्थिवा देवराताश्च शालङ्कायन वाष्कलाः।।
लोहिता यामदूताश्च तथा कारीषवः स्मृताः
सौश्रुताः कौशिका राजंस्तथान्ये सैन्धवायनाः।।
देवला रेणवश्चैव याज्ञवल्क्याघमर्षणाः
औदुम्बरा ह्यभिष्णातास्तारकायन चुञ्चुलाः।।
शालावत्याहिरण्याक्षाः सांकृत्य गालवास्तथा
बादरायणिनश्चान्ये विश्वामित्रस्य धीमतः।।

ऋचीक पुत्र शुनः शेप जिनको विश्वामित्र ने हरिश्चन्द्र के यज्ञ में वरूण से रक्षित किया वही देवरात के नाम से पुराणों में प्रख्यात हुए। क्योंकि उन्हें पशुत्व योनि से मुक्त विश्वामित्र ने कराया एवं प्राण रक्षा की इसीलिए यह विश्वामित्र के पुत्र हुए—

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

विश्वामित्रस्य पुत्रस्तु शुनःशेपोऽभवत् किल [11]

हरिदश्व यज्ञे तु पशुत्वे विनियोजितः

देवेर्दत्तः शुनःशेपो विश्वामित्रस्य वै पुनः

देवैर्दत्तः स वैयस्माद् देवरातस्ततोऽभवत्।।

देवरात आदि सात पुत्र विश्वामित्र के बहुत प्रसिद्ध थे किन्तु आठवें पुत्र अष्टक थे जिनके लौहि नामक पुत्र उनके जह्नुगण हुए –

देवरातादयः सप्त विश्वामित्रस्य वै सुताः [12]

दृषद्वती सुताश्चापि विश्वामित्रात् तथाष्टकः

अष्टकस्य सुतो लौहिः प्रोक्तो जह्नुगणोमया।।

विश्वामित्र तक ब्राह्मण एवं क्षत्रिय वंश आपस में घुले मिले रहे ऐसा विश्वामित्र के पुत्रों के नाम से स्पष्ट है।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

चन्द्रवंश

अत्रि
|
चन्द्र+तारा
|
पुरूरवा
|

आयु　अमावसु　विश्वायु　श्रतायु　दृढायु　बनायु　शतायु

अमावसु
|
भीम　नग्नजित्

भीम
|
काञ्चनप्रभ
|
सुहोत्र
|
जह्नु
|
सुनह
|
अजक
|
बलाकाश्व
|
कुश
|

कुशिक　कुशनाभ　कुशाम्ब　मूर्तिमान्

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. श्री हरिवंश पुराण 25/44
2. श्री हरिवंश पुराण 26/1
3. श्री हरिवंश पुराण 26/10-11
4. श्री हरिवंश पुराण 27/3
5. श्री हरिवंश पुराण 27/4
6. श्री हरिवंश पुराण 27/10
7. श्री हरिवंश पुराण 27/11-12
8. श्री हरिवंश पुराण 27/16-17/41-42
9. श्री हरिवंश पुराण 27/45-48
10. श्री हरिवंश पुराण 27/49-52
11. श्री हरिवंश पुराण 27/55-56
12. श्री हरिवंश पुराण 27/57-58

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

श्रीमद् भागवत महापुराण एवं प्रणव भागवतं तुलनात्मक अध्ययन

आधुनिक काल में बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में महाकवि डॉ० इच्छाराम द्विवेदी 'प्रणव' ने अष्टादश सहस्री श्रीमद्भागवत को उपजीव्य बनाकर उसकी भावमयी संक्षिप्त व्याख्या प्रणव भागवत के रूप में निबद्ध की है। जो रस, छन्द, दार्शनिकता शैली, भाव, प्रणवता की दृष्टि से अनूठी है।

श्रीमद्भागवत के मंगलाचरण में सत्य परं धीमहि, का उद्घोष है वहीं प्रणवभागवतं के मंगलाचरण में श्री कृष्ण के चरणारविन्दों का स्तवन है।

आनन्दाचलधारिणं नुतिमतां पापाचलोद्धारिणम्।
वृन्दारण्यविहारिणं क्षितिभृता मानादिसंहारिणम्।
कंसोत्पातविदारिणं निजजन प्रेमाद्रिसंचारिणम्।
वन्दे लोकविहारिणं नतशिरा गोवर्द्धनोद्धारिणम्।। [1]

श्रीमद्भागवत महापुराण में वक्ता त्रय का उल्लेख है। प्रथम अध्याय में चतुर्थ श्लोक से सूत शौनक संवाद जो भागवत के समाप्ति पर्यन्त तक चलता है। द्वितीय संवाद शुकदेव और परीक्षित संवाद जो कि भागवत की मुख्य कथा है, यह भागवत के द्वितीय स्कन्ध से आरम्भ हो द्वादश स्कन्ध के छठवें अध्याय तक चला। तृतीय भागवत संवाद महर्षि मैत्रेय व विदुर संवाद जो तृतीय व चतुर्थ स्कन्ध में व्याप्त है।

तदनुरूप डॉ० प्रणव जी ने भी प्रथम अध्याय में सूत शौनक संवाद का वर्णन, द्वितीय अध्याय में शुक परीक्षित संवाद तथा तृतीय अध्याय में मैत्रेय विदुर संवाद वर्णित है।

श्रीमद्भागवत के मंगलाचरण में ही त्रिविध ताप शमन का उल्लेख है–

धर्मः प्रोज्झित कैतवोऽत्र परमो, निर्मत्सराणां सताम्।
वेद्यं वास्तव वस्तुमत्रशिवदं, तापत्रयोन्मूलनम्।।
श्रीमद्भागवते महामुनि कृते, किं वा परैरीश्वरः।
सद्यो हृद्यवरूध्यतेऽत्र कृतिभिः शूश्रूषुभिस्त्तत्क्षणात्।। [2]

वहीं प्रणव भागवतम् में मंगलाचरण के अनन्तर त्रिविध कष्ट निवारण के लिए उपदेश दिया है। श्रीमद्भागवत का सूत शौनक संवाद में त्रिविध कष्ट निवारण विधि तथा कलियुग में धर्म किसकी शरण में प्रतिष्ठित है। यही प्रणव भागवत में भी वर्णित है।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi
वहीं प्रणव भागवत में मात्र शार्दूलविक्रीडित छन्द का ही प्रयोग है–

गोविन्दाखिलगोप! हे व्रजपते! लक्ष्मीपते! पाहि माम्

त्वत्पादाब्जरजोभिरेव विमलं मे जीवनं जायताम्

नव्यं भागवतं गृहाण भगवस्ते प्रीतये स्यादिदं

मुक्तोऽसौ प्रणवो नवो मधुरवो भूयात् कृपाभिस्तव।। [10]

रस :–

श्रीमद्भागवत में सर्वत्र शान्त रस विद्यमान है। प्रकारान्तर्गत भयानक, श्रृंगार, वीर आदि रस अंग रूप में आये हैं। जैसे भवाटवी तथा नरक वर्णन में भयानक रस, रास पंचाध्यायी में विप्रलम्भ श्रृंगार, वामनावतरण प्रहलाद की कथा में वीर रस का परिपाक दृष्टिगोचर होता है।

ठीक वैसे ही प्रणव भागवतं में शान्त अंगी रस है। भक्ति मुख्य तत्व जो कि देव विषयक रतिभाव के रूप में शास्त्रों में समादृत हुआ है। प्रणवभागवत में भवाटवी वर्णन में भयानक रस की अनुभूति होती है। सर्वत्र शान्त की प्रमुखतः ही है।

अलंकार :–

जो शब्द या अर्थ का सौन्दर्याधायक विन्यास है वही अलंकार है। श्रीमद्भागवत महापुराण में जहाँ उपमा, श्लेष, यमक, अनुप्रास, रूपक उदात्त सार, समुच्चय, अर्थान्तरन्यास आदि अलंकारों का प्रयोग मिलता है।

तर्हि भग्नगतयः सरितो वै, तत्पदाम्बुजरजोऽनिलनीतम्।

स्पृहयतीर्वयमिवाबहुपुण्याः प्रेमवेपितभुजाः स्तिमितापः।। [11]

प्रस्तुत श्लोक में उत्प्रेक्षा अलंकार दृष्टव्य है इसी प्रकार एक अन्य श्लोक में उपमा का उदाहरण दर्शनीय है।

अनुचरैः समनुवर्णितवीर्य आदिपुरुष इवाचलभूतिः।

वनचरो गिरितरेषुचरन्ती वेंणुनाऽहयति गाः स यदा हि। [12]

उत्तरोत्तर उत्कर्ष ही सार नामक अलंकार है– उत्तरोत्तरमुत्कर्षोवेत्सारः परावधिः। श्रीमद्भागवत के गोपी गीत मे सार नाम अलंकार है–

विषजलाप्याद् व्यालराक्षसाद् वर्षमारुताद् वैद्युतानलात्

वृषमयात्मजाद् विश्वतोभयादृषभ ते वयं रक्षिता मुहु। [13]

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

श्रीमद्भागवत महापुराण में अधिकांश अलंकारो का प्रयोग है। आधुनिक काल की कृति प्रणव भागवतं में भी विविध अलंकार पाये जाते है। इस ग्रन्थ के मंगलाचरण में अनुप्रास अलंकार है। अनुप्रास का लक्षण इस प्रकार है।

अनुप्रास शब्द साम्यं वैषम्येऽपि स्वरस्य त्। [14]

जहाँ अन्त में समान ध्वनि आये वहाँ अन्त्यानुप्रास होता है।

आनन्दाचलधारिणं नुतिमतां पापाचलोद्धारिणं

वृन्दारण्यविहारिणं क्षितिभृतां मानाद्रिसंहारिणम्

कंसोत्पातविदारिणं निजजन प्रेमाद्रिसंचारिणम्

वन्दे लोकविहारिणं नतशिरा गोवर्द्धनोद्धारिणम्। [15]

इस श्लोक के अन्त में समान व्यंजन ध्वनि होने से अन्त्यानुप्रास अलंकार है। साथ ही विशेषणों की झड़ी लगी होने से एकावली नाम का अलंकार भी माना जायेगा। प्रणव भागवत में यमक अलंकार का उदाहरण दृष्टव्य है –

तस्माद् भारतमेव भारतमिति ख्यातं सदा सूरिभिः। [16]

क्योंकि यहाँ भारत शब्द की आवृत्ति हुई है। जहाँ शब्दावृत्ति होती है। वहाँ यमक अलंकार होता है। अतः यहाँ यमक अलंकार है।

जहाँ तुलना की जाय वहाँ उपमा अलंकार होता है। प्रणव भागवत में भी उपमा का प्रयोग है–

यस्सर्वस्व समर्पणं बलिरिव श्रीविष्णवे भक्तितो।

धत्तेऽसौ कुशलो विमुक्तमहितो वैकुण्ठ भाग्जायते। [17]

उपमा का एक अन्य उदाहरण अम्बरीष की कथा में आया है।

भक्तेः प्राणमिवाम्बरीषचरितं मान्धातृगाथा ततः।। [18]

जहाँ उपमान में उपमेय में अभेदारोप होता है वहाँ रूपक अलंकार होता है। ''तद्रूपकामभेदेय उपमानोमययो'' प्रणव भागवतं में भी रूपक अलंकार का प्रयोग है।

मर्यादा परिखा स्वकीयचरितैर्येनाद्भुतः खानिता। [19]

जहाँ सामान्य से विशेष का अथवा विशेष से सामान्य का समर्थन किया जाये वहाँ अर्थातरन्यास नामक अलंकार होता है।

सामान्यं वा विशेषो वा तदन्येन समर्थ्यते

यत्तु सोऽर्थान्तरन्यासः साधर्म्येणतरेण यत्।। [20]

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

श्रीमद्भागवत के अष्टम स्कन्ध में मन्वन्तर का निरूपण है तथा चौदह मनुओं, गजेन्द्र की कथा, अमृत, मन्थन की कथा, भगवान वामन का अवतरण व बलि की मुक्ति का सविस्तार वर्णन है। डॉ० प्रणव ने अपने ग्रन्थ में बाहर श्लोकों में इन समस्त घटनाओं को आबद्ध किया है।

श्रीमद्भागवत के नवम स्कन्ध में ईशानुकथायें आयीं हैं। जिसमें मनु श्रद्धा, इक्ष्वाकु, सुद्युम्न, पृषध्र शर्याति, अम्बरीष, सौभरि, त्रिशंकु, सगर, श्रीरामचरित, परशुराम व भगवान श्रीकृष्ण जिस वंश में अवतीर्ण हुए उस यदु वंश का वर्णन है। प्रणव भागवतं के नवम अध्याय में इन समस्त महापुरुषों का उल्लेख है, तथा भरत, पांचाल एवं कौरव वंश, मागध वंश का बारह श्लोकों में वर्णन है।

श्रीमद्भागवत महापुराण के दशम स्कन्ध में निरोध लक्षण का निरूपण है। कंस के कारागार में देवकी वासुदेव के यहाँ श्रीकृष्ण का अवतरण, पूतना, शकट, प्रलम्ब, बक, केशी, कालिया नाग, गोवर्धन धारण, रास, कंसोद्धार, शिशुपाल, दन्तवक्त्र, मागध आदि का उद्धार महाभारत सुदामा की कथा का वर्णन हैं। प्रणव भागवतं के दशवें अध्याय में कंस कौन है? मथुरा क्या है? कालिया कौन, गोवर्धन क्रीड़ा का अधिभौतिक रूप से निरूपण किया गया है व इस स्कन्ध की समस्त कक्षाओं को संक्षेपण वर्णित किया गया है। इसमें भी बारह श्लोक हैं।

श्रीमद्भागवत के एकादश स्कन्ध में त्रिविध मुक्ति का निरूपण किया गया है। विप्र शाप से यदुकुल का नाश, वासुदेव की मुक्ति स्वयं श्रीकृष्ण का उद्धव को ज्ञानोपदेश दे गोलोकधाम गमन का इसमें निरूपण है। डॉ० प्रणव ने अपने ग्रन्थ में यदुकुल के नाश को आदिदैहिक मुक्ति, वसुदेव के आधिभौतिक मुक्ति व उद्धव को आध्यात्मिक मुक्ति का उपदेश और भागवत धर्म का निरूपण तथा श्रीकृष्ण के गोलोक धाम की कथा को मात्र द्वादश श्लोकों में समेटा है।

श्रीमद्भागवत के द्वादश स्कन्ध में आश्रय का निरूपण है। इसमें चतुर्विध प्रलय का वर्णन व महाराज विष्णुरात को ज्ञानोपदेश दे शुकदेव का मायानगरी से गमन, मार्कण्डेय को प्रलय दर्शन, द्वादश संक्रान्तियों के रूप में विष्णु व सूर्य के द्वादश रूपों का निरूपण, भगवान की महिमा का गुणगान है।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

प्रणव भागवत में भी चतुर्विध प्रलय निरूपण कर उनके आदिभौतिक रूप को समझाया गया है। तदन्तर विष्णुरात को ब्रह्मज्ञान, मार्कण्डेय को प्रलय दर्शन, द्वादशार्क वर्णन के अनन्तर भगवत्स्तुति है।

इस प्रकार कथानक की दृष्टि से प्रणव भागवतं श्रीमद्भागवत पर आधारित ग्रन्थ है जो लघुतम रूप में सम्पूर्ण भागवत सार को अपने में संजाये है।

<u>छन्द :–</u>

श्रीमद्भागवत में शार्दूलविक्रीडित छन्द का जहाँ–तहाँ प्रयोग हुआ है

यथा – **जन्माद्यस्य यतोऽन्वयादितरतश्चार्थेष्वभिज्ञस्वराट्।**

तेने ब्रह्मह्वदा य आदि कवये मुह्यन्ति यत् सूरयः।।

तेजोवारिमृदां यथा विनिमयो यत्र त्रिसर्गोऽ न्मृषा।

धाम्ना स्वेन सदा निरस्तकुहकं सत्यं परं धीमहि।। [5]

x x x x x

यं ब्रह्मावरुणेन्द्ररुद्रमरुतः स्तुवन्ति दिव्यस्तवैः।

वेदैसांग पदक्रमोपनिषदैः गायन्ति यम् सामगाः।। [6]

श्रीमद्भागवत में द्रुतबिलम्बित छन्द का भी प्रयोग है। द्रुतविलम्बितमाह नभौभरी के नियमानुसार निम्न श्लोक है –

निगमकल्पतरोर्गलितं फलं, शुकमुखादमृतद्रव संयुतम्।

पिबत भागवतं रसमालयं मुहुरहो रसिका भुवि भावुकाः।। [7]

श्रीमद्भागवत में उपजाति में कई उपदेश निबद्ध होते हैं–

अकोविदः कोविदवादवादान्, वदस्यथो नातिविदां वरिष्ठः

न सूरयो हि व्यवहारमेनं, तत्वावमर्शेन सहामनन्ति। [8]

श्रीमद्भागवत में रासपंचाध्यायी में गोपी गीत इन्दिरा छन्द में है –

जयतितेऽधिकं जन्मना व्रज, श्रयत इन्दिरा शश्वदत्र हिः।

दति दृश्यतां दिक्षु तावक स्त्वयि धृतासवस्त्वां विचिन्वते। [9]

इस ग्रन्थ में पृथ्वी, इन्द्रवज्रा आदि कई छन्दों का प्रयोग है। किन्तु प्रणव भागवतं में मात्र शार्दूलविक्रीडित छन्द है।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi

श्रीमद्भागवत में शुक की वन्दना सूतजी ने की है, ठीक वैसी ही वन्दना प्रणव भागवत में मिलती है। पौराणिक सृष्टि के मूलाधार अष्टादश आधारभूत तत्वों को मानते हैं। (पंच ज्ञानेन्द्रिय, पंच प्राण, पंच कर्मेन्द्रिय, मन, बुद्धि, अंहकार) प्रणव भागवतं में भी इन्हीं तत्वों को समाहित किया गया। प्रणव जी ने श्रीमद् भागवत को सर्वोत्तम फलरूप माना है। दोनों ही ग्रन्थों में भागवत को मुक्तिदायिनी माना गया तथा प्रणव भागवतम् में श्रीमद्भागवतं का माहात्म्य वर्णित है। श्रीमद्भागवत के अन्तिम अध्यायों में भक्ति की कथा और सनक, सनन्दन, सनातन और सनत्कुमार, शुकदेव आदि मुनियों का वर्णन है। प्रणव भागवतं के प्रथम अध्याय के अन्त में इन सबका उल्लेख मिलता है। श्रीमद्भागवत के द्वितीय स्कन्ध में शुक परीक्षित संवाद प्रारम्भ होता है। प्रणव भागवतम् के द्वितीय अध्याय के आदि में परीक्षित शब्द का निर्वाचन किया गया है। भागवत तथा प्रणव भागवत में दोनों में ही गुरू की महिमा और अष्टांग योग की महिमा वर्णित है।

श्रीमद्भागतपुराण के इसी स्कन्ध में पुराण दशलक्षणों का वर्णन है –

अत्र सर्गो विसर्गश्च स्थान पोषणमूतयः।

मन्वन्तरेशानुकथा निरोधो मुक्तिराश्रयः।। [3]

सर्ग, विसर्ग, स्थान, पोषण, ऊति, मन्वन्तर, ईशानुकथा, निरोध, मुक्ति और आश्रय इन सबका ऐसा ही वर्णन प्रणव भागवतं में भी है–

यत्रास्ते दशलक्षणी सुविशदा सर्गे विसर्गयुता।

स्थानं पोषणमूतयश्च विविधा मन्वन्तरीयाः कथाः।।

ईशाख्यानमयी निरोध सहिता मुक्तिप्रदा केवला

वैकुण्ठाश्रयदायिनी मतिमतां भक्त्या हरिकांक्षता।। [4]

दोनों ही ग्रन्थों में नवधा मुक्ति का महत्व वर्णित है। जो महाविष्णु को आत्मसमर्पण कर देता है। वह आनन्द और निवार्ण प्राप्त करता है। श्रीमद्भागवत की संक्षिप्त चतुःश्लोकी भागवत को डॉ० प्रणव ने तीन श्लोकों में आबद्ध किया है। दोनों ही ग्रन्थों में दशलक्षणमयी भागवती विद्या का निरूपण है।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

श्रीमद्भागवत के तृतीय स्कन्ध में खिन्नमन, विदुर, इन्द्रप्रस्थ को प्रयाण करते है। तथा महर्षि मैत्रेय से भेंट होने पर प्रश्न पूँछते हैं। प्रणव भागवतम् में भी विदुर का प्रयाण व मैत्रेय शब्द की निष्पत्ति को समझाया गया है। जो व्यक्ति मित्र (सूर्य) की दृष्टि से सबको देखता है वह मैत्रेय है। श्रीमद्भागवत का तृतीय स्कन्ध में सर्ग प्रक्रिया का वर्णन है। वैसा ही वर्णन प्रणव भागवतं में भी है। दोनों ही ग्रन्थों में मनु शतरूपा की वंश परम्परा उनकी कन्याओं के सन्तान परम्परा वर्णन प्रसंग में देवहुति की नौ कन्याओं तथा कपिल का वर्णन आया है। इसी अध्याय में सांख्यशास्त्र की सूक्ष्म व्याख्या भी है।

श्रीमद्भागवत के चतुर्थ स्कन्ध में विसर्ग प्रक्रिया को समझाया गया है। इसी स्कन्ध में आकूति प्रसूति की वंश परम्परा भगवान नरनारायण का अवतरण ध्रुव की कथा, पृथु का आख्यान, पुरंजनोपाख्यान, प्रचेतागण की मुक्ति का वर्णन है। प्रणव भागवतं में भी यह समस्त कथायें इसी क्रम में अतिसंक्षेपण वर्णित है। इसमें ध्रुव व पृथु शब्द के निर्वचन भी वर्णित हैं।

श्रीमद्भागवत के पंचम स्कन्ध में स्थान का निरूपण है। इसमें महाराज प्रियव्रत का यश, सन्तान परम्परा व महाराज ऋषभदेव का चरित और राजर्षि भरत का आख्यान, भुवनकोश, शिंशुमार चक्र, अष्टाविंशति नरक वर्णन है। प्रणव भागवत के पाँचवें अध्याय में यह समस्त कथायें अति संक्षिप्त रूप से बारह श्लोकों में आबद्ध हैं।

श्रीमद्भागवत के छठवें अध्याय में अजामिल की कथा, वृत्रासुर का आख्यान, मरूद्गणों की उत्पत्ति आदि के रूप में पोषण नामक लक्षण का निरूपण है। प्रणव भागवत के छठवें अध्याय में बारह श्लोकों में यह समस्त कथायें निबद्ध है।

सप्तम स्कन्ध में ऊति का निरूपण है। इस स्कन्ध में मन्वन्तर का निरूपण है। इस स्कन्ध में प्रहलाद के चरित्र का मुख्यतः वर्णन है। प्रणव भागवतं में बारह श्लोकों में प्रहलाद, हिरण्यकशिपु आदि शब्दों की निष्पत्ति एवं भक्ति की महिमा व ऊति का वर्णन है।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.
प्रणव भागवत में भी सामान्य से विशेष का समर्थन करते हुए श्लोक कहा गया है–

वृत्रो दैत्यपतिः कदापि न भवे देवैर्विजेगीयते
देवा इन्द्रियलोलुपो हतधियः शक्ता न वृत्रक्षये
वज्रो यश्च दधीचिदेहरचितः शक्तोऽस्ति तन्नाशने
वृत्रो येन जितः स सर्वविजयी लोकाग्रगण्यो हि सः।। [21]

देवों की भोग प्रधान वृत्ति से वृत्र (मन) को कभी जीता नहीं जा सकता। जिसने वृत्र (मन) को जीत लिया वही सर्वविजयी है वह समस्त लोकों में अग्रगण्य है।

जहाँ उत्तरोत्तर विशेषणों का प्रयोग किया जाये वहाँ एकावली अलंकार होता है। काव्य प्रकाशकार ने भी अपने ग्रन्थ में एकावली का लक्षण दिया है–

स्थापतेऽपोह्यते वापि यथापूर्व परस्परम्
विशेषणस्तया यत्र वस्तु सैकावली द्विधा। [22]

परमात्मा के लिए विशेषणों का क्रम से वर्णन हमें निम्न श्लोक में दिखाई देता है। अतः वहाँ एकावली अलंकार होगा।

ब्रह्मानन्दसुधामयो रसमयो विद्यामयः श्रीमयः।
सर्वारम्भमयोऽभयशिवमयो मांगल्यलीलायः।।
योऽयं देवमयस्सग्रभुवने भक्तेभ्यः आशामयः।
सोऽयं प्रीतिमयो भवेदनुदिनं ध्येयः सदा योगिनाम्।। [23]

प्रणव भागवतं में भाविक अलंकार भी आया है। जहाँ भूत व भविष्य की घटनायें वर्तमान के आश्रम से हों वहाँ भाविक अलंकार होता है।

प्रत्यक्षा इव यद्भावाः क्रियन्ते भूतभाविनः। [24]

जहाँ प्रत्यक्ष रूप में भूत भविष्य की घटना का निरूपण हो वहाँ भाविक अलंकार होता है।

अर्थाशा ध्रुवसन्निभा यदि भवेल्लोके मनस्याहित।
ध्येयः श्रीहरिरेव भक्तिसहितः श्रीशः स एवं क्षिते।।
येनाराधि विभुः समस्तजगतां बन्धुस्स धन्यः सदा
तेनापदि विमुक्तिरर्थ सहिता नूनं ध्रुवो नापरः।। [25]

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

इस श्लोक में हेतु का भी कथन है अतः काव्यलिंग अलंकार भी होगा। और भाविक व काव्यलिंग के अंगांगी भाव में रहने पर संकर अलंकार है। इसके अतिरिक्त प्रणव भागवत में परिकर, सम उदात्त, विषम, सार आदि अलंकारों का बाहुल्य है।

1. प्रणव भागवतम् 1/1
2. श्रीमद् भागवतपुराण 1/1/2
3. श्रीमद् भागवतपुराण 2/10/1
4. प्रणव भागवतम्
5. श्रीमद् भागवतपुराण 1/1/1
6. श्रीमद् भागवतपुराण 12/13/1
7. श्रीमद् भागवतपुराण 1/1/3
8. श्रीमद् भागवतपुराण
9. श्रीमद् भागवतपुराण 10/31/1
10. प्रणव भागवतम्
11. श्रीमद्भागवत पुराण
12. श्रीमद्भागवत पुराण
13. श्रीमद्भागवत पुराण 10/31/3
14. काव्य प्रकाश 10/
15. प्रणव भागवतम् 1/1
16. प्रणव भागवतम्
17. प्रणव भागवतम्
18. प्रणव भागवतम्
19. प्रणव भागवतम्
20. काव्य प्रकाश 10/1
21. प्रणव भागवतम्
22. काव्य प्रकाश 10/
23. प्रणव भागवतम्
24. काव्य प्रकाश
25. प्रणव भागवतम्

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

नाम	:	कल्पना द्विवेदी
जन्मतिथि	:	15 जून 1973
जन्मस्थान	:	मैनपुरी (उ0प्र0) भारतम्
पिता	:	आचार्य श्री लालबिहारी शास्त्री
माता	:	श्रीमती कृष्णा देवी द्विवेदी
गुरूवंश	:	प्रो0 राधावल्लभ त्रिपाठी, प्रो0 इच्छाराम द्विवेदी प्रो0 रमाकान्त शुक्ल, पं0 श्यामाचरण त्रिपाठी
शिक्षा	:	एम0ए0 (1995) आचार्य पुराणेतिहास (2005) बी0एड0 1996 पी0एच0डी0 (2002)
प्रकाशित शोध पत्र	:	सम्प्रति चालीस प्रकाशित शोध पत्र
प्रकाशित पुस्तक	:	बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में आधुनिक संस्कृत नाटक एक अध्ययन (2011)
सम्पादन	:	संस्कृत वाङ्मय में अर्थ चिन्तन (2014) सुरभारती शोध पत्रिका का 2008 से सम्प्रति तक आचार्य श्री अभिनन्दन ग्रन्थ (1999) पूर्णमदः पूर्णमिदम् का सहसम्पादन (2011)
यन्त्रस्थ रचनाएं	:	मुद्रा एवं चारी, श्री हरि पदावली कविताएं
अप्रकाशित रचनाएं	:	गणेश पुराण का भाषानुवाद क्या सोचा है ? कभी (हिन्दी भाषा में) रूवाईयां (उर्दू)

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi